Entrepreneurship MINDSET

शिक्षक निर्देशिका 2024

कक्षा

11

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

Entrepreneurship Mindset (Teacher's Manual) 2024
March, 2024
ISBN : 978-81-971630-4-3
Copies : 4500
© STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH & TRAINING, DELHI

सलाहकार

श्री अशोक कुमार, प्रधान सचिव (शिक्षा), दिल्ली सरकार
श्री भूपेश चौधरी, निदेशक (शिक्षा), दिल्ली सरकार
सुश्री रीटा शर्मा, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
डॉ. नाहर सिंह, सयुंक्त निदेशक, शैक्षिक, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

संपादकीय

डॉ. सपना यादव, परियोजना निदेशक (ईएमसी) और वरिष्ठ प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

समन्वयक

डॉ. सपना यादव, परियोजना निदेशक (ईएमसी) और वरिष्ठ प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
सुश्री जसपाल कौर, एस.ओ.इ, सेक्टर 17, रोहिणी, दिल्ली
सुश्री मोनिका जगोटा, एस.के.वी, विकासपुरी
सुश्री सविता, एस.के.वी., मुंडका
श्री मोतीचंद प्रजापति, रा. सह-शि.सर्वोदय विद्यालय, सेक्टर 17, द्वारका

एस.सी.ई.आर.टी.- ईएमसी टीम

सुश्री आकृति अग्रवाल, बीआरपी, एस.सी.ई.आर.टी.
डॉ. प्रियंका भारद्वाज, सी.आर.सी.सी.

विजुअल डिजाइन

हरि कृष्ण पंत

हिंदी भाषा अनुवादक

श्री पवन कुमार, रा. सह-शि. वरि. मा. विद्यालय, साइट-2, सेक्टर-3, द्वारका

प्रकाशन अधिकारी

डॉ मुकेश यादव, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

प्रकाशन टीम

श्री दिनेश कुमार शर्मा, ए.एस.ओ., एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
सुश्री राधा, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
सुश्री फौजिआ, बीआरपी, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

अस्वीकरण

इस पाठ्यक्रम में दी गई कहानियाँ वास्तविक लोगों के जीवन से सम्बंधित हैं। कुछ उदाहरणों में कहानी के कुछ भाग उद्यमियों के वास्तविक अनुभव से थोड़ा भिन्न हो सकते हैं। इन कहानियों का उद्देश्य उनकी जीवन यात्रा के विशिष्ट पहलुओं को उजागर करना है जिससे विद्यार्थी प्रोत्साहित और प्रेरित हो सके।
सभी कहानियों को केवल शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए चुना गया है। इसलिए किसी भी व्यक्ति या उनकी कंपनी में जुड़े किसी भी कानूनी मुद्दे, चूक या नकारात्मक कार्य के लिए SCERT को उनके समर्थक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।
पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, जानबूझकर, सरल और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। पाठकों से अनुरोध है कि वे भाषा के मानक स्वरूप के होने या न होने पर ध्यान न दें।

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

संदेश

वैश्विक प्रवृत्तियाँ युवाओं की वास्तविक क्षमताओं को पहचानने की ओर बढ़ रही हैं। ये प्रवृत्तियाँ उन्हें स्वतंत्रता से अपना करियर पथ चुनने और समुदाय के साथ नई समस्याओं का नवाचारी समाधान करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। ये युवा न केवल क्रिएटिव समस्या समाधानकर्ता हैं, अपितु रणनीतिक वैश्विक नेताओं में परिवर्तित होने में भी सहायक हो रहे हैं। वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों में, विद्यार्थियों को सिर्फ उन गुणों और कौशलों का विकास करने की ज़रूरत है जो उन्हें जीवन के हर पहलू में सहायक हों, साथ ही उन्हें अपने चुने गए क्षेत्रों में विशेषज्ञता भी प्राप्त करनी चाहिए। इन बुनियादों को ध्यान में रखते हुए और दिल्ली सरकार के स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को निरंतर सुधारने के प्रयास में, हमने पिछले कुछ वर्षों से जमीनी स्तर पर सुधार के लिए सुधार कार्यक्रम को कार्यान्वित किया है, ताकि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अधीन शिक्षा प्रणाली की भविष्य की उम्मीदों को पूरा कर सकें और युवा वैश्विक प्रतिनिधित्व के लिए तैयार हो सकें। दिल्ली सरकार के स्कूलों में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम (ईएमसी) के कार्यान्वयन से दिल्ली की शिक्षा प्रणाली को सुधारने और युवा के लिए प्रगतिशील दृष्टिकोण को पूरा करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

शिक्षा प्रणाली में प्रतिभागियों के रूप में, हम विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास करते हैं ताकि वे समाज में योगदान देने वाले सदस्यों के रूप में परिपक्व हो सकें। हमें विश्वास है कि हमारे प्रयास अनुकूल परिणाम देंगे। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि कक्षा IX-XII में प्रत्येक सरकारी विद्यालय में विद्यार्थियों ने ईएमसी के माध्यम से नया ज्ञान और अनुभव प्राप्त किया है। ईएमसी का फील्ड घटक, बिज़नेस ब्लास्टर्स, कक्षा XI-XII के विद्यार्थियों को सीड मनी प्रदान करता है और उन्हें एक सामाजिक मुद्दे को संबोधित करने या सकारात्मक प्रभाव के साथ लाभ उत्पन्न करने के लिए वास्तविक जीवन के परिदृश्यों में आंत्रप्रेन्योरशिप के माइंडसेट को लागू करने के लिए टीमों में सहयोग करना सिखाता है।

इस निरंतर विकसित हो रहे प्रौद्योगिकी युग में, शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य विद्यार्थियोंमें आंत्रप्रेन्योरशिप का माइंडसेट विकसित करना और उनकी अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानना है। एससीईआरटी इस उद्देश्य को विनम्र और पारदर्शी तरीके से पूरा करने के लिए समर्पित है। हमने एक सुदृढ़ और समृद्ध समाज की स्थापना की प्रक्रिया शुरू की है। मैं शिक्षा के क्षेत्र में इस अभूतपूर्व प्रयास के लिए अपने सभी विद्यार्थियों, फ़ैसिलिटेटर, स्कूल प्रशासकों, शिक्षा निदेशालय और एससीईआरटी के अधिकारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

अशोक कुमार
सचिव (शिक्षा)

Dr. Rita Sharma
Director SCERT

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH and TRAINING
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel.: +91-11-24331356
E-mail : dir12scert@gmail.com

संदेश

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में सफलता से संबंधित न होकर, विद्यार्थियों में जीवन में सफलता प्राप्त करने और ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए आवश्यक ज्ञान, क्षमताओं और मूल्यों को स्थापित करना है। 2019 में, एससीईआरटी ने विद्यार्थियों में एक आशावादी स्वभाव और विकास की मानसिकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम (ईएमसी) की शुरुआत की। ईएमसी विद्यार्थियों को बड़े सपने देखने, नवाचार करने, योजना बनाने और विचारों को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें लचीलापन और धैर्य के साथ जीवन की बाधाओं को दूर करना सिखाता है। ईएमसी के माध्यम से विद्यार्थियों को आशावादी, समर्पित, आत्मविश्वासी, आत्म-प्रेरित और स्वतंत्र होने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है।

हमारे विद्यार्थियों को ऐसे गुणों, मूल्यों और क्षमताओं को विकसित करना चाहिए जो न केवल उन्हें अपने लिए नए रास्ते बनाने में सक्षम बनाते हैं, बल्कि राष्ट्र की उन्नति में भी योगदान देते हैं। एससीईआरटी सदैव विकसित रुझानों पर अद्यतन रहता है अतः ईएमसी के विकास और दिशा-निर्देश ने शिक्षा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व प्रगति सुनिश्चित की है। ईएमसी की एक उल्लेखनीय विशेषता इसकी वैज्ञानिक प्रबंधन है, जिसमें टिप्पणियों और प्रतिक्रियाओं को शामिल करके किया गया था। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को व्यक्तिगत लक्ष्यों की कल्पना करने और नई अवधारणाओं की कल्पना करने, रणनीति बनाने और उन्हें लागू करने के लिए सशक्त बनाता है। वे साहस और दृढ़-संकल्प के साथ जीवन में हर बाधा का सामना करने की क्षमता भी प्राप्त करते हैं। ईएमसी, दिल्ली शिक्षा क्रांति का एक महत्त्वपूर्ण घटक बन गया है। ईएमसी की उत्कृष्टता इस तथ्य में निहित है कि सभी हितधारकों के अवलोकन और प्रतिक्रिया का उपयोग करके इस पाठ्यक्रम को वैज्ञानिक तरीके से तैयार करने का प्रयास किया गया था।

इस वर्ष प्रसारित की जा रही संशोधित और उन्नत ईएमसी सामग्री विद्यार्थियों को पाँचवी औद्योगिक क्रांति की तैयारी करने और आंत्रप्रेन्योरशिप के माइंडसेट को बढ़ावा देने में सहायता करेगी।
आइए, हम इस पाठ्यक्रम को सुदृढ़ करने के लिए एकजुट हों और अपने विद्यार्थियों में पहल करने की भावना पैदा करें और अपने लिए, समाज और बड़े पैमाने पर राष्ट्र के लिए ज़िम्मेदार बनें।

रीता शर्मा

डॉ. रीता शर्मा

Dr. Nahar Singh
Joint Director (Academic)

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel.: +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

संदेश

इस गतिशील तकनीकी प्रगति के युग में हमारे बच्चों को 21वीं सदी के कौशल की आवश्यकता है, जो उन्हें सफलता के नए रास्ते बनाने और राष्ट्र के विकास में योगदान करने में सक्षम बनाएगा। विद्यार्थियों को उन प्रवृत्तियों और क्षमताओं को भी विकसित करना चाहिए जो उन्हें विषय-विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने के अलावा जीवन में सफल होने और आशावादी, उत्साही, आत्मविश्वासी, समर्पित, आत्म-प्रेरित और स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाएँगे।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 2019 में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम (ईएमसी) विकसित किया गया था। यह हमारे विद्यार्थियों में विकास-उन्मुख, आशावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में प्रभावी रहा है। ईएमसी के छह असाधारण घटक हैं, जिनमें से एक बिज़नेस ब्लास्टर्स है और यह विशेष रूप से ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई एक शैक्षिक पहल है। ईएमसी के अंतर्गत सीड मनी पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए अपने आस-पास के अवसरों को पहचानना, बज़ट विकसित करने के लिए टीम के सदस्यों के साथ सहयोग करना और अपने विचारों को निष्पादित करना है। विद्यार्थियों के पास एक व्यावसायिक प्रयास करने या एक सामाजिक मुद्दे को प्रभावी ढंग से संबोधित करके उसमें परिवर्तन को प्रभावित करने का विकल्प होता है। हमारी महत्त्वाकांक्षा है कि भारत के युवा अपनी बौद्धिक क्षमता और जीवन में प्रगति के लिए आवश्यक योग्यताओं को विकसित करें, ताकि वे एक उज्ज्वल भविष्य स्थापित करने के लिए सामूहिक रूप से प्रयास कर सकें।

दिल्ली सरकार के विद्यालयों में ईएमसी की स्थापना करने वाले तत्कालीन माननीय शिक्षा मंत्री का दृष्टिकोण विद्यार्थियों को अनुभवात्मक सीखने के अवसर प्रदान करना है ताकि वे अपनी क्षमताओं की पहचान कर सकें और उन्हें आगे विकसित करते हुए जीवन में प्रगति कर सकें। आइए हम भारत के लिए भविष्य के एक सक्षम और कुशल कार्यबल का निर्माण करने के लिए नवीन और रचनात्मक सोच, सोचा-समझा जोखिम लेने, लचीलापन और टीम वर्क को स्थापित करके इस प्रयास को बनाए रखने के लिए सहयोग करें।

डॉ. नाहर सिंह

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हमारी शिक्षा प्रणाली की महता पर जोर देती है, जो प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी छिपी हुई क्षमताओं और प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें बढ़ाने की सुविधा प्रदान करती है। यह युवाओं में उद्यमशीलता की क्षमता विकसित करने और स्कूलों में उद्यमशीलता का माहौल बनाने पर विशेष ध्यान देती है, जहाँ विद्यार्थी अपने सपनों को साकार कर सकें। पिछली बातों को ध्यान में रखते हुए, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (दिल्ली) ने 2019 में शिक्षा निदेशालय, दिल्ली के 9वीं से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम विकसित किया था। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हर उस अवसर की पहचान करना और उसका लाभ उठाना है जो हमारे विद्यार्थियों को उद्यमशीलता क्षमताओं की पहचान करके व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक विकास प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। मेरी टीम के साथ इस पाठ्यक्रम को विकसित करना और कार्यान्वित करना कठिन और फायदेमंद दोनों साबित हुआ है।

पिछले कुछ वर्षों में, डिस्ट्रिक्ट और जोनल कॉर्डिनेटर्स, स्कूलों के प्रमुखों, मेंटर शिक्षकों, EMC कॉर्डिनेटर्स और EMC शिक्षकों के अटूट योगदान के माध्यम से सभी स्कूलों द्वारा आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू किया गया है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से, 9वीं से 12वीं कक्षा के विद्यार्थी माइंडफुलनेस और विभिन्न थीमैटिक यूनिट्स के माध्यम से उद्यमिता क्षमताओं का विकास कर रहे हैं, स्टूडेंट स्पेशल के माध्यम से अपने नेतृत्व और संचार कौशल को निखार रहे हैं, लाइव आंत्रप्रेन्योर इंटरेक्शन और करियर एक्सप्लोरेशन के माध्यम से विभिन्न करियर-ऑप्शन और आंत्रप्रेन्योर्स के साथ चर्चा करके उनके अनुभवों के बारे में अधिक समझ बना पा रहे हैं। बिजनेस ब्लास्टर्स के माध्यम से वास्तविक व्यावसायिक-जीवन का अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। EMC के छह कम्पोनन्ट हैं जो परस्पर जुड़े हुए हैं तथा विद्यार्थियों को विभिन्न उद्यमशीलता क्षमताओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने और जानने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पाठ्यक्रम को सभी विद्यार्थियों के समझने और उनके वास्तविक जीवन में लागू करने के लिए सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

बिजनेस ब्लास्टर्स कार्यक्रम, जो कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों के लिए है, विद्यार्थियों को अपनी व्यावसायिक अवधारणा विकसित करने, संभावित अवसरों की पहचान करने, बजट तैयार करने के लिए आपस में सहयोग करने और वास्तविक दुनिया में अपने व्यावसायिक विचार को क्रियान्वित करने में मदद करता है। पिछले तीन वर्षों में, हर साल व्यावसायिक विचारों की बाढ़ आ गई है, जिसमें विद्यार्थी धीरे-धीरे लेकिन प्रभावी रूप से अपने उद्यमशीलता के मार्ग का निर्माण कर रहे हैं और साथ ही सहयोग, योजना, आलोचनात्मक सोच, असफलताओं से उबरने आदि के कौशल विकसित कर रहे हैं।

EMC की अभी तक की पाँच वर्षीय यात्रा में, हमने कक्षा से अवलोकन और विश्लेषण करके बहुत कुछ सीखा है। यह उल्लेखनीय है कि स्कूल के नेताओं, शिक्षकों, विद्यार्थियों और ऑब्ज़र्वर द्वारा प्रदान किए गए मूल्यवान फीडबैक के आधार पर, साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाए गए परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए, दिल्ली सरकार के स्कूलों में इसके प्रभाव को बढ़ाने के लिए आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम को 2023-2024 में बड़े पैमाने पर एक नया रूप दिया गया है। इस संशोधित पाठ्यक्रम में वर्तमान आंत्रप्रेन्योर की कहानियों को लगभग दोगुनी संख्या में शामिल किया गया है। वर्तमान कहानी बैंक में महिला आंत्रप्रेन्योर का प्रतिनिधित्व बढ़ा है और इसमें ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व भी शामिल किया गया है। प्रेरणात्मक और अनुभवात्मक शिक्षा को मजबूत करने के लिए, EMC की थीमैटिक यूनिट्स को इंटरैक्टिव परिचय और विस्तृत निर्देशों और सार्थक प्रतिबिंबों के साथ नई गतिविधियों के माध्यम से सरल और बेहतर किया गया है। शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा समझने में आसानी के लिए व्यावहारिक घटकों (कॉम्पोनेन्टस) को अधिक विस्तार से समझाया गया है, सरलीकृत चरणों की एक नई शृंखला और उपयोग के लिए तैयार पोस्टर के साथ प्रस्तुत किया गया है।

मैं इस पाठ्यक्रम को कार्यान्वित करने में हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन व समर्थन करने और इस मुहिम को आगे बढ़ाने में योगदान देने वाले सभी महानुभावों को अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। मैं EMC कोर-टीम और अन्य हितधारकों की भी सराहना करती हूँ, जिन्होंने इस पाठ्यक्रम को बेहतर करने के लिए उत्साहपूर्वक सहयोग किया। मैं सभी के लिए आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम के साथ निरंतर सफलता की कामना करती हूँ।

डॉ. सपना यादव
प्रोजैक्ट डाइरेक्टर, ईएमसी

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पेज नं.
1.	आंत्रप्रेन्योर कौन है?	01
2.	EMC के कंपोनेंट	08
	थीमैटिक यूनिट्स	
U-1	**मैं कर सकता/सकती हूँ**	13
1.1	अख़बार का पुल	17
1.2 (S)	अनोखी गज़ल	20
1.3	मैं सक्षम हूँ	24
Unit 2	**प्रभावी संचार**	28
2.1	एड-मैड	32
2.2 (S)	पहचान के लिए आवाज़	36
2.3	क्या आप मुझे मना सकते हैं?	39
Unit 3	**समीक्षात्मक सोच**	45
3.1	मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज	50
3.2 (S)	अरुणाचलम मुरुगनाथम: सेनेटरी पैड क्रांति	53
3.3	सवाल पूछें: पूछताछ की भूलभुलैया	55
Unit 4	**सहयोग**	60
4.1	ट्रैफिक जाम	65
4.2 (S)	सहयोग से क्रांति	68
4.3	आओ मिलकर बनाएँ	71
Unit 5	**अवसर पहचानकर आगे बढ़ना**	76
5.1	मेरी पसंद का बैग	79
5.2 (S)	शिव - कंप्यूटर मैन	82
5.3	नए मौके ढूँढना	84

E9F1E2

Unit 6	**योजना बनाकर काम करना**	89
6.1	नाव बनाएँ	92
6.2 (S)	मुंबई डब्बावाला	95
6.3	सुनसान/निर्जन द्वीप	98
Unit 7	**विश्लेषण करके सीखना**	103
7.1	सीखने के तरीके	106
7.2 (S)	शीरोज: महिला सशक्तिकरण का जाल	109
7.3	हम सीखेंगे साथ-साथ	112
Unit 8	**गिरकर संभालना**	117
8.1	असफलता की सीख	109
8.2 (S)	चुनौती के माध्यम से लचीलापन: फाल्गुनी नायर की 'नाइका'	124
8.3	टावर बनाना	127

कंपोनेंट

C-1	माइंडफुलनेस	132
C-2	स्टूडेंट्स स्पेशल	141
C-3	करियर एक्सप्लोरेशन	151
C-4	आंत्रप्रेन्योर के साथ संवाद	164
C-5	बिज़नेस बलास्टर्स	170

परिशिष्ट (APPENDIX)

A-1	शब्दावली	172
A-2	संदर्भ	174
A-3	आभार	177

आंत्रप्रेन्योर कौन है?

HBKBK1

जब भी हम कोई काम करते हैं तो हमारे काम करने के तरीके को दो तरह से देखा जा सकता है-

- ट्रेडिशनल माइंडसेट यानी परंपरागत सोच के साथ, किसी तरह का जोखिम उठाए बिना काम करना।
- आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट यानी किसी बड़ी सोच के साथ, जोखिम उठाने की मानसिकता के साथ काम करता।

विद्यार्थियों में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट यानी उद्यमशील सोच विकसित करने के लिए औपचारिक स्कूल शिक्षा की संरचना में ही अवसर विकसित करना हमारे देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में एक नवाचार (इनोवेशन) है। इसलिए इस पाठ्यक्रम में आगे बढ़ने से पहले हमें यह समझ लेना ज़रूरी है कि आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट क्या है? आइए निम्न सवालों के द्वारा समझते हैं कि आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट क्या है-

एक आंत्रप्रेन्योर और बिज़नस-मैन में क्या अंतर है?

''सभी आंत्रप्रेन्योर व्यापारी होते हैं लेकिन सभी व्यापारी आंत्रप्रेन्योर नहीं होते।''

कुछ व्यापारियों में कुछ अलग प्रतिभा, कुछ अलग गुण होते हैं जो उन्हें आंत्रप्रेन्योर की श्रेणी में खड़ा करते हैं। ये कौन-से गुण और प्रतिभाएँ हैं। इस पर हम आगे विस्तार से बात करेंगे लेकिन पहले एक सामान्य व्यापारी और एक आंत्रप्रेन्योर के बीच काम करने के तरीके के अंतर को समझने की कोशिश करते है-

1. एक सामान्य व्यापारी किसी पुराने प्रचलित बिज़नेस को उसके पुराने तौर-तरीकों से ही करने की कोशिश करता है और उसी से मुनाफा कमाने की कोशिश करता है। उसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह जिस सामान या आइडिया का बिज़नेस कर रहा है वह उसका अपना है या किसी अन्य व्यक्ति का। जबकि एक आंत्रप्रेन्योर जिस सामान या आइडिया का बिज़नेस करता है, यह स्वयं उसका निर्माता या रचयिता होता है। आंत्रप्रेन्योर पुराने बिज़नेस या आइडिया पर भी काम करता है तो पुराने तौर-तरीकों की जगह उसमें सुधार करते हुए व नए सिरे से जोखिम उठाते हुए उसे आगे बढ़ाने की कोशिश भी करता है।

2. एक सामान्य व्यापारी अपना काम मुनाफे को लक्ष्य बनाकर करता है जबकि एक आंत्रप्रेन्योर अपना लक्ष्य मुनाफे के साथ-साथ बदलाव को भी बनाता है। बदलाव का यह लक्ष्य बिज़नेस करने के तौर-तरीकों से लेकर, आम लोगों के जीवन की जुड़ी समस्याओं का हल निकालने तक किसी में भी हो सकता है। बहुत बार आंत्रप्रेन्योर विश्व की बड़ी समस्याओं में बदलाव करने का भी लक्ष्य बनाते हैं, जिसका उनमें एक जुनून होता है। जाहिर है अपना पूरा तन-मन-धन निवेश करते वक्त मुनाफा भी उसका एक लक्ष्य होता है, लेकिन वह एकमात्र लक्ष्य नहीं होता।

इसे एक उदाहरण की सहायता से समझते हैं। मान लीजिए कि आपके पड़ोस में कोई व्यक्ति सब्ज़ी की नई दुकान खोलता है, तो इसमें न तो सब्जी कोई नया सामान है और न ही सब्जी की दुकान खोलना कोई नया आइडिया है। अगर यह व्यक्ति सब्ज़ी खरीदने वाले ग्राहकों की समस्या को समझते हुए (मसलन अच्छी पैकिंग में या काटकर बेचना या फिर होम डिलीवरी आदि) उसका समाधान करने के विचार से अपना काम शुरू करता है तो निश्चित रूप से वह सामान्य बिज़नेस-मैन नहीं बल्कि एक आंत्रप्रेन्योर कहलाएगा। यह करने के लिए उसे कई तरह के जोखिम उठाने पड़ सकते

हैं, जैसे किसी नई मशीन में निवेश करना या दुकान में अधिक संख्या में काम करने वाले लोग रखना। इन आर्थिक जोखिमों के अलावा यह भी खतरा हो सकता है कि उनका आइडिया काम न करे और उसे नुकसान भी हो जाए। पर इन सबके बावजूद भी, अगर वह यह काम करने का निर्णय लेता है तो यह आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ काम करने वाला व्यक्ति कहलाएगा।

इसे एक और उदाहरण से समझते हैं। मान लीजिए कि कोई व्यक्ति एक लोकप्रिय पिज़्ज़ा (pizza) कंपनी की फ्रेंचाइजी लेकर रेस्टोरेंट खोलता है। अगर वह अपना रेस्टोरेंट कनॉट प्लेस में खोलता है, जहाँ पर पहले से ही हज़ारों लोग रोज़ाना खाना खाने के लिए आते हैं तो वह एक ट्रेडिशनल माइंडसेट के साथ काम करने वाला बिज़नेस-मैन होगा। अगर यह कनॉट प्लेस में ही एक नए तरीके से तैयार, नए स्वाद के पिज्जा का अपना ब्रांड शुरु करता है तो वह आंत्रप्रेन्योर कहलाएगा। लोग उसे पसंद करेंगे या नहीं, इस जोखिम के बावजूद, विश्लेषण करके यह लोगों को एक नए तरीके का स्वाद देने के अपने जुनून पर तन-मन-धन लगाकर काम करता है।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट एक बड़ा विषय है लेकिन ऊपर दिए गए दो उदाहरण मोटे तौर पर ट्रेडिशनल माइंडसेट और आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट (परंपरागत सोच और उद्यमशील सोच) के बीच अंतर समझने में हमें मदद कर सकते हैं। एक ट्रेडिशनल माइंडसेट का व्यापारी अपने व्यापार में घाटे के डर से कोई जोखिम नहीं लेता। अगर लेता भी है तो बहुत नापतोल कर ही लेता है। जबकि एक आंत्रप्रेन्योर की पूरी सोच ही किसी समस्या के समाधान के लिए कुछ नया करके देखने के जोखिम पर आधारित होती है। एक सामान्य व्यापारी हमेशा दूसरे व्यापारी के साथ आगे बढ़ने की प्रतियोगिता में शामिल रहता है लेकिन एक आंत्रप्रेन्योर खुद के साथ में प्रतियोगिता में रहता है। वह हमेशा अपने वर्तमान से आगे बढ़कर बेहतर कुछ करना चाहता है।

यहाँ इस तथ्य को समझ लेना ज़रूरी है कि आंत्रप्रेन्योर और बिज़नेस-मैन के बीच कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है। उपर्युक्त अंतर को समझते हुए कहीं हम मन में यह धारणा न बना लें कि ट्रेडिशनल बिज़नेस-मैन के मुकाबले आंत्रप्रेन्योर होना कोई बहुत बड़ी बात है। समाज में ट्रेडिशनल बिज़नेस-मैन की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी आंत्रप्रेन्योर की। एक आंत्रप्रेन्योर किसी नए सामान्य विचार पर काम करके उससे आगे बढ़ जाता और ट्रेडिशनल बिज़नेस-मैन ऊँचे विचार या सामान के व्यापार को आगे चलाने में भूमिका निभाता है। दोनों ही समाज के लिए आवश्यक है क्योंकि दोनों अलग-अलग तरीकों से समाज में योगदान देते हैं।

आंत्रप्रेन्योर कौन होता है और कौन नहीं होता है?

ऊपर दिए गए संदर्भ के आधार पर अब हम कह सकते हैं कि आंत्रप्रेन्योर वह व्यक्ति होता है जो नए तौर-तरीकों के साथ अपना व्यापार करता है। उसके व्यापार करने के पीछे एक सोच होती है, एक विज़न होता है। अपने व्यापार के ज़रिए वह लोगों के जीवन पर प्रभाव डालता है, उनकी समस्या का समाधान उपलब्ध करवाता। वह कुछ नया करते हुए असफल होने के विचार से नहीं डरता बल्कि जोखिम उठाते हुए सफल होने की कोशिश करता है। अगर उसका कोई प्रयास या योजना सफल नहीं भी होती है तब भी वह अपने बड़े उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, नुकसान उठाते हुए भी नए सिरे से सफल होने के प्रयास में लगा रहता है।

हम किसी ऐसे व्यक्ति को जो भले ही अपना व्यापार करता हो और अपने व्यापार में सफल भी हो, आंत्रप्रेन्योर नहीं कहेंगे जिसके लिए काम करने का उद्देश्य केवल आजीविका चलाने या मुनाफा कमाने तक सीमित रहता है और अपनी या लोगों की समस्याओं का समाधान खोजना उसकी मुख्य प्रेरणा नहीं होती। यह असफलताओं से डरता है और छोटी-मोटी असफलताओं से निराश होकर अपनी महत्वपूर्ण और महत्वाकांक्षी योजनाओं तक को छोड़ देता है।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट और आंत्रप्रेन्योरशिप स्किल की शिक्षा में क्या अंतर है?

आंत्रप्रेन्योरशिप स्किल की शिक्षा से हमारा तात्पर्य है, विद्यार्थियों को व्यापार के विभिन्न पहलुओं की शिक्षा देना। जैसे नफा-नुकसान का हिसाब-किताब रखना, व्यापार को बढ़ाने के लिए योजनाएँ बनाना, मार्केटिंग, कस्टमर सर्विस इत्यादि।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइडसेट की शिक्षा से हमारा तात्पर्य है, विद्यार्थियों के अंदर कुछ नया करने या नए तरीके से करने की सोच पैदा करना। उनके अंदर समस्याओं और चुनौतियों के नए समाधान खोजने की जिज्ञासा पैदा करना और उस समाधान पर काम करने का आत्मविश्वास पैदा करना, असफलताओं और चुनौतियों के बावजूद अपने उद्देश्य पर डटे रहने की हिम्मत पैदा करना और हमेशा नया सीखते रहने की जिज्ञासा के साथ नेतृत्व के गुण विकसित करता।

हम आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में उन गुणों का विकास करेंगे, जिससे वे जो भी करें एक आंत्रप्रेन्योर की तरह करें।

आंत्रप्रेन्योर होने और आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट वाले व्यक्ति होने में क्या अंतर है?

अभी तक यह स्पष्ट हो गया है कि आंत्रप्रेन्योर होने का अर्थ है, एक ऐसा व्यक्ति जो अपना व्यापार करता है लेकिन नई सोच, नए तरीके के साथ जोखिम उठाते हुए। जबकि आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से तात्पर्य व्यक्ति के सोचने और जीने के तरीके से है, भले ही यह कोई व्यापार करता हो या फिर कोई नौकरी या अन्य काम करता हो।

यह ज़रूरी है कि हर आंत्रप्रेन्योर में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट होगा, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त हर व्यक्ति आंत्रप्रेन्योर ही होगा।

किस आधार पर कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त है या नहीं?

किसी व्यक्ति के आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त होने की पहचान उसके सोचने और काम करने के तरीके से ही हो सकती है। भले ही व्यक्ति कोई नौकरी करता हो या व्यापार करता हो अगर यह काम करने से पहले नए सिरे से सोचने और नए तरीके अपनाने का अभ्यास करता है, अपनी सोच और अपने नए तरीकों के प्रति आत्मविश्वास से भरा रहता है, उनके असफल होने से डरता नहीं है। समस्याओं और चुनौतियों का समाधान खोजना और उन पर काम करना उसे प्रेरित करता है, और उसके काम करने का तरीका लोगों के जीवन को प्रभावित करता है, उनकी समस्याओं को कम करता है या उन्हें कुछ नया उपलब्ध कराता है।

इस पाठ्यक्रम में हमने बहुत-से ऐसे व्यापारियों की कहानी शामिल की है, जिन्होंने अपनी सोच और अपने काम के दम पर न सिर्फ अपने जीवन में सफलता हासिल की है बल्कि लोगों को बहुत कुछ नया और उपयोगी दिया है। वे सब सफल व्यापारी होने के साथ-साथ आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यापारी भी हैं। इन सबने जब नया सोचना या नया काम करना शुरू किया तो उस समय इनकी सफलता की कोई गारंटी नहीं थी। बहुत लोगों के पास अनुभव या बहुत पैसा भी नहीं था लेकिन फिर भी अपने आत्मविश्वास और सोच के दम पर आज वे सफल आंत्रप्रेन्योर है।

एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति में और एक आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति में क्या अंतर है?

कई बार हम देखते हैं कि बहुत-से लोग आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के अभाव में अपने हालात से आगे सोच नहीं पाते, रिस्क लेने से डरते हैं और इसीलिए अपनी क्षमता तथा प्रतिभा से कम नौकरी या व्यापार से ही संतोष कर लेते हैं। एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति के पास डिग्री या डिप्लोमा हो सकते हैं, अच्छी नौकरी हो सकती है या सफल व्यापार भी हो सकता है लेकिन यह भी संभव है कि वह अपनी प्रतिभा को ठीक से समझ न पाया हो या तलाश कर पाने के बावजूद उसके अनुरूप कार्य या सफलता न प्राप्त कर पाया हो।

वहीं एक आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति अपनी प्रतिभा को तथा अपने व्यक्तित्व के मजबूत पक्षों को पहचानता है। यह कुछ नया करने के लिए असफलता के डर से घबराता नहीं है। वह विश्लेषण पर आधारित निर्णय ले सकता है। परिस्थिति के अनुसार अपने में बदलाव लाने को तैयार होता है, समस्याओं से परेशान होने की बजाय गहन सोच से, सहयोग लेकर, अपने लिए नए अवसर बना लेने का विश्वास रखता है, जैसा कि अगर हम शिव नादर की कहानी पढ़कर जानेंगे। एक आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से युक्त व्यक्ति अपने करियर में सफलता के साथ ईमानदारी और नैतिकता का भी ध्यान रखता है।

क्या आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट एक बिज़नेस-मैन में ही होना चाहिए या फिर नौकरी करने वाले व्यक्ति के लिए भी इसकी कोई उपयोगिता है?

अब तक की बातचीत से हमनें जो समझा है, यह सिर्फ व्यापारियों पर लागू नहीं होता। आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट नौकरी करने वाले लोगों के लिए भी उतना ही जरूरी है। इसे समझने के लिए व्यापारियों के साथ कुछ ऐसे लोगों के उदाहरण को भी समझते हैं जो किसी कंपनी या सरकार में नौकरी करते हुए भी आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ कार्य करते हैं। वे अपना काम पूरी लगन के साथ रचनात्मकता तथा सहयोग से करते हैं। टीम को अपनी ताकत बनाकर उसे प्रोत्साहित करते हैं। ये उसी कार्य व्यवस्था में कुछ नया तथा सफलतापूर्ण कर पाते हैं, जिसमें अन्य लोग बाधाओं तथा सीमितताओं की समस्याओं में उलझकर रह जाते हैं। ये सीमितताओं से परेशान होने की बजाय उनमें हल निकालते हैं। इस तरह वे अपने काम से लोगों के जीवन को प्रभावित करते है।

दिल्ली में ही इसका सबसे बड़ा उदाहरण मेट्रो मैन श्रीधरन हैं, जिनका जिक्र हमारे इस पाठ्यक्रम में आगे है। वे व्यापारी नहीं थे लेकिन उनकी नई सोच और काम करने के नए तरीके और हिम्मत ने ऐसा काम करके दिखा दिया जो कोई और इंजीनियर शायद कभी सोच भी न सका हो।

हमारे आस-पास ऐसे बहुत-से उदाहरण है, जैसे कोई आई. ए. एस. अधिकारी अपने आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत अपने विभाग का हुलिया ही बदल देता है और लोगों की समस्याएँ अचानक गायब ही हो जाती है। कंपनियों में भी कई लोग विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर हैं, जो आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत अपनी कंपनी को कहाँ का कहाँ पहुँचा देते हैं। ऐसे कुछ लोगों को याद करते हुए हम सोच सकते हैं कि ये कौन लोग होते हैं, ये कैसे काम करते हैं? क्यों उनका काम आज भी लोग याद करते हैं और उनसे प्रेरणा लेते हैं?

हम अपने शिक्षा विभाग में ही देख सकते हैं, जहाँ बहुत सारे शिक्षक या विद्यालय प्रमुख पढ़ाने या स्कूल चलाने में अपने आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की बदौलत ऐसा काम करते है जिससे न सिर्फ उनके विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा मिलती है बल्कि उनके काम करने की सोच और तरीके से अन्य शिक्षकों और विद्यालय प्रमुखों को भी प्रेरणा मिलती है।

चित्रा गुप्ता, एक सच्ची शैक्षिक आंत्रप्रेन्योर ने जीनत महल सर्वोदय कन्या विद्यालय नंबर 2, एक संघर्षरत सरकारी कन्या विद्यालय को पूरी स्कूल प्रणाली के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण में बदल दिया। स्कूल को 'पनिशमेंट पोस्टिंग' माना जाता था, लेकिन चित्रा ने इसे एक चुनौती के रूप में लिया। उनकी उद्यमशीलता की भावना तब देखी गई जब उन्होंने विद्यार्थियों और अभिभावकों की मानसिकता को बदलने के लिए तर्क,सहानुभूति के साथ अपने विचार साझा कर उन्हें समझाने के तरीके का इस्तेमाल किया। चित्रा गुप्ता ने विद्यार्थियों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए योग, अंतर-विद्यालयी कला प्रतियोगिताओं की कहानियों जैसी नवीन गतिविधियों की शुरुआत की। उन्होंने शिक्षकों के साथ संचार के रास्ते खोलकर उनकी प्रेरणा बढ़ाई। माता-पिता के साथ ओपन हाउस सत्र आयोजित करते हुए, उन्होंने शिक्षा के दीर्घकालिक लाभों, जैसे कॉलेज प्रवेश, बेहतर नौकरी के अवसर और वित्तीय स्थिरता पर प्रकाश डाला।

जब चित्रा ने स्कूल ज्वाइन किया तो 10वीं क्लास का पास प्रतिशत सिर्फ 50% और 12वीं क्लास का 60% था। उनके द्वारा किए गए छोटे-छोटे बदलावों ने एक साल के अंदर ही हालात बदल दिए। स्कूल ने 10वीं और 12वीं दोनों कक्षाओं में 100% परिणाम हासिल किया। तीन वर्षों के भीतर, स्कूल गुणवत्ता सूचकांक (प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा प्राप्त औसत अंक) के अनुसार दिल्ली का नंबर एक सरकारी स्कूल बन गया। प्रेरक सत्रों के लिए बाहर से वक्ताओं को आमंत्रित करने और विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया लेने जैसे चित्रा गुप्ता के सक्रिय उपायों के परिणामस्वरूप कम अनुपस्थिति, 100% परीक्षा उत्तीर्ण दर और उत्कृष्ट विद्यार्थियों के लिए योग्यता छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। इस प्रयास की सफलता ने इसे एक प्रतिष्ठित केस स्टडी में बदल दिया है। यह पहल, नवाचार और समस्या-समाधान के आंत्रप्रेन्योरशिप कौशल को प्रदर्शित करता है, जिसे चित्रा गुप्ता ने कुशलतापूर्वक स्कूल को उत्कृष्टता के मॉडल में बदलने में लगाया है।

ऐसी ही कहानी है नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत की, जिन्होंने सिविल सर्वेंट रहते हुए सरकार में कई बदलाव किए। अमिताभ कांत भारत के लिए चीज़ों को बेहतर बनाने में अग्रणी हैं। वह देश के कामकाज के तरीके को बदलने में एक बड़ा हिस्सा रहे हैं। उन्होंने नेशनल इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (नीति आयोग) और औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में काम किया। इस दौरान, उन्होंने स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, इनक्रेडिबल इंडिया, केरलः गॉड्स ओन कंट्री और एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स प्रोग्राम जैसी प्रमुख राष्ट्रीय पहलों का कार्यभार सँभाला। इन योजनाओं और नीतियों ने लोगों को भारत को अलग तरह से देखने पर मजबूर कर दिया। इन पहलों के माध्यम से उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि देश नए व्यवसायों के लिए एक बेहतरीन जगह बने। उनके प्रयासों से 70,000 से अधिक स्टार्टअप और 101 से अधिक यूनिकॉर्न बने।

उन्हें समस्याएँ सुलझाना पसंद है। अमिताभ ने यह सुनिश्चित किया कि व्यवसायों के लिए चीज़ें संचालित करना आसान हो। उनके काम की वजह से भारत ने ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस इंडेक्स में 79 पायदान की छलाँग लगाई। उन्होंने भारत को चीज़ें बनाने और उन्हें विदेशों में बेचने के लिए शीर्ष स्थान बनाने पर भी ध्यान केंद्रित किया। मेक इन इंडिया और प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) जैसी उनकी योजनाओं ने विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया। भारत को एक बेहतर और अधिक व्यवसाय-अनुकूल स्थान बनाने में अमिताभ कांत एक प्रमुख खिलाड़ी हैं।

अगर हम गहराई से पड़ताल करेंगे तो देखेंगे कि ऐसे लोगों ने पढ़ाने में, स्कूल चलाने में न सिर्फ नए तरीके अपनाए बल्कि जोखिम भी उठाए होंगे। हो सकता है कि उन्होंने पाठ्यक्रम से बाहर या परंपराओं से अलग हटकर बच्चों को पढ़ाने की कोशिश की हो, जिससे बच्चों को उनके विषय बेहतर समझ में आने लगे हों। उन्होंने सीमितताओं से परेशान होने की बजाय गहन सोच तथा रचनात्मकता का प्रयोग करते हुए उनके हल निकाले हों। जोखिम उठाना, समस्या का हल निकालना, रचनात्मकता से कार्य करना ये सब आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के गुण हैं और हर कार्य-क्षेत्र में उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं- चाहे वह नौकरी हो या कोई अन्य व्यवसाय।

एक नौकरी करने वाले व्यक्ति के काम करने के तरीके को किन परिस्थितियों में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की श्रेणी में रखा जा सकता है?

जब किसी कार्य व्यवस्था में कुछ लोग कार्य न कर पाएँ परंतु वहीं कोई अन्य व्यक्ति कार्य को प्रभावशाली रुप से कर दें, कुछ लोग सीमितताओं तथा समस्याओं में बँधकर रह जाएँ, वहीं अन्य लोग उनमें रचनात्मक हल निकालकर, अपने साथ अपनी टीम की भी क्षमताओं को संगठित रूप से प्रयोग करके सफल हों तो हम मान सकते हैं कि नौकरी करने वाले व्यक्ति आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के तरीके से कार्य करते हैं।

इसका एक उदाहरण हम ने ई. श्रीधरन के रूप में जाना। उन्होंने कोंकण रेलवे तथा मेट्रो रेल में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट का प्रयोग करते हुए कार्य में आने वाली बाधाओं का पूर्वानुमान करते हुए उन्हें दूर करने के हल निकाले तथा कार्य को निर्धारित समय सीमा से पहले पूरा किया।

हम अन्य क्षेत्रों से भी उदाहरण देख सकते हैं। जब किसी पिछड़े जिले में एक आई. ए. एस. अफसर महिला वहाँ के सरकारी अस्पताल की प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए वहीं अपने बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेती है, तब वह जोखिम उठाती है। पर उसके बदले में वह पूरे जिले के लोगों का विश्वास सरकारी तंत्र में मजबूर करती है। वह यह जोखिम बिना सोचे-समझे नहीं उठाती। इसके पीछे दूरदर्शिता के साथ कई महीनों की मेहनत भी होती है। पब्लिक हेल्थ सिस्टम में विश्वास के अभाव की समस्या को समझना और उसके लिए बिलकुल नया, जोखिम भरा कदम उठाना यह आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से ही संभव है।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट किसी भी कार्य क्षेत्र में बाधाओं से ऊपर उठकर कार्य करने के तरीके को प्रभावशाली बनाकर सफलता को सुनिश्चित करता है। इसीलिए दिल्ली सरकार शिक्षा विभाग की ओर से यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों में आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विकसित करने के लिए कक्षा चलाई जाएँ, जिससे कि अपने जीने के तरीके में ही आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट को सम्मिलित कर पाएँ।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए किस प्रकार उपयोगी है?

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विद्यार्थियों के लिए मूल्यवान है, चाहे वे कोई भी करियर चुनें। यह जिज्ञासा, समस्या-समाधान और आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है, जो महत्वपूर्ण जीवन कौशल हैं। इस प्रकार, इस मानसिकता वाला एक विद्यार्थी नवीन अध्ययन पद्धति विकसित कर सकता है, परियोजनाओं पर सहयोग कर सकता है, या एक स्कूल क्लब शुरू कर सकता है। वे कभी हार न मानने वाले रवैये और असफलताओं से सीखने के साथ चुनौतियों का सामना करते हैं। आइए, कुछ उदाहरण देखें कि आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट वाले विद्यार्थी कैसे दिख सकते हैं।

अध्ययन के तरीकों को अपनाना: हाईस्कूल की विद्यार्थियों सोनिया अपनी अंतिम परीक्षा से एक सप्ताह पहले बीमार पड़ गई। अपनी नियमित अध्ययन दिनचर्या का पालन करने में असमर्थ होने के कारण, उसने रचनात्मक रूप से अपने तरीकों को बदल दिया। वॉयस-टू-टेक्स्ट तकनीक का उपयोग करते हुए, उसने आराम करते समय प्रमुख अवधारणाओं को निर्देशित किया। इससे न केवल उसे दोहराने में मदद मिली बल्कि उसे जानकारी का अलग और अधिक आसानी से उपयोग करने का एक उपकरण भी मिला।

समस्याओं का सामना करने के कारण अजय अधिक समय तक स्व-अध्ययन नहीं कर सके। अपने समस्या-समाधान कौशल का उपयोग करते हुए, वह एक सहयोगात्मक अध्ययन दृष्टिकोण लेकर आए। उन्होंने सहपाठियों के साथ एक छोटा अध्ययन समूह बनाया, जहाँ प्रत्येक सदस्य विशिष्ट विषयों पर ध्यान केंद्रित करता था। बाद में उन्होंने जो समझा उसे साझा किया। इससे न केवल अजय का बोझ कम हुआ बल्कि पूरे समूह की पाठ्यक्रम के बारे में समझ भी बढ़ गई।

पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और सीमित अध्ययन समय: मोनिका को पारिवारिक जिम्मेदारियों और स्कूल के बीच संतुलन बनाते हुए पढ़ाई करना कठिन लगा। अपने समस्या-समाधान कौशल का उपयोग करते हुए, उसने अपने दैनिक घरेलू काम को सीखने के अवसरों में बदल दिया। मोनिका ने कार्य करते समय अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपने अध्ययन के विषयों पर चर्चा करना शुरू कर दिया, जिससे घर पर एक सहयोगात्मक सीखने का माहौल तैयार हुआ। इससे न केवल उन्हें अपने पारिवारिक कर्तव्यों को पूरा करने का मौका मिला बल्कि शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार सुनिश्चित हुआ।

शोर-शराबे वाले माहौल में ध्यान भटकाने वाली चीज़ों पर काबू पाना: मनोज शोर-शराबे वाले इलाके में रहता था, जिससे उसके लिए ध्यान केंद्रित करके पढ़ाई करना मुश्किल हो गया था। ध्यान भटकने के कारण हार मानने के बजाय, उन्होंने रचनात्मक रूप से अपने घर में शोर-रद्द करने वाला अध्ययन क्षेत्र डिज़ाइन किया। मनोज ने ईयरफोन का इस्तेमाल किया और हल्का संगीत बजाया। इस समस्या-समाधान दृष्टिकोण ने उन्हें बेहतर और प्रभावी अध्ययन समय देने की अनुमति दी।

प्रत्येक मामले में, इन विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने दृढ़ संकल्प और आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के साथ स्थिति का सामना किया। उन्होंने अपनी अध्ययन विधियों को रचनात्मक रूप से अपनाया, साथियों के साथ सहयोग किया और उपलब्ध संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। ऐसा करके, उन्होंने न केवल चुनौतियों पर काबू पाया बल्कि जीवन के लिए कौशल भी विकसित किया, जो शैक्षणिक और स्कूली जीवन से परे है। पाठ्यक्रम में शामिल सफल आंत्रप्रेन्योर की कहानियाँ प्रेरणा का काम करती हैं।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट वाले शिक्षक कक्षाओं में रचनात्मकता लाते हैं। वे शिक्षण विधियों में नवीनता लाते हैं, पाठों को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार आकर्षक बनाते हैं। एक आंत्रप्रेन्योर की तरह, वे चुनौतियों को स्वीकार करते हैं, एक गतिशील सीखने का माहौल बनाते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों को आलोचनात्मक ढंग से सोचने, जिज्ञासा की भावना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जोखिम उठाकर, वे शैक्षिक संघर्षों का अनूठा समाधान ढूँढते हैं।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट विकसित करने में मदद करना है, उन्हें सीमाओं से परे जाने और किसी भी क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए सशक्त बनाना है। यह सिर्फ व्यवसाय के बारे में नहीं है; या सीखने के अनुभव को बढ़ाना, यह एक माइंडसेट है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफल व्यक्तियों के रूप में आकार देती है।

EMC के कंपोनेंट्स

J1T9B3

जैसा कि 'आंत्रप्रेन्योर कौन है?' प्रकरण में हमने देखा, आंत्रप्रेन्योर (उद्यमी) की तरह सोचना व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ हमारे निजी जीवन में भी काम आ सकता है। निराशा का डटकर सामना करना, अपनी रुचियों को जानना और उन्हें निखारना, कुछ नया करने का साहस करना, ये सभी क्षमताएँ आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट से सीखकर हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को भी ज़्यादा सकारात्मक होकर जी सकते हैं।

आंत्रप्रेन्योरियल (उद्यमशील) क्षमताओं के इस विस्तृत दायरे को ध्यान में रखकर ही आंत्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट पाठ्यक्रम की रचना की गई है, जिससे कि विद्यार्थी भविष्य के लिए अपने चुने हुए व्यवसायों और निजी जीवन, दोनों में ही सफल हो सकें।

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के लिए 7 मुख्य क्षमताओं को विकसित करना ज़रूरी है-

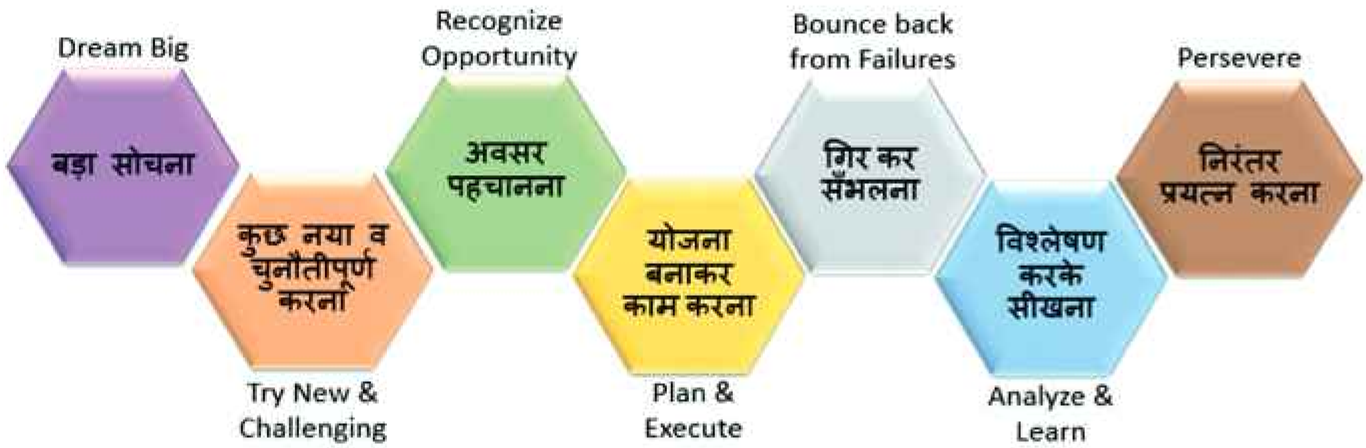

आंत्रप्रेन्योरियल क्षमताएँ/Entrepreneurial Abilities

आंत्रप्रेन्योरियल (उद्यमशील) क्षमताओं को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम इनसे जुड़ी हुई मूलभूत क्षमताओं एवं गुणों पर काम करें। उदाहरणस्वरुप देखें तो-

- कुछ नया और चुनौतीपूर्ण करने में आत्मविश्वास होना और अपने अंदर छिपे डरों का सामना करना बहुत ज़रूरी है।
- अवसर पहचानने के लिए बारीकी से अवलोकन करना, समानुभूति के साथ परिस्थिति को समझना और गहन सोच से विश्लेषण करके हल निकालना आवश्यक है।

इसी तरह आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के लिए ज़रूरी क्षमताएँ एवं गुण निम्न सूची में दिए गए हैं जिन्हें पाठ्यक्रम के विभिन्न कंपोनेंट द्वारा विद्यार्थी अनुभव करके सीखेंगे।

Foundational Abilities

- समीक्षात्मक सोच Critical Thinking
- संचार Communication
- सहयोग, टीम वर्क Collaboration, Teamwork
- निर्णय लेना Decision Making
- बदलाव लाना/अपनाना Drive / Adapt to Change
- विचार-मंथन Ideate
- ईमानदारी और नैतिकता Integrity & Ethics
- समस्या सुलझाना Problem Solving
- चिंतन विश्लेषण Reflect Analyze

Key Qualities

- रचनात्मकता Creativity
- जिज्ञासा Curiosity
- समानुभूति Empathy
- आनन्द Joyfulness
- डर को प्रबंधित करें Manage Fears
- सचेतनता Mindfulness
- अवलोकन Observation
- स्व-जागरूकता Self-Awareness
- खुद पर भरोसा Self Confidence

आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट पाठ्यक्रम कैसे सिखाया जाएगा?

जैसे कि आपने क्षमताओं एवं गुणों की सूची को देखकर समझा है। यह ज़रूरी है कि विद्यार्थी इन्हें अनुभव करके सीखें न कि सिर्फ पढ़कर। जब तक विद्यार्थियों को इन क्षमताओं का अभ्यास करने के मौके नहीं मिलेंगे, तब तक उनके लिए ये क्षमताएँ सूचना की तरह ही रहेंगी। विद्यार्थी इन्हें अपने जीवन से जोड़कर देख पाएँ और अपने भविष्य में इनका इस्तेमाल कर पाएँ, इसके लिए इस पाठ्यक्रम को मुख्य रूप से अनुभव से सीखने (expereintial) की शैली में बनाया गया है।

EMC के लिए प्रतिदिन टाइम-टेबल (time table) में एक पीरियड निर्धारित किया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन क्षमताओं को अगर आदत में बदलना है तो इसके लिए नियमित अभ्यास की ज़रूरत होगी।

अनुभव से सीखने के विभिन्न आयाम हो सकते हैं। इसे विद्यार्थी कक्षा के अंदर और बाहरी दुनिया से जुड़कर, दोनों ही तरह से सीख सकते हैं ध्यान सिर्फ इस बात का रखा जाना चाहिए कि दोनों ही संदर्भों में स्वयं को कुछ करके देखने के मौके मिलें। वे सिर्फ सुनकर या देखकर न सीखें। अनुभव से सीखने में 2 प्रक्रियाएँ महत्त्वपूर्ण हैं-

1. **अनुभव (Experience)**- खुद करके देखना -व्यक्तिगत रूप से या अपने साथियों के साथ मिलकर गतिविधि करना, उसके बारे में सवाल पूछना, खुद करके जवाब ढूँढ़ना और अपनी समझ बढ़ाना।
2. **चिंतन (Reflection)** - अनुभव के बारे में सोचना - गतिविधि कर लेने के बाद उस अनुभव से जो सीखा, अपनी ऑब्ज़र्वेशन सवाल आदि के बारे में चिंतन करना और उनके आधार पर नए अनुभवों के लिए खुद को तैयार करना।

इन दोनों के अलावा इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी दूसरों से प्रेरणा लेकर भी सीखेंगे। जैसे कि आंत्रप्रेन्योर की कहानियाँ सुनना और उनसे मिलकर उनकी यात्रा को गहराई से समझना।

उदाहरण

1. आंत्रप्रेन्योर का इंटरव्यू लेकर उनकी यात्रा को समझेंगे और साथ ही साथ अपने आत्मविश्वास, संचार और नए लोगों से बात करने में लगने वाले डर आदि क्षमताओं पर काम करेंगे। यह स्वयं अनुभव करने और प्रेरणा से सीखने - दोनों का माध्यम है।
2. मैनुअल (manual) में दी गई गतिविधियों को स्वयं करके समस्या का समाधान (problem solving) समीक्षात्मक सोच (critical thinking), पहल करना (taking initiative) आदि क्षमताओं को अविकसित करेंगे।

इंटरव्यू और गतिविधि कर लेने के बाद विद्यार्थी अपने साथियों के साथ मिलकर अपने अनुभव पर चिंतन करेंगे, इससे उन्हें अपनी क्षमताओं, अपनी रुचियों, स्वयं के बारे में सकारात्मक और सुधारने वाले बिंदुओं की वास्तविक जानकारी मिलेगी।

अनुभव और चिंतन, ये दोनों प्रक्रियाएँ अनुभव से सीखने के लिए ज़रूरी हैं। सिर्फ करके देख लेना अनुभव से सीखने के लिए काफी नहीं है। विद्यार्थी कक्षा के अंदर और बाहर, दोनों ही जगह कुछ गतिविधियाँ करेंगे और फिर उस अनुभव के बारे में चिंतन करके न सिर्फ आंत्रप्रेन्योरियल (उद्यमशील) क्षमताओं को समझेंगे बल्कि उनका जीवन में उपयोग करना भी सीखेंगे। अनुभव से सीखने का सबसे बड़ा फायदा ये है कि ये हमारे विद्यार्थियों में निरंतर सीखते रहने की क्षमता विकसित करेगा।

कंपोनेंट

इस पाठ्यक्रम के छह मुख्य कंपोनेंट हैं जिनसे विद्यार्थियों को आंत्रन्योरशिप माइंडसेट से जुड़े विभिन्न अनुभव देने का प्रयास किया गया है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि इन सभी प्रक्रियाओं में विद्यार्थी स्वयं कुछ करके और फिर चिंतन करके सीखेंगे। इनमें से कुछ प्रक्रियाएँ कक्षा में की जाएँगी और कुछ कक्षा से बाहर। कुछ गतिविधि शिक्षक द्वारा करवाई जाएँगी और कुछ में विद्यार्थी स्वयं ज़िम्मेदारी लेंगे। इन सभी कंपोनेंटस् के बारे में विस्तार से जानकारी इस मैनुअल में दी गई है।

कंपोनेंट Component	उद्देश्य Objective	कब करना है When to do	शिक्षक की भूमिका Role of the Teacher	विद्यार्थियों की भूमिका Role of the Students
माइंडफुलनेस Mindfulness	वर्तमान के प्रति जागरूक होना, मन को शांत करना और फोकस करना।	EMC पीरियड की शुरुआत में माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट) और EMC पीरियड के अंत में साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट) EMC पीरियड में प्रत्येक माह के पहले सोमवार को।	माइंडफुलनेस चेक-इन और साइलेंट चेक-आउट करना हर महीने के पहले सोमवार को मासिक माइंडफुलनेस गतिविधि आयोजित करना।	माइंडफुलनेस गतिविधियों में भाग लेना।

थीमैटिक यूनिट्स Thematic Units	गतिविधियों, कहानियों और प्रतिबिंब के माध्यम से विद्यार्थियों में उद्यमिता मानसिकता विकसित करना।	हर रोज़ के EMC पीरियड में।	मैनुअल में दी गई गतिविधियों और कहानियों को फ़ैसिलिटेट करना।	गतिविधियाँ करना, कहानियाँ सुनना, चिंतन और चर्चा करना और फिर साझा करना।
स्टूडेंट-स्पेशल Student Specials	नियमित अभ्यास और फीडबैक से संचार में सुधार और आत्मविश्वास विकसित करना।	प्रत्येक शनिवार EMC पीरियड में या फ्री पीरियड में।	शुरू में इस प्रक्रिया को समझने और करने में विद्यार्थियों की सहायता करें।	गतिविधियों का संचालन करते हुए विभिन्न भूमिकाएँ निभाना।
उद्यमियों के साथ संवाद Live Entrepreneur Interactions	आंत्रप्रेन्योर से आमने-सामने मिलकर उनकी यात्रा और रोजगार के ऑप्शन को समझना।	स्कूल प्रशासन के निर्देशों और आंत्रप्रेन्योर की उपलब्धता के अनुसार	आंत्रप्रेन्योर का परिचय देना और बातचीत का प्रबंधन करना	आंत्रप्रेन्योर की बात सुनें और बिना किसी झिझक के सवाल पूछें
करियर एक्स्प्लॉरेशन Career Exploration	आंत्रप्रेन्योर और जॉब-पर्सन का इंटरव्यू लेना, उनकी प्रोफेशनल-जर्नी को समझना।	हर महीने के आखिरी सोमवार और मंगलवार को विद्यार्थी इंटरव्यू के अपने अनुभव साझा करेंगे।	विद्यार्थी को उन करियर की सूची बनाने में मदद करें जो उन्हें पसंद हों और उन्हें इंटरव्यू के लिए तैयार करना।	ऐसे लोगों को ढूँढना जिनके करियर उन्हें अच्छे लगते हो; उनका इंटरव्यू लेना और अनुभव को कक्षा के साथ साझा करना।
बिज़नेस-ब्लास्टर Field Project	वास्तविक जीवन में आंत्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट का प्रयोग करें।	'बिज़नेस-ब्लास्टर कैसे किया जाना है? (इसके संबंध में समय-समय पर विभाग की तरफ से सर्कुलर्स जारी किए जाएँगे।	सर्कुलर्स में दिए गए निर्देशों (instructions) के अनुसार प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना।	दी गई राशि का आर्थिक या सामाजिक रूप से प्रभावी प्रोजेक्ट करने में उपयोग करना जिसमें विद्यार्थी आंत्रप्रेन्योरशिप माइन्डसेट का प्रयोग करें।

थीमैटिक यूनिट्स की संरचना

थीमैटिक यूनिट्स (Thematic Units) की रचना करने के पीछे उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों को सभी उद्यमशील क्षमताओं को व्यवस्थित तरीके से समझने और अभ्यास करने का मौका मिले। इन यूनिट्स में मुख्यत: गतिविधियों और कहानियों का प्रयोग किया गया है। इनमें एक ओर जहाँ गतिविधियाँ विद्यार्थियों को क्षमताओं के प्रत्यक्ष अनुभव का

मौका देती हैं वहीं दूसरी और कहानियाँ उन्हें प्रेरित करने के उद्देश्य से ली गई हैं। गतिविधियाँ विद्यार्थियों को क्षमताओं के प्रत्यक्ष अनुभव का मौका देती है। इन्हें समझने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी होंगी -

एक यूनिट की संरचना -

- हर यूनिट आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की गुणवत्ता या क्षमता पर फोकस करती है।
- हर यूनिट के शुरुआत में फ़ैसिलिटेटर के लिए उस गुण या योग्यता के महत्व और उससे जुड़ी जानकारी दी गई है।
- हर यूनिट में विद्यार्थियों के साथ यूनिट शुरू करने के लिए सुझाव दिए गए हैं जिनका प्रयोग फ़ैसिलिटेटर को करना चाहिए।
- प्रत्येक यूनिट में दो गतिविधियाँ और एक कहानी हैं। प्रत्येक यूनिट के अंत में अलग से पढ़ने के लिए एक केसलेट भी दिया गया है।
- गतिविधियों/कहानियों के अनुमानित पीरियड विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए दी गई है। फ़ैसिलिटेटर इसे अपनी कक्षा के अनुसार बदलाव कर सकता है।

हर गतिविधि/कहानी की संरचना -

- प्रत्येक गतिविधि/कहानी एक गुणवत्ता या क्षमता पर आधारित है जिसके आधार पर प्रश्न चिंतन के लिए दिए गए हैं।
- प्रत्येक गतिविधि/कहानी की शुरुआत परिचय से होती है जिसे फ़ैसिलिटेटर को विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाएँ।
- प्रत्येक गतिविधि/कहानी को 4 चरणों में बाँटा किया गया है जिन्हें तरीके से किया जाएगा:

कैसे करें- इस चरण में, गतिविधि के लिए निर्देश दिए जाते हैं। फ़ैसिलिटेटर को विद्यार्थियों को ये निर्देश देने होंगे और जिनका पालन करते हुए विद्यार्थी गतिविधि करेंगे।

चिंतन और चर्चा- इस चरण में, गतिविधि के बाद चर्चा के लिए प्रश्न दिए गए हैं जिन्हें फ़ैसिलिटेटर कक्षा के साथ साझा करेगा। फ़ैसिलिटेटर इन प्रश्नों को बोर्ड पर लिख सकते हैं या एक-एक करके जोर से बोलकर सुना सकते हैं।

सीखें साथियों के साथ- इस चरण में, विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ चर्चा/प्रश्नों की समझ को साझा करेंगे।

साझा करना- इस अंतिम चरण में, शिक्षक विद्यार्थियों के साथ गतिविधि/कहानी के मूल संदेश पर चर्चा करेंगे।

यूनिट 01

मैं कर सकता/सकती हूँ

N3R2C7

यूनिट का परिचय

नोट: कक्षा में रोल-प्ले की पूर्व-तैयारी के लिए फ़ैसिलिटेटर इच्छुक विद्यार्थियों के साथ ये साझा कर सकते हैं।

प्रिया, अरे वाह! तुमने तो बड़ा अच्छा पोस्टर बनाया है। चलो, अब बाकी बच्चों को भी बताओ कि तुमने क्या और कैसे बनाया है।

सर, मैं लिख तो सकती हूँ लेकिन ऐसे सबके सामने बोल नहीं पाती। क्लास में सुनाते समय सब भूल जाती हूँ।

कोई बात नहीं, प्रिया। कभी-कभी ऐसा हो जाता है। जब हम किसी बात से घबरा जाते हैं तो हम सब भूल जाते हैं।

राहुल बेटा, आपके साथ भी तो पहले ऐसा हो जाता था लेकिन अब तो आप प्रार्थना-सभा और प्रतियोगिताओं में पूरे आत्मविश्वास के साथ हिस्सा लेते हो और जीतते भी हो।

हाँ प्रिया, बिलकुल। तुम यकीन नहीं करोगी, पहले मैं भी ऐसे ही घबरा जाता था।

ओह! सच में? लेकिन तुम्हें देखकर ऐसा बिलकुल नहीं लगता है। अब तो तुम बहुत आश्वस्त (कॉन्फिडेंट) दिखते हो। लेकिन तुमने ऐसा किया कैसे? अपने डर पर कैसे काबु पाया?

मुझे सर ने बताया था कि ऐसे स्थिति में सबसे ज़रूरी है खुद पर भरोसा बनाए रखना और अपने काम को छोटे-छोटे लक्ष्यों मे बाँटना।

लेकिन मेरी समस्या तो ये है कि मुझे सबके सामने खड़े होते ही कुछ याद ही नहीं रहता, मैं कुछ बोल ही नहीं पाती।

चलो, आज पहले एक गतिविधि करके देखते हैं।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

इस यूनिट में विद्यार्थी आत्मविश्वास बनाए रखते हुए रास्ते में आने वाली चुनौतियों के बावजूद कार्य को पूरा करना सीखेंगे। यह करने के लिए विद्यार्थी निम्नलिखित क्षमताओं का अभ्यास करेंगे-

1. **कार्य को छोटे-छोटे चरणों/हिस्सों में बाँटना**
2. **गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना**
3. **प्रयास करते रहना**
4. **आत्मविश्वास बनाए रखना**

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि/कहानी	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट की शुरुआत	1 पीरियड	
गतिविधि अख़बार का पुल	2,3 पीरियड	• प्रयास करते रहना • गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना
कहानी अनोखी गज़ल	1,2 पीरियड	• आत्मविश्वास बनाए रखना • गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना • प्रयास करते रहना
गतिविधि मैं सक्षम हूँ	2,3 पीरियड	• कार्य को छोटे-छोटे लक्ष्यों/हिस्सों में बाँटना
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: श्रीकान्त बोला	1 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरुआत

- यूनिट की शुरुआत में दिए गए संवाद पर चर्चा करें और विद्यार्थियों से उनके ऐसे अनुभवों के बारे में पूछें जहाँ उन्होनें किसी असंभव लग रहे काम को शुरू किया और उसे पूरा कर पाए।
- इस चर्चा के अंत में विद्यार्थियों को बताएँ कि आने वाले कुछ दिनों में ऐसे ही कुछ चुनौती भरे कामों में हिस्सा लेंगे और अपने आत्मविश्वास को परखेंगे।

गतिविधि 1.1 अख़बार का पुल

परिचय

अभी हम कुछ ऐसा करेंगे जिसे आप में से कुछ विद्यार्थी पहली बार कर रहे हों और उन्हें हो सकता है उसे शुरू करने में परेशानी आए, पर हम बिना रुके आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे।

सामग्री:

- पुराने अख़बार (3 डबल शीट हर समूह के लिए)

(यहाँ फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को रद्दी अख़बार लाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं अन्यथा फ़ैसिलिटेटर स्वयं इनका प्रावधान करेंगे।

अनुमानित समय: 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य: 5-6 विद्यार्थियों का समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे):

- प्रयास करते रहना
- गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- सभी विद्यार्थियों को गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
- गतिविधि के दौरान कक्षा में उथल-पुथल होगी। पुल न बनने की स्थिति में विद्यार्थी परेशान हो सकते हैं। यह स्वाभाविक है।

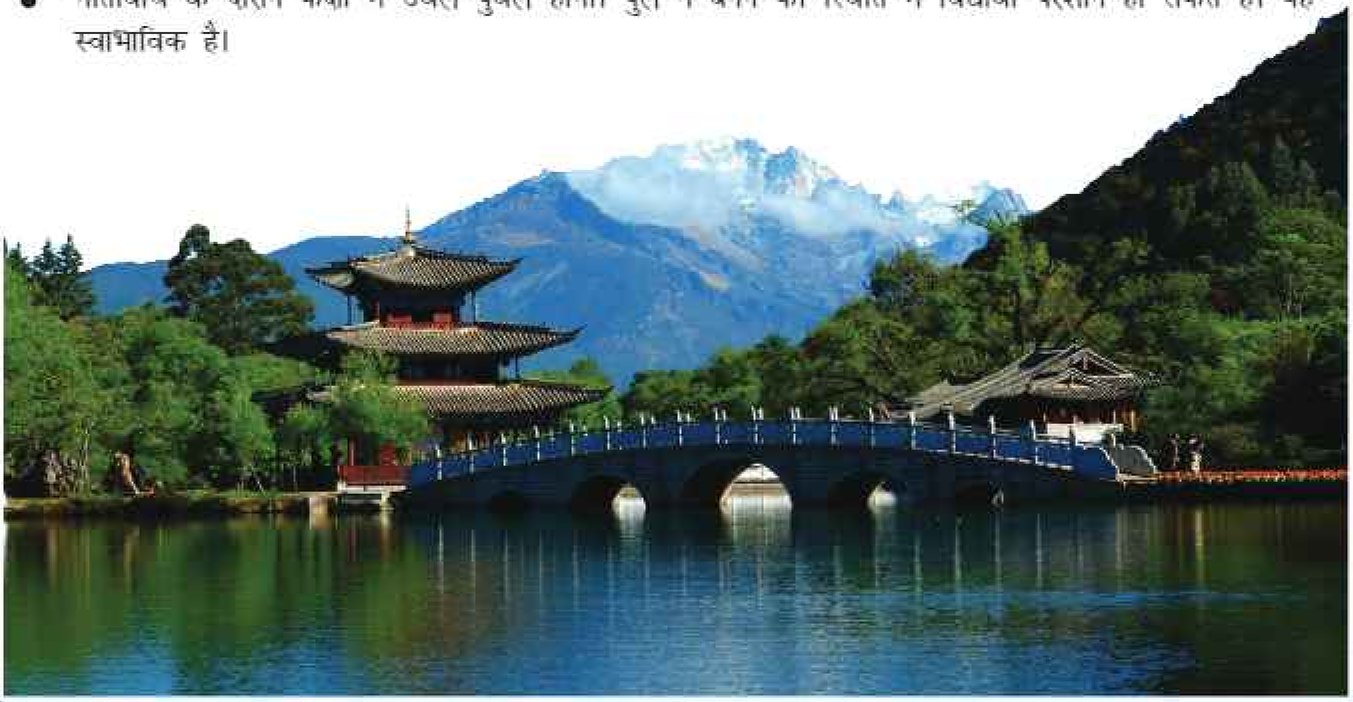

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- 5-6 विद्यार्थियों का समूह बनाएँ और प्रत्येक समूह को अख़बार की 3 डबल शीट दें।
- प्रत्येक समूह 2 डेस्कों के बीच में अख़बार का एक ऐसा पुल बनाएगा जो ज़्यादा से ज़्यादा वस्तुओं (पेन/पेंसिल/स्केल आदि) का वज़न उठा सके।
- 2 डेस्कों के बीच में कम से कम 2 फुट की दूरी होनी चाहिए।
- पुल बन जाने के बाद, विद्यार्थी पुल पर अलग-अलग वस्तुएँ रख कर उसकी मजबूती को परखेंगे और ज़्यादा से ज़्यादा वस्तुएँ उस पर रखने की कोशिश करेंगे।
- अंत में सभी समूह कक्षा में बाकी समूह के द्वारा बनाए गए पुलों को भी देखेंगे और आपस में एक-दूसरे समूह के पुल निर्माण की प्रक्रिया को समझेंगे और उनकी कार्यनीति के बारे में जानेंगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

विद्यार्थियों को अपने-अपने समूहों में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए कहें-

- शुरूआत में, जब आपको कहा गया कि अख़बार का पुल बनाना है, तो आपके मन में किस तरह के विचार आ रहे थे?
- इस गतिविधि में निर्माण के समय और वज़न रखते समय जब चुनौतियाँ आईं, तो आपने क्या अलग किया?
- ऐसी घटना याद करें जब आप किसी काम को लेकर असहज महसूस कर रहे थे, उस असहजता का कारण क्या था तथा उस काम को आप कैसे पूरा कर पाए?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद हर समूह से कुछ विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ अपने अनुभव को साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

अब विद्यार्थियों को अपने समूह में अपने जीवन से संबंधित ऐसे 5-6 कार्यों की सूची बनाने को कहें जो उन्हें लगते हैं कि वो नहीं कर पाएँगे? (इसके लिए विद्यार्थी EMC पत्रिका/कॉपी का प्रयोग कर सकते हैं।)

उन्हें बताएँ कि इस सूची पर हम यूनिट के अंत में दोबारा चर्चा करेंगे।

कुछ कार्यों के बारे में सुनते ही ऐसा लगने लगता है कि ये तो हो ही नहीं सकते हैं। ऐसे में अगर हम आत्मविश्वास के साथ उस कार्य की शुरुआत करें और उसे करते समय हो रही गलतियों से सीखते हुए लगातार प्रयास करते रहें तो वही कार्य बेहतरीन तरीके से पूरा हो सकता है।

कहानी 1.2 अनोखी ग़ज़ल

परिचय

अख़बार का पुल गतिविधि करके हमने देखा कई जो काम हमें शुरू में मुश्किल लग रहा था, उसे भी हम सफलता से पूरा कर पाएँ। हमारे जीवन में कई तरह की चुनौतियाँ आती हैं। इस चुनौतियों से हम अपने आत्मविश्वास के बल पर जूझते हुए अपने सपनों को पूरा करने का लगातार प्रयास करते रहते हैं।

(कक्षा में रोल-प्ले की पूर्व-तैयारी के लिए फ़ैसिलिटेटर इच्छुक विद्यार्थियों के साथ ये साझा कर सकते हैं।)

बताओ बच्चों, 'अख़बार का पुल' गतिविधि कैसी लगी?

विद्यार्थी जवाब देंगे।

सर गतिविधि तो बहुत अच्छी थी लेकिन...

अच्छा, अभी भी प्रिया की समस्या का समाधान नहीं निकला है।

हम्म! चलो ठीक है, आज एक कहानी सुनते हैं। कहानी एक ऐसी लड़की की, जिसने कभी हार नहीं मानी। रास्ता चाहे कितना भी कठिन क्यों ना हो वो आत्मविश्वास के साथ लगातार प्रयास करते हुए उस पर आगे बढ़ती रही।

अनुमानित समयः 1-2 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- आत्मविश्वास बनाए रखना
- गलतियों से सीख कर आगे बढ़ना
- प्रयास करते रहना

यह कहानी है पंजाब-हरियाणा क्षेत्र में रह रहे एक साधारण से संयुक्त परिवार में पली बढ़ी लड़की की, जिसने स्थानीय स्कूल से अपनी पढ़ाई की और पंजाब यूनिवर्सिटी से बी.सी.ए. (Bachelors in Computer Application) की डिग्री ली। उसमें बचपन से ही कुछ हासिल करने की ललक थी।

उन्होंने 2008 में NIIT Ltd में बतौर कॉर्पोरेट ट्रेनर अपना करियर शुरू किया। कुछ साल काम करने के बाद dietexpert-in के नाम से अपना खुद का स्टार्ट-अप शुरू किया। हालाँकि इसमें उन्हें ख़ास सफलता नहीं मिली, जिसके बाद उन्होंने 'बीइंग आर्टी' में एक कलाकार के रूप में भी काम किया। अपने करियर की शुरुआत में बार-बार असफलताओं का सामना करने के बावजूद, वह बिना कोई कदम पीछे हटाए आगे बढ़ती रही। वह **निरंतर प्रयास करती रही** और हर बार एक नए जोश और उत्साह के साथ शुरुआत करती रही।

लेकिन अगला चैलेंज उनकी लाइफ में तब आया जब वह शादी के बाद पहली बार माँ बनी। उनके 6 महीने के बेटे को कोई भी बेबी प्रॉडक्ट प्रयोग करते ही स्किन-एलर्जी होने लगती थी। कई अलग-अलग प्रॉडक्ट्स प्रयोग करने के बाद उन्होंने विदेश से मँगवाए हुए प्रॉडक्ट प्रयोग किए, जो बच्चे के लिए अनुकूल/सही साबित हुए। इस बात से वह बहुत हैरान थी कि बच्चे के लिए भारतीय-प्रॉडक्ट की जगह विदेश से मँगवाए गए प्रॉडक्ट अनुकूल थे। इस घटना ने उन्हें यह सोचने के लिए मजबूर किया कि ऐसा क्या कारण है, जिससे भारतीय-प्रॉडक्ट बच्चे के लिए अनुकूल नहीं थे? उन्हें इन सबका ज्ञान नहीं था परंतु मन में लगन थी **कुछ करने की**। उन्होंने अपने पति की मदद से शोध (रिसर्च) करना शुरू किया और पता लगाया कि ऐसे 1200 तरह के रसायन होते हैं जो बच्चों कि त्वचा के लिए सही नहीं हैं और जाने-अनजाने में ही सही, ना जाने कितने माँ-बाप अपने बच्चों के लिए यहीं प्रॉडक्ट प्रयोग करते हैं।

फिर क्या था, वो निकल पड़ी एक ऐसी डगर पर, जिसके बारे में उन्होंने ना पहले कभी सोचा था और ना ही पढ़ा था। इसमें उनका साथ दिया उनके पति वरुण अलघ ने। उन्होंने कई कंपनियों से बात की और गहन शोध किया ताकि यह जान सके कि क्या हम भारत में ही अपने बच्चों के लिए रसायन-मुक्त प्रॉडक्टों का निर्माण कैसे कर सकते हैं। ये सब उनके लिए नया भी था और चुनौतीपूर्ण भी। लेकिन उनके मन में बस एक ही भाव था कि हमें अपने बच्चों (भारतीय) के लिए **ये करना ही है** और **"मैं कर सकती हूँ"**।

अपने अथक प्रयासों के बाद, उन्होंने 6 प्रॉडक्टस के साथ लॉन्च किया अपना नया वेंचर, अपना खुद का ब्रांड- mamaearth जी हाँ, ये कहानी है उन्हीं जाने-माने ब्रांड की मालकिन **गज़ल अलघ** की। ब्रांड लॉन्च के बाद उनका अगला और महत्त्वपूर्ण कदम था रिव्यू और फीडबैक, जिसके लिए उन्होंने अपने सभी दोस्तों को अपने प्रॉडक्टस प्रयोग करने को दिए और उनके फीडबैक को ध्यान में रखते हुए सुधार किए। इस प्रकार काम करते हुए 6

प्रॉडक्टस से शुरुआत करने वाली ये कंपनी धीरे-धीरे 200 से ज़्यादा प्रॉडक्टस बनाने वाला फैमिली ब्रांड बन चुकी है। एक कॉर्पोरेट-ट्रेनर के तौर पर करियर की शुरुआत करने वाली साधारण-सी लड़की, जो आज **अपने आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास** से 24000 करोड़ की कंपनी को संभालने वाली देश की एक सफल महिला आंत्रप्रेन्योर है और जिनकी कंपनी को हाल ही में **यूनिकॉर्न** का रुतबा हासिल हुआ है। इस लेवल पर अभी तक देश की मात्र 5 महिलाएँ ही हैं। गज़ल अलघ मशहूर टीवी सीरियल 'शार्क-टैंक' इंडिया में बतौर जज भी देखी जा चुकी है।

चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

नीचे दिए हुए प्रश्नों की चर्चा पूरी कक्षा में एक बड़े समूह में होगी–

- कहानी सुनने के बाद आपके मन में पहला विचार क्या आया?
- आपके अनुसार गज़ल ने किन-किन चुनौतियों का सामना किया और उनके समाधान के लिए क्या-क्या कदम उठाए?
- सूची बनाएँ कि एक विद्यार्थी के तौर पर आपके सामने क्या-क्या समस्याएँ आती हैं और बनाई गई सूची में से किसी एक समस्या को हल करने के लिए आप क्या कर सकते हैं, इसके लिए योजना तैयार करें?

चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

यह चर्चा विद्यार्थी पहले 5-6 के समूह में करेंगे और उसके बाद किन्हीं 2-3 विद्यार्थियों को पूरी क्लास में साझा करने के लिए कहें)

गज़ल अलघ की कहानी पर चर्चा के बाद विद्यार्थी अपने वास्तविक जीवन के बारे में सोचते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार-विमर्श कर पाने योग्य होंगे:

समस्या की पहचान (identifying the problem) → **आवश्यकता (need)** → **अभाव/अंतर/अंतराल को पहचानना** → **चिंतनीय पहलु (reflection)**

चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

(कक्षा में रोल-प्ले की पूर्व-तैयारी के लिए फ़ैसिलिटेटर इच्छुक विद्यार्थियों के साथ ये साझा कर सकते हैं।)

इस कहानी और चर्चा के माध्यम से हमने जाना कि चुनौतियों का सामना करने में आत्मविश्वास का कितना महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

हाँ सर, अब जब भी कभी ऐसा लगेगा कि बहुत प्रयासों के बाद भी आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं और हिम्मत हार रहे हैं तो गज़ल अलघ और उनके जैसे लोगों से प्रेरणा लेते हुए यहीं सोचेंगे कि **"मैं कर सकता/सकती हूँ"**।

सर, गज़ल अलघ की कहानी सच में बहुत प्रभावी है, कैसे उन्होंने एक नया क्षेत्र (फील्ड) होते हुए भी अपने प्रयास और आत्मविश्वास के साथ अपना सपना सच कर दिखाया।

लेकिन हम तो अभी स्टूडेंट्स हैं, तो क्या हम भी अपनी डेली लाइफ में ऐसा कर सकते हैं?

हम्म! चलो, ये प्रयास भी करके देख लेते हैं। क्या आप सभी भी अपने जीवन में रोजाना आने वाली चुनौतियों को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बाँट कर हल कर सकते हैं या नहीं?

गतिविधि 1:3 मैं सक्षम हूँ

परिचयः

गज़ल अलघ की कहानी से हमें प्रेरणा मिली कि कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों न हो, आत्मविश्वास से आगे बढ़कर हम उसका सामना कर सकते हैं। आइए, अब हम भी उनसे प्रेरणा लेते हुए हमेशा से ही कठिन लगने वाले कार्यों को पहचाने और पूरा करने के तरीके सोचने की कोशिश करें।

सामग्री

- कागज़, पेन

अनुमानित समयः 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 5-6 विद्यार्थियों का समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- कार्य को छोटे-छोटे लक्ष्यों/हिस्सों में बाँटना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- चुनौतियाँ चुनते समय ध्यान रहे कि वे विद्यार्थी के जीवन से सीधे तौर पर जुड़ी हों।
- प्रस्तुति के दौरान ध्यान रखें कि विद्यार्थी एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

- विद्यार्थियों को 5-6 के समूहों में बाँटें।
- प्रत्येक समूह को नीचे दी गई चुनौतियों में से किसी एक को चुनने को कहें–
  - मेरा प्रोजेक्ट कभी भी समय पर पूरा नहीं होता।
  - कक्षा में किसी प्रोजेक्ट का प्रस्तुतीकरण।
  - सभा में भाषण ना दे पाना।
  - करिअर-एक्सप्लोरशन में इंटरव्यू ना ले पाना।
  - अपने माता-पिता को आउट स्टेशन टूर/बिज़नेस-ब्लास्टर में मार्केट-सर्वे के लिए मनाने में कठिनाई होना।
- प्रत्येक समूह को, चुनी हुई चुनौती का सामना करने हेतु नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर तैयार करके EMC कॉपी में लिखने के लिए कहें (समय: 10 मिनट)
  - चयनित चुनौती को पूरा करने के लिए मुझे इसे कौन-कौन से **छोटे-छोटे कार्यों/चरणों में बाँटना** होगा?
  - इन **कार्यों/चरणों को कैसे पूरा किया** जाएगा?
  - इन कार्यों/चरणों को पूरा करने में मुझे **कौन-कौन मदद कर सकता** है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद बड़े समूह में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करें–

1. चुने हुए कार्य को छोटे-छोटे कार्यों/चरणों में बाँटने से चुनौती पूरी कर पाने में कैसे मदद मिली?
2. इस गतिविधि द्वारा चुनौती का सामना करने पर आपको कैसा महसूस हो रहा है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

चिंतन एवं चर्चा के बाद प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में की गई चर्चा की प्रस्तुति करेगा। (अनुमानित समय 1 मिनट)

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को योजना बनाने के लिए बधाई दें और इसका पालन करके कार्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करें। हम अपने आत्मविश्वास के बल पर छोटे-छोटे कदम सोच कर किसी भी मुश्किल काम को करने की शुरुआत कर सकते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

- 'मैं कर सकता/सकती हूँ' की यूनिट की गतिविधियाँ से आपने क्या सीखा?
- यदि आपको लगे कि आपसे कोई कार्य नहीं हो पाएगा तो आप क्या करेंगे? उदाहरण देकर बताएँ।
- आपने प्रथम गतिविधि के समय ऐसे 5–6 कार्यों की सूची तैयार की थी जो आपके अनुसार आप नहीं कर सकते थे, उनके प्रति अब आपके क्या विचार हैं?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

(The facilitator may share this role play prior with the interested students.)

तो बच्चों, दैनिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और कई बार हम कार्य अधूरा छोड़ देते हैं। 'अख़बार का पुल' बनाते हुए हमने सीखा कि खुद पर **विश्वास रखते हुए** और **लगातार प्रयास करने** से सफलता मिल सकती है।

जी, सर। 'गज़ल अलघ' की कहानी से प्रेरणा ली कि कितनी भी बड़ी चुनौती क्यों न हो, **आत्मविश्वास के साथ** आगे बढ़कर हम उसका सामना कर सकते हैं।

इसके साथ ही 'मैं सक्षम हूँ' गतिविधि से जाना कि हमारे जीवन में कई मुश्किल कार्य ऐसे हैं जिन्हें एक ही बार में पूरा करना संभव नहीं लगता। इसलिए, हम छोटे-छोटे कदम लेकर ऐसे कार्य को पूरा करने की कोशिश करेंगे।

बहुत बढ़िया। तो अब तुम सभी मानते हो कि इस कौशलों को अच्छे से समझ और प्रयोग करके हम कैसे सफलता की तरफ कदम बढ़ा सकते हैं। बल्कि इससे हमारे EMC के अलग-अलग कम्पोनन्टस् जैसे करियर-एक्सप्लोरैशन, बिज़नेस-ब्लास्टर, LEI, स्टूडेंट्स-स्पेशल में भी हमारे प्रेज़ेंटेशन में बहुत सुधार हो जाता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

फ़ैसिलिटेटर नीचे दी गई कहानी को कक्षा में पढ़कर सुनाएँ और विद्यार्थियों को इन सम्माननीय व्यक्तित्व के बारे में और ज़्यादा खोजने और जानने के बारे में कहें।

रीड टू लीड

श्रीकान्त बोल्ला

बोल्लांट इंडस्ट्रीज के संस्थापक श्रीकांत बोल्ला जन्म से ही नहीं देख पाते थे। हैदराबाद में नेत्रहीन बच्चों के देवनार स्कूल ई अच्छे अंक प्राप्त करने के बावजूद, इन्हें 10-12वीं कक्षा में विज्ञान पढ़ने से रोक दिया गया। लेकिन श्रीकांत बोल्ला ने हार नहीं मानी। अपने इसी विश्वास के साथ कि **"मैं कर सकता हूँ"** और माता-पिता की सहायता से वे कोर्ट पहुँच गए। कोर्ट ने श्रीकांत को विज्ञान पढ़ने का मौका दिलवाया। आगे की पढ़ाई के लिए भी इन्हीं सब कारणों से जूझते हुए इनका दाखिला देश के किसी प्रसिद्ध संस्थान में नहीं हुआ। लेकिन अपनी **इच्छाशक्ति** और **निरंतर प्रयासों** के कारण श्रीकांत ने दुनिया के एक श्रेष्ठ इंजीनियरिंग कॉलेज 'MIT', अमरीका से अपनी उच्च शिक्षा पूरा की।

श्रीकान्त बोल्ला

सन् 2012 में, कुछ पूँजी इकट्ठा करके उन्होंने अपने ही जैसे दिव्यांग साथियों को मौका देने के लिए बोल्लांट इंडस्ट्रीज की शुरूआत की, जहाँ रिसाइकल्ड कागज़ और पत्तों से सामान बनाने का काम किया जाता है। 2012 में अपनी स्थापना के बाद से, कंपनी प्रति माह 20% की दर से बढ़ रही है और 2015 से 2019 तक वार्षिक वृद्धि दर 107% रही है। इनका लक्ष्य 2025 तक **यूनिकॉर्न** बनना है, अतः यह इंडस्ट्री वर्तमान में **गज़ेल** की श्रेणी में आती हैं।

साथ ही उन्होंने दिव्यांग बच्चों के लिए 'समन्वय' नाम का एक स्कूल भी खोला है, जहाँ हर बच्चा अपनी शारीरिक चुनौतियों से ऊपर उठकर **आत्मविश्वास** के साथ, अपनी क्षमताओं के बल पर, सपनों को पंख देने में सक्षम बन सके। श्रीकान्त बोल्ला की लगन और मेहनत की वजह से इन्हें कई सम्मान भी मिले हैं।

यूनिट 02

प्रभावी संचार

R2W9I6

यूनिट का परिचय

लोगों के एक बड़े समूह के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करने के लिए क्या किया जा सकता है?

कुछ विद्यार्थियों को जवाब देने के लिए बुलाएँ।

यहाँ लोगों के एक बड़े समूह तक अपनी बात पहुँचाने के लिए अलग-अलग तरीके बताएँ गए हैं। लेकिन इन तरीकों से भी ज्यादा ज़रूरी है अपनी बात को प्रभावी ढंग से कहना ताकि हम सामने वाले को अपनी बात समझा सकें। कक्षा में, हम विद्यार्थियों से चर्चा, वाद-विवाद, भाषण या आशुभाषण जैसी गतिविधियाँ करने के लिए कहते हैं; मुख्य उद्देश्य उन्हें अपने विचारों को अच्छी तरह से व्यक्त करने में सक्षम बनाना है। यह आज के समय की माँग भी है। किसी भी समस्या को सुलझाने के लिए या मिलकर सोचने के लिए प्रभावी संचार/बातचीत अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि सभी को उसके अनुसार समझाया जा सके।

क्या सीखेंगे (उद्देश्य)

अब तक हमने प्रभावी संचार की बुनियादी बातों को जाना है– ध्यान से सुनना, खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना और आम सहमति बनाना। इस यूनिट में, विद्यार्थी ऊपर बताएँ गए कौशलों का अभ्यास करते हुए दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता भी विकसित करेंगे। किसी व्यक्ति को सकारात्मक और प्रभावी ढंग से प्रभावित करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थी निम्नलिखित क्षमताओं को समझें और सीखें–

1. **तर्क व प्रमाण देकर अपनी बात स्पष्ट करना।**
2. **दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना।**
3. **अपनी बात को क्रमबद्ध और अच्छे तरीके से रख पाना।**
4. **दूसरों को किसी वस्तु या मुद्दे का महत्व समझा पाना**

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि का नाम	अनुमानित पीरियड	क्या सीखेंगे (उद्देश्य)
यूनिट की शुरुआत	1 पीरियड	
गतिविधि ऐड-मैड	2 पीरियड	• दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना। • अपनी बात को क्रमबद्ध और अच्छे तरीके से रख पाना।
कहानी पहचान के लिए आवाज़	2-3 पीरियड	• तर्क व प्रमाण देकर अपनी बात स्पष्ट करना। • दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना।
गतिविधि क्या तुम मुझे मना सकते हैं?	2-3 पीरियड	• अपनी बात को क्रमबद्ध और अच्छे तरीके से रख पाना। • दूसरों को किसी वस्तु या मुद्दे का महत्व समझा पाना।
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: संदीप माहेश्वरी	1 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरुआत

फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों से एक प्लेन पेपर निकालने और बाकी चीज़ें अलग रखने के लिए कहेंगे।

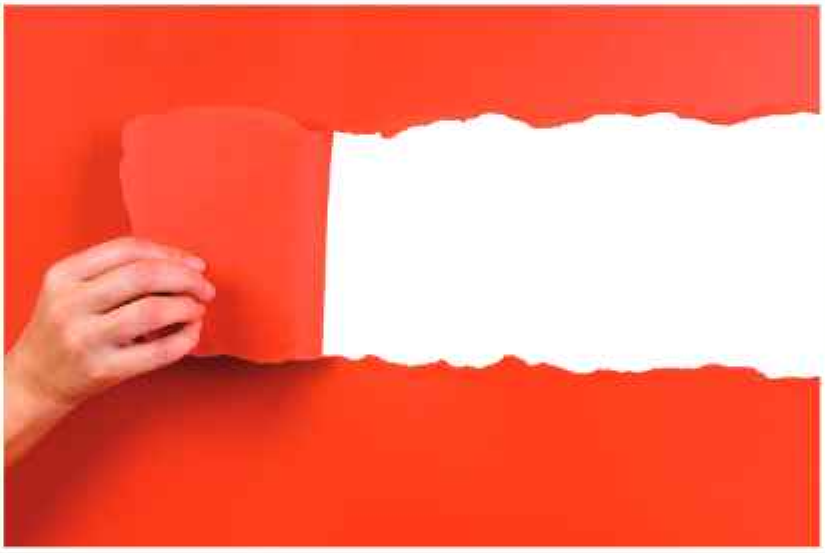

अब विद्यार्थियों को अपनी आंखें बंद करने और शांत मन से दिए गए निर्देशों का पालन करने के लिए कहें।

निर्देश:

- अपने कागज़ को मोड़ो और कोने से फाड़ दो।
- एक और तह बनाएँ और फिर से किनारे से फाड़ दें।
- अब कागज़ की तीसरी तह बनाएँ और फिर कागज़ को किनारे से फाड़ दें।
- अब अपनी आँखें खोलें और अपने आस-पास के अन्य विद्यार्थियों के साथ पेपर की तुलना करें और देखें कि क्या सभी के पेपर का डिज़ाइन एक जैसा है या किसी का डिज़ाइन अलग है?

निश्चित रूप से, कक्षा में कई तरह के डिज़ाइन बने होंगे। कुछ विद्यार्थियों से इसके पीछे के संभावित कारणों के बारे में पूछें।

इस गतिविधि में, यदि स्पष्ट निर्देश दिए गए होते यानी मोड़ने और फाड़ने के चरण दिए गए होते, तो विद्यार्थी इसे बेहतर ढंग से समझ पाते और लगभग समान डिज़ाइन बनाते।

गतिविधि 2.1 एड-मैड

परिचय

लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं, लेकिन इससे यह पता नहीं चल पाता कि सामने वाला व्यक्ति कितना प्रभावित हुआ है। इसके लिए ज़रूरी है कि हम न सिर्फ तथ्यों की जानकारी दें बल्कि दूसरों के साथ भावनात्मक रिश्ता भी बनाने की कोशिश करें।

आवश्यक सामग्रीः कागज़ एवं पेन

समयः 2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 4 का समूह

क्या सीखेंगे (उद्देश्य):

- दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना।
- अपनी बात को एक क्रमबद्ध तरीके से रख पाना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- ऐसी वस्तुओं या मुद्दों का चयन करें जिन पर सभी आसानी से सहमत न होते हों।
- खाने-पीने या साबुन जैसी चीज़ों के विज्ञापनों से बचने की कोशिश करें।

- विद्यार्थियों के 4-4 के समूह बना दें।
- यह गतिविधि दो चरणों में की जाएगी।

  1. प्रस्तुति (प्रेजेंटेशन) तैयार करना
  2. तैयार की गई प्रेजेंटेशन को क्लास में प्रेजेंट करना

1. प्रेजेंटेशन तैयार करना-

- सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूह में अपने पसंदीदा विज्ञापनों, उसकी विशेषताओं को याद करेंगे और चर्चा करेंगे कि इसे कैसे तैयार किया गया है। (अनुमानित समय– 2 मिनट)
- समूह को एक मुद्दा/विषय चुनने के लिए कहें (उदाहरण के लिए, पानी की बचत/सौर ऊर्जा का उपयोग।
- विद्यार्थियों से अपने समूह में चुने गए मुद्दे पर 1 मिनट का विज्ञापन बनाने के लिए कहें।
- एक लिखित कार्य-योजना (planning) तैयार करें और इसे प्रभावशाली बनाने और कक्षा में रचनात्मक रूप (creatively) से प्रस्तुत करने के लिए गाने, धुन, चित्र, रोल प्ले आदि का उपयोग करें। (अनुमानित समय: 15-20 मिनट)
- विज्ञापन तैयार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें–

लक्षित समूह (target-group)	आयु समूह (age-group), जेंडर, संस्कृति, सोच, शिक्षा का स्तर
रचनात्मकता (Creativity)	आकर्षक, पूरी जानकारी, मिल सके, भावनात्मक
उद्देश्य (Objective)	ग्राहक की समस्या का समाधान करने में सक्षम होना। ग्राहकों को उत्पाद या सेवा के लाभ समझाने के योग्य होना।
भावनाओं पर आधारित विज्ञापन (Emotion-based advertising)	ग्राहक विज्ञापन से भावनात्मक रूप से जुड़ने में सफल रहे।
महत्वपूर्ण बिन्दु (Important-points)	विशेषताएँ जैसे– ग्राहक को प्रॉडक्ट से कैसे लाभ होगा, प्रॉडक्ट में क्या अलग और खास है।
ग्राहक से आशाएँ (Expectation from customer)	ग्राहक वस्तु खरीदेगा; या किसी मुद्दे के प्रति उसका नज़रिया बदल जाएगा।

होमवर्कः यदि विद्यार्थी विज्ञापन को कक्षा में पूरा नहीं कर पाएँ तो स्कूल के बाद घर से भी बचे हुए काम को पूरा कर सकते हैं।

2. कक्षा प्रेजेंटेशनः

- एक बार विज्ञापन तैयार हो जाने पर, सभी समूह अपना विज्ञापन पूरी कक्षा में प्रेजेंट करेंगे और एक-दूसरे समूह को फीडबैक देंगे। प्रेजेंट करने के लिए प्रत्येक समूह को 5 मिनट का समय दें।
- अन्य समूहों को फीडबैक देने के लिए कहें।

फीडबैक देने के लिए नीचे कुछ बिंदु दिए गए हैं, उन्हें बोर्ड पर लिखें। (विद्यार्थी इन बिंदुओं के आधार पर फीडबैक अपने EMC जर्नल या कॉपी में भी लिख सकते हैं।)

1. क्या ग्राहक को विज्ञापन से अपना फायदा दिख रहा है?
2. क्या ग्राहक को चुनी गई वस्तु या मुद्दे की खास बातें समझ आ रही हैं?
3. विज्ञापन देखने के बाद ग्राहक को कुछ करने की प्रेरणा मिल रही है? क्या वह अपनी कोई आदत या नज़रिया बदलने के लिए तैयार होगा?

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद निम्नलिखित वाक्यों को बोर्ड पर लिखें। व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थियों को उन पर सोचने और उन्हें पूरा करने को कहें–

विद्यार्थियों को एक-दूसरे को प्रभावी ढंग से किसी बात/वस्तु के लिए मनाने या उनका नज़रिया बदलने के बारे में EMC पत्रिका/कॉपी में लिखने के लिए कहें–

1. इनमें से आपका पसंदीदा विज्ञापन कौन-सा है? विज्ञापन में आपके लिए क्या खास था और वही विज्ञापन आपको क्यों याद है?
2. आपके अनुसार सामने वाले व्यक्ति से अनुमति लेने या उसे अपनी बात मनवाने के लिए आवश्यक बिंदु/तथ्य क्या हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

कुछ विद्यार्थियों को कक्षा के सामने अपने विचार साझा करने के लिए बुलाएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

तथ्यों और भावनाओं दोनों का बराबर ध्यान रखते हुए हम अपनी बात ज़्यादा प्रभावी रूप से लोगों तक पहुँचाने में सफल हो सकते हैं। इसके लिए ज़रूरी है कि हम अपनी बात **योजनाबद्ध और क्रमबद्ध** तरीके से लोगों के सामने रखें। आप अपने पसंदीदा विज्ञापनों के बारे में अब फिर से सोचिए और देखिए वे किस तरह से अपनी बात रखते हैं– क्या आप उनसे **भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ** महसूस करते हैं और आपको उनमें दी गई वस्तुओं से संबंधित खास बातों/विशेष सुविधाओं की जानकारी भी मिलती है?

कहानी 2.2 पहचान के लिए आवाज़

परिचय

एड-मैड गतिविधि में हमने देखा कि कैसे अपनी बात को **क्रमबद्ध और अच्छे तरीके** से रखा जाए और दूसरों को उसके फायदे समझाकर अपनी बात मनवाई जाए। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए एक कहानी सुनते हैं। इससे हमें संचार कौशल की अन्य क्षमताएँ सीखने में मदद मिलेगी।

कहानी शुरू करने से पहले, फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों से निम्नलिखित प्रश्न पूछते हैं और उनकी प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करने के बाद कहानी को आगे बढ़ाते हैं–

- क्या आपने कभी अपने दोस्तों को कुछ गलत करने से रोका है? यदि हाँ, तो आपने ऐसा कैसे किया?
- क्या आपने कभी अपने हक के लिए आवाज़ उठाई है? आपने कैसा महसूस किया?

अनुमानित समयः 2–3 पीरियड

क्या सीखेंगे (उद्देश्य):

- अपनी बात को तर्क एवं प्रमाण देकर स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाना।
- दूसरों की भावनाओं से जुड़ पाना।

मुंबई शहर के शोरगुल और भागदौड़ भरे माहौल में, जहाँ एक तरफ जीवन का ताना-बाना बुना जा रहा था वहीं एक ऐसी कहानी भी पनप रही थी जो सामान्य से थोड़ा अलग थी। यह कहानी है, ट्रांसजेंडर समुदाय की सदस्य और समाज में अपने वाक्य-कौशल और दृढ़-निश्चय से अपनी खास जगह बनाने वाली गौरी सावंत की।

गौरी सावंत

गौरी का जन्म पुणे के एक मराठी परिवार में हुआ था। उनका प्रारंभिक नाम 'गणेश नंदन' था। बेटी के बाद बेटे के जन्म से पूरा परिवार बेहद खुश था। लेकिन, समय के साथ अपने बदलते व्यक्तित्व के कारण गणेश को हमेशा अपने परिवार की नाराजगी और समाज में मजाक का केंद्र बनना पड़ा। लेकिन बढ़ती उम्र के साथ उन्हें यह भी समझ आ गया कि अगर उन्हें खुद को साबित करना है तो पढ़ाई करना और अपनी पर्सनैलिटी में सुधार करना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए उन्होंने लगन से पढ़ाई की और अपने हुनर को निखारा।

उन्होंने मुंबई आकर आगे बढ़ने का फैसला किया जहाँ उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ आजीविका के लिए एक एनजीओ में काम पड़ा। लेकिन समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों के साथ उपेक्षित व्यवहार देखकर वह हैरान रह गईं। उन्होंने इस स्थिति को बदलने का फैसला किया और इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है खुद में और आस-पास के लोगों में बदलाव लाना। इसलिए 2008 में, उन्होंने 'सखी चार चौघी' नाम से अपना खुद का N.G.O. शुरू किया, जहाँ ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि के बारे में जागरूक किया जाने लगा। शुरुआत में, कुछ समस्याएँ थीं लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के फायदे समझाकर सभी को मना लिया।

अब गौरी को जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर महसूस होता था कि समाज के अलावा कानून की नज़र में भी उनकी कोई अहमियत नहीं है। हर जगह उन्हें पुरुष या महिला में से किसी एक ऑप्शन को चुनना पड़ता था। सार्वजनिक स्थानों पर उनके लिए शौचालय की सुविधा भी नहीं थी। वह एक अनाथ लड़की को गोद लेना चाहती थी जिसकी उसे अनुमति नहीं दी गई, इसलिए 2014 में उसने अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। प्रभावी ढंग से अपनी बात रख पाने (सहानुभूतिपूर्ण ढंग से तथा तर्क व प्रमाण के साथ) के कारण जज सहित वहाँ उपस्थित सभी लोग उनकी बातों से भावनात्मक रूप से जुड़ सके तथा उन बातों की प्रासंगिकता (relevance) को भी समझ सके। और अंत में, पूरे समुदाय को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता देने का ऐतिहासिक फैसला किया गया। अब शिक्षा संबंधी कागज़ों से लेकर पहचान पत्र और पासपोर्ट तक हर चीज़ में उन्हें तीसरे लिंग के रूप में अलग जगह दी जा रही है। इसके बाद गौरी जी ने गायत्री नाम की एक लड़की को गोद लिया और उसके कानूनी तौर पर पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ली।

2015 में, उन्हें अपने काम और अपने अनुभव को साझा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र (United Nation) में भी आमंत्रित किया गया। वहाँ उन्होंने सरल और स्पष्ट शब्दों में लेकिन बेहद प्रभावशाली ढंग से अपने विचार व्यक्त किये। वह अपने अनुभवों और संघर्षों को साझा करके दर्शकों के साथ जुड़ पाई।

पिछले एक दशक में ट्रांसजेंडर समुदाय में जितने भी बदलाव हुए हैं, उनमें गौरी सावंत का बेहद अहम योगदान रहा है।

हाल ही में गौरी सावंत के जीवन पर आधारित 'ताली' नाम से एक वेब सीरीज भी बनाई गई है, जिसमें उनके वाक्-कौशल (speaking-skills) को बखूबी दिखाया गया है। 2016 में, टाइम पत्रिका ने उन्हें दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक के रूप में नामांकित किया। 2019 में, उन्हें महाराष्ट्र चुनाव आयोग द्वारा 'सदभावना राजदूत' (Goodwill Ambassador) के रूप में नियुक्त किया गया था।

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

1. कहानी में, गौरी सावंत ने दूसरों को समझाने के लिए प्रभावी संचार की कौन से कौशल/क्षमता को अपनाया और उसके क्या परिणाम रहा?
2. किसी संघर्ष या असहमति में, आप सकारात्मक संबंध (positive relationship) बनाए रखते हुए प्रभावी संचार की सहायता से सहमति तक कैसे पहुँच सकते हैं?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

हमारे सामने अक्सर ऐसे मुद्दे आएँगे जिनके प्रति समाज में लोगों के बहुत गहरे पूर्वाग्रह (prejudices/biases) होंगे। ऐसी स्थिति में उनके सामने हार मान जाना या निराश हो जाना एक सामान्य सी बात हो सकती है। लेकिन दूसरों को सकारात्मक (positive) रूप से प्रभावित करने के कई तरीके हो सकते हैं जैसे कि हमें धैर्य और लोगों के प्रति सहानुभूति (empathy) रखकर ऐसा कर सकते हैं।

गतिविधि 2.3 क्या तुम मुझे मना सकते हो?

परिचय

विज्ञापनों में अक्सर ये होता है कि हम सीधे अपने ग्राहकों से बात नहीं करते। टीवी, अख़बार आदि हमारा माध्यम बनते हैं। लेकिन कई बार हमें प्रत्यक्ष रूप से भी किसी को प्रभावित करने की जरूरत पड़ सकती है जैसे कि अभिभावकों को अपने पसंदीदा भविष्य के लिए, दोस्तों को कोई गलत काम करने से रोकने के लिए, वाद-विवाद में अपना तर्क रखने के लिए या अपने विचार के लिए समर्थन जुटाने के लिए। इस गतिविधि में अब हम प्रत्यक्ष रूप से किसी को मनाने के लिए pitch* तैयार करेंगे।

कक्षा दृश्य

नोटः फ़ैसिलिटेटर इस रोल-प्ले को पहले से ही कुछ विद्यार्थियों के साथ साझा कर सकते हैं।

बच्चों, हमने कहानी में देखा कि अपनी बात या विचार को सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत करने से उसकी प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

इसके अलावा आज हम पिचिंग का अभ्यास करेंगे।

सर, लेकिन हमने कल संचार कौशल पर काम किया, तो पिच का संचार कौशल से क्या लेना-देना है?

'पिच' शब्द के बारे में विद्यार्थियों की उलझन को देखते हुए, फ़ैसिलिटेटर समझ जाते हैं कि विद्यार्थियों ने संचार और पिच के बीच के संबंध को नहीं समझा है।)

ठीक है, बताओ तुम क्या सोचते हो पिच क्या है?

सर, पिच क्रिकेट में होती है।

पिच का संबंध ध्वनि से भी होता है, जैसे निम्न स्वर और उच्च स्वर।

(थोड़ा मुस्कुराते हुए) हाँ, यहाँ हम इन दोनों पिचों की बात नहीं कर रहे हैं।

(पिच का अर्थ समझाते हुए)

***पिच:** इस यूनिट के संदर्भ में, पिच का अर्थ है अपने विचारों को लोगों के साथ इस आशा में साझा करना कि वे उनसे सहमत हो जाएँ। इसके लिए 30 सेकंड-1 मिनट तक के समय को आदर्श माना जाता है।

आवश्यक सामग्री:

- पेपर व पेन

अनुमानित समय: 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य: 4 का समूह

क्या सीखेंगे (उद्देश्य)

- तर्क व प्रमाण देकर अपनी बात स्पष्ट कर पाना।
- दूसरों को किसी वस्तु या मुद्दे का महत्व समझा पाना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को विज्ञापन बनाते हुए सीखी हुई बातों को याद करने को कहें।
- भावनाओं के साथ अपनी बात रखने के लिए तर्क भी देने को कहें।
- अब तक प्रभावी संचार में सीखी गई क्षमताओं का उपयोग करने को कहें (खास करके उचित हाव-भाव और बॉडी-लैंग्वेज का उपयोग)।

- विद्यार्थियों को गतिविधि का नाम बताएँ और उन्हें 4 के समूह में बाँट दें।
- इस गतिविधि को करने के लिए समूह के किन्हीं 2 साथियों को निम्न में से एक मुद्दे पर 1 मिनट की पिच तैयार करने को कहें (तैयारी के लिए 10 मिनट का समय दें)।

Pitch के लिए मुद्दे

1. इस बार कक्षा परीक्षा में आपके दोस्त की परफॉर्मेंस बहुत ख़राब रही लेकिन वह इसमें सुधार करना चाहती/चाहता है। आप शिक्षक को समझाएंगे कि वह दोबारा परीक्षा देने की इच्छा रखती/रखता है और यह रणनीति भी समझाएंगे कि वह बेहतर तैयारी के साथ दोबारा परीक्षा की तैयारी कैसे करेगी/करेगा और अवसर का उपयोग कैसे करेगी/करेगा। आपको अपने शिक्षक को मनाना होगा।
2. स्कूल में बोर्ड के चलते कक्षा 9 से 12 तक का खेल पीरियड हटा दिया गया है। प्रिंसिपल और सभी शिक्षकों का मानना है कि इससे विद्यार्थियों को पढ़ाई पर फोकस करने में मदद मिलेगी। आपको प्रिंसिपल और सभी शिक्षकों को फिर से पीरियड शुरू करने के लिए मनाना होगा।
3. 12वीं के बाद माता-पिता को अपनी पसंद के विषय और कॉलेज में दाखिला लेने के लिए मनाना, भले ही इस बारे में उनकी पसंद और विचार आपसे अलग हों।

- मुद्दों के अनुसार, बाकी 2 साथियों को पिच सुनने वाले व्यक्ति की भूमिका निभाने के लिए कहें। उदाहरण के लिए, मित्र और शिक्षक (मुद्दा 1) या स्कूल स्टाफ (मुद्दा 2) या माता-पिता (मुद्दा 3)।
- प्रत्येक समूह कोई एक मुद्दा चुन सकता है। समूह के सभी चार सदस्यों को सामूहिक रूप से मुद्दे का चयन करना होता है।
- पिच तैयारी के लिए बिंदु (पिच देने वाले और सुनने वाले दोनों के साथ साझा करें।)
    - प्रारंभिक बिंदु– आपका उद्देश्य क्या है?
    - इसके लिए आपके क्या तर्क हैं?
    - आपके तर्क का समर्थन करने के लिए सबूत या उदाहरण क्या है?
    - मुख्य बिंदुओं का सारांश।
- अब प्रत्येक समूह को निम्नलिखित (बिंदुओं पर) फीडबैक लिखने के लिए कहें (फीडबैक देने का समय 1 मिनट होगा)
- फीडबैक के लिए बोर्ड पर FCAS (Feel, Clarify, Appreciate, Suggest) लिखें।

1. **Feel:** पिच देना/सुनना विज्ञापन बनाने या देखने से कैसे अलग है?
2. **Clarify:** पिच देते/सुनते समय मेरे क्या सवाल हैं?
3. **Appreciate:** पिच की कौन-सी बातें मुझे सबसे अच्छी लगीं?
4. **Suggest:** पिच में कौन-सी 2 चीज़ों को और भी सुधारा जा सकता है?

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

गतिविधि के बाद प्रत्येक समूह के सदस्यों को निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा करनी है– (10 मिनट का समय दिया जाना चाहिए)

- यदि आपको सोचने और तैयारी करने के लिए 2 मिनट का समय दिया जाए, तो आप अपनी पिचिंग/फीडबैक के किन बिंदुओं को बदलना चाहेंगे और क्यों?
- पिचिंग/फीडबैक देते समय आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? और सामने वाले को अपनी बात समझाने के लिए किन बिंदुओं का ध्यान रखा गया?
- आपके अनुसार, अपने विचारों को प्रभावी ढंग से समझा पाने में सक्षम होने से हमें अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन (स्कूली जीवन) में कैसे मदद मिलेगी?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह को अपने-अपने फीडबैक से 2 समान बिन्दु और 2 सीखने वाली बातें (takeaways) सबके साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

प्रत्यक्ष रूप से किसी को प्रभावित करने में **तर्क और प्रमाण** लोगों को ठोस कारण देते हैं कि वे आपकी बात पर ध्यान दें। इसके साथ ही **प्रभावी संचार** की क्षमताएँ सामने वाले तक हमारे इरादे के प्रति हमारी निष्ठा को पहुँचने में मदद करती हैं। और किसी का विश्वास हासिल करने के लिए ये दोनों ही ज़रूरी हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

1. क्या आपके आस-पास भी कोई ऐसा मुद्दा है, जिसके लिए आप दूसरों को सकारात्मक (positive) रूप से प्रभावित कर सकते हैं?
2. इस यूनिट में कौन-सी बात/क्षमता/गतिविधि आपको सबसे अच्छी लगी? और क्यों?

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

कक्षा 9 से लेकर अब तक आपने देखा की प्रभावी संचार के अनेक आयाम हैं– किसी को ध्यान से सुनने से लेकर उन्हें प्रभावित कर पाने तक। इनका नियमित रूप से अभ्यास करके हम सभी इन क्षमताओं में दक्षता हासिल कर सकते हैं और दूसरों के साथ सकारात्मक (positive) संबंध बनाने में सफल हो सकते हैं। प्रभावी संचार/संवाद कौशल हमारे जीवन के हर चरण में उपयोगी होते हैं। कक्षा, परीक्षा, इंटरव्यू, स्कूल-इवेंट्स आदि जैसे हर छोटे-बड़े चरण में सफलता के लिए प्रभावी संवाद/संचार कौशल बहुत आवश्यक है। EMC के अलग-अलग कॉम्पोनेन्ट Student-special; business-blaster; Career Exploration; LEI में प्रभावी संवाद/संचार कौशल का अभ्यास किया जाता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

फ़ैसिलिटेटर नीचे दी गई कहानी को कक्षा में पढ़कर सुनाएँ और विद्यार्थियों को इन सम्माननीय व्यक्तित्व के बारे में और ज़्यादा खोजने और जानने के बारे में कहें।

रीड टू लीड

संदीप माहेश्वरी

दिल्ली के आंत्रप्रेन्योर और फोटोग्राफर संदीप माहेश्वरी अपने प्रभावी संचार कौशल के लिए भी प्रसिद्ध हैं, जो एक मोटिवेशनल स्पीकर के रूप में उन्हें सफल बनाने के लिए बहुत आवश्यक है। उनका सरल और सीधा नज़रिया लाखों लोगों को उन्हें फॉलो करने पर मजबूर कर देता है। वह पर्सनल डेवलपमेंट, बिज़नेस और फाइनेंशियल लिटरेसी जैसे विषयों पर अपनी बहुत ही सरल और स्पष्ट सलाह के लिए जाने जाते हैं। वे दर्शकों की चुनौतियों और उनकी उम्मीदों को समझते हुए उनके साथ सहानुभूतिपूर्वक (empathetically) जुड़ पाते हैं, उनकी भावनाओं के साथ जुड़ पाते हैं, जो उनकी बातों को बड़े स्तर पर लोगों के लिए प्रासंगिक बनाता है।

माहेश्वरी एक आंत्रप्रेन्योर फोटोग्राफर हैं और Imagesbazaar के सीईओ हैं, जिसके पास 10,00,000 से अधिक भारतीय पिक्चर्स का दुनिया का सबसे बड़ा संग्रह (collection) है।

यूनिट 03

समीक्षात्मक सोच

M8Y8B7

यूनिट का परिचय

रानी विहार एक बहुत भीड़-भाड़ वाली जगह और घर भी बहुत छोटे-छोटे हैं। इससे विद्यार्थियों को घर में पढ़ने के लिए सही से जगह नहीं मिलती। प्रिया (एक विद्यार्थी) ने आयशा (एक स्थानीय निवासी जिससे बच्चे आराम से मिल सकते हैं।) के साथ सामुदायिक (एक साथ मिलकर) रूप से पढ़ने की जगह का एक आइडिया बताया। आयशा ने इस मामले पर चर्चा करने के लिए राहुल (रानी विहार के प्रधान) से मिली।

नमस्कार! आज हम समूह में पढ़ने के लिए किसी जगह के बारे में प्रिया के आइडिया पर चर्चा करना चाहते हैं। प्रिया, क्या आप समझा सकती हैं?

हाँ। हम विद्यार्थियों के पास घर पर पढ़ने के लिए कोई शांत जगह नहीं है। एक सामुदायिक/कम्यूनिटी स्थान मदद करेगा।

लेकिन हमें अपने छोटे से एरिया में जगह कहाँ मिलेगी? और कौन उसका ध्यान रखेगा?

बढ़िया सवाल है, राहुलजी। प्रिया, आपके क्या विचार हैं?

स्कूल के पास एक खाली जगह है। हम इसे साफ कर सकते हैं और इसे पढ़ने लायक जगह बना सकते हैं। अगर सभी विद्यार्थी मदद करें और ज़िम्मेदारी लें, तो इसका रख-रखाव भी सही से हो जाएगा।

लेकिन शाम के समय लाइट का क्या? बच्चे कहाँ और कैसे बैठेंगे? और दिन के दौरान बच्चे जो शोर करते हैं उसका क्या?

शायद हम आस-पास की दुकानों से कुछ सोलर लैंप दान करने के लिए कह सकते हैं। और हम शोर को काबू में रखने के लिए खुद से ध्यान रखेंगे।

अच्छे विचार हैं, प्रिया। इसके अलावा, प्रत्येक बच्चा बैठने के लिए अपनी छोटी चटाई ला सकता है। राहुल, क्या आपको कोई और चिंता है?

बहुत-बहुत धन्यवाद! हम आस-पास के लोगों से दरी के लिए मदद करने के लिए कह सकते हैं। मेरे पास एक और विचार है! पढ़ाई के घंटे अलग-अलग समय पर क्यों न हों? छोटे बच्चे दोपहर में और बड़े बच्चे शाम को?

यह बहुत बढ़िया विचार है। अलग-अलग समय का मतलब है कम भीड़।

देखिए, अलग तरह से सोचने से, हम समाधान ढूँढ पाते हैं। यह पढ़ने की जगह न केवल विद्यार्थियों की मदद कर सकता है बल्कि समुदाय/कम्यूनिटी को भी एक साथ ला सकता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- (फ़ैसिलिटेटर इस बातचीत पर चर्चा शुरू करके इस यूनिट को शुरू कर सकता है। फ़ैसिलिटेटर उपर्युक्त बातचीत को इच्छुक विद्यार्थियों को एक रोल-प्ले के रूप में दे सकता है।)

फ़ैसिलिटेटर नोट

- किसी भी प्रकार की राय बनाने या फैसला लेने से पहले हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम जिस चीज़ को देखें, सुनें या पढ़ें, तो उसे बारीकी से समझें। यह भी ज़रूरी है कि उससे जुड़े विभिन्न नज़रियों के बारे में ध्यान से सोचें और सारे तथ्यों का तार्किक ढंग से विश्लेषण करते हुए ही निष्कर्ष तक पहुँचें।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

इस यूनिट के माध्यम से विद्यार्थी 'गहन सोच' से जुड़ी निम्नलिखित क्षमताओं का महत्त्व समझेंगे और उनका अभ्यास करेंगे:

1. सवाल पूछना
2. तर्क निर्माण करना
3. लीक से हटकर सोचना
4. किसी भी मुद्दे को कई नज़रियों से देखना

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि का नाम	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट शुरू करना	1 पीरियड	
गतिविधि मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज	2-3 पीरियड	• सवाल पूछना • तर्क निर्माण (building argument) करना • किसी मुद्दे को कई नज़रियों से देखना
कहानी अरुणाचलम मुरुगनाथम: सेनेटरी पैड क्रांति	2-3 पीरियड	• लीक से हटकर सोचना • किसी मुद्दे को कई नज़रियों से देखना
गतिविधि सवाल पूछें– पूछताछ की भूलभुलैया	3-4 पीरियड	• सवाल पूछना • तर्क निर्माण (building argument) करना
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: मजूमदार शाह	1-2 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

यूनिट के परिचय में दिए गए संवाद का प्रयोग करके विद्यार्थियों के साथ इस यूनिट पर बातचीत शुरू की जा सकती है।

- कहानी के कैरेक्टर समस्या-समाधान (problem solving) और ढल जाने (adaptability) का प्रदर्शन कैसे करते हैं?
- आपको क्या लगता है कि सामुदायिक (सबके साथ मिलकर) समाधानों पर चर्चा करते समय आयशा, प्रिया और राहुल ने एक-दूसरे के अलग-अलग नज़रिए पर विचार क्यों किया? क्या यह व्यवहार ज़रूरी है?

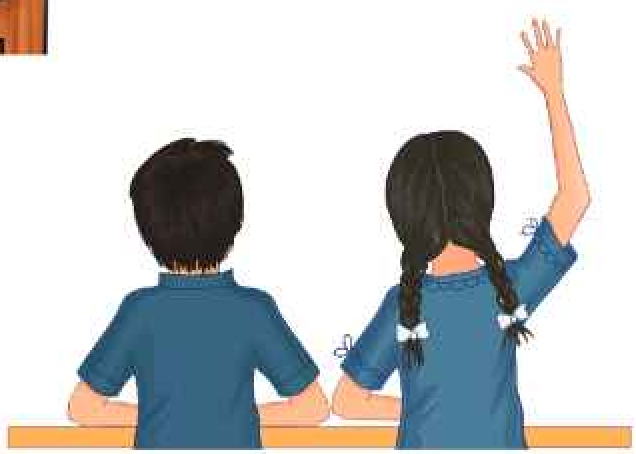

गतिविधि 3.1 मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज

परिचय

क्रिटिकल थिंकिंग में अक्सर किसी नतीजे पर पहुँचने या किसी समस्या को सुलझाने के लिए जानकारी के विभिन्न टुकड़ों को एक साथ जोड़ना होता है। 'मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज' सीमित जानकारी का अच्छे से विश्लेषण (analyze) करने, सही प्रश्न पूछने और एक बंद बॉक्स के अंदर के सामान का अंदाजा लगाने में सहयोग करने की विद्यार्थियों की क्षमताओं का आकलन (assessment) करता है।

सामग्री:

- छोटे बॉक्स-समूहों की संख्या के अनुसार
- बहुत-सी चीज़ें (चम्मच, गेंद, पेपरक्लिप या अन्य रोज़ काम में आने वाली चीज़ें हो सकती हैं)।
- प्रत्येक समूह अपनी पसंद की एक चीज़ लाएगा।
- प्रत्येक समूह के लिए पेपर और पेन

अनुमानित समय: 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य: 4-5 विद्यार्थियों के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे):

- सवाल पूछना
- तर्क निर्माण (building argument) करना
- किसी मुद्दे को कई नज़रियों से देखना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- फ़ैसिलिटेटर को प्रत्येक समूह द्वारा लाई गई चीज की सुरक्षा के नज़रिए से जाँच करनी होगी। सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों को ऑब्ज़र्व (observe) करने, प्रश्न पूछने और विचारों के साथ सहयोग करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाए।

1. **सेटअपः** गतिविधि से पहले, प्रत्येक समूह अपनी चुनी हुई चीज़ को अपने बॉक्स के अंदर रखेगा और उसे सील कर देगा ताकि दूसरा समूह उस चीज़ को न देख सके। फिर डिब्बों को समूहों के बीच बदल दिया जाता है।

2. **ब्रीफिंग/समझानाः** विद्यार्थियों को समझाएँ कि प्रत्येक बॉक्स के अंदर एक रोज़ की काम आने वाली चीज़ है। उनका काम बिना खोले यह अनुमान लगाना है कि अंदर क्या है? वे इसे हिला सकते हैं, उसकी आवाज़ सुन सकते हैं, इसका वज़न महसूस कर सकते हैं, लेकिन वे इसे खोल नहीं सकते।

3. **शुरुआती अंदाजा:** प्रत्येक समूह को अपने बॉक्स के साथ कुछ समय बिताने, चर्चा करने और अपने शुरुआती अंदाजों को नोट करने (लिखने) की अनुमति दें। समूह अपने अंदाजे के आधार पर 4 प्रश्नों का एक सेट तैयार करेगा, जो उन्हें अपना अंतिम उत्तर निकालने में मदद करेगा।

4. **प्रश्न-उत्तर राउंडः** शुरुआती अंदाजे के बाद, प्रत्येक समूह अपने 4 प्रश्न पूछ सकता है जिनका उत्तर केवल "हाँ" या "नहीं" में दिया जा सकता है ताकि अंदर की चीज़ का पता लगाया जा सके। उदाहरण के लिए, "क्या यह कुछ ऐसा है जिसे हम खाते हैं?", "क्या यह मेटल से बना है?", "क्या यह तकिए से भी नरम है?", आदि।

5. **आखिरी छँटनीः** प्रश्न-उत्तर राउंड के बाद, समूह के विद्यार्थी आपस में चर्चा करते हैं और मिले हुए उत्तरों और अपनी खुद की छँटनी के आधार पर अपने आखिरी अंदाजे पर फैसला लेते हैं।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

खुलासा और चिंतनः एक बार जब सभी समूह अपना आखिरी अंदाजा लगा लें, तो प्रत्येक बॉक्स की चीज़ें दिखाएँ। एक समूह के रूप में चर्चा करें:

1. उनके शुरुआती अंदाजा और उनकी आखिरी छँटनी एक-दूसरे के कितने करीब थे?
2. उन्होंने यह फैसला कैसे लिया कि कौन-से प्रश्न पूछने हैं?
3. क्या किसी समूह ने "हाँ/नहीं" उत्तरों के आधार पर अपना मन बदला? क्यों?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सीखे साथियों के साथ:

फ़ैसिलिटेटर समूहों से अपनी विचार और रणनीतियाँ (strategies) कक्षा के साथ साझा करने को कहें। क्या कोई सामान्य विषय या रणनीतियाँ सामने आईं? विभिन्न समूहों ने समस्या को अलग-अलग तरीके से कैसे देखा?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

साझा करें:

मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज इस बात पर जोर देता है कि क्रिटिकल थिंकिंग सिर्फ सही उत्तर पाने के बारे में नहीं है, बल्कि उपलब्ध जानकारी के आधार पर सवाल पूछने, विश्लेषण (analyze) करने और अंदाजा लगाने की प्रक्रिया (process) के बारे में भी है। इससे पता चला कि समस्या-समाधान (problem solving) में क्रिटिकल थिंकिंग और सहयोग कितना ज़रूरी है, खासकर जब जानकारी सीमित हो। विद्यार्थियों को इस विचार के महत्त्व को अपने समूहों में साझा करने दें।

कहानी 3.2 अरुणाचलम मुरुगनाथम: सेनेटरी पैड क्रांति

परिचय:

'मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज' ने हमें सिखाया कि ध्यान से सोचने का मतलब सिर्फ सभी सही उत्तर जानना नहीं है। यह प्रश्न पूछने, चीज़ों को बारीकी से देखने और जो हम जानते थे उसके आधार पर अनुमान लगाने जैसा था। चैलेंज़ ने हमें दिखाया कि समस्याओं को हल करते समय एक साथ सोचना और काम करना कितना ज़रूरी था, खासकर जब हमारे पास सारी जानकारी नहीं थी।

फ़ैसिलिटेटर निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकता है और संक्षेप में चर्चा कर सकता है:

- क्या आपने कभी अपने समुदाय में कोई ऐसी समस्या देखी है, जिसके बारे में हर कोई जानता है लेकिन कोई उसका समाधान नहीं करता?
- क्या आपने किसी को उन छोटी-छोटी समस्याओं को भी हल करते हुए देखा है, जिनका सामना हर कोई कर रहा है- चाहे वह आपके घर से भी हो?
- आइए अरुणाचलम मुरुगनाथम के जीवन के बारे में जानें, एक ऐसे व्यक्ति जिसने एक सामान्य और बड़े लेवल की समस्या को सुलझाने के लिए क्रिटिकल थिंकिंग का इस्तेमाल किया।

अनुमानित समय: 2-3 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे):

- लीक से हटकर सोचना
- किसी मुद्दे को कई नज़रियों से देखना

भूमिका:

यह प्रश्न पूछकर चर्चा शुरू करें, "क्या आपने कभी बुनियादी स्वच्छता (hygiene) प्रॉडक्ट की कमी से पैदा होने वाली चुनौतियों और स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर विचार किया है?" विद्यार्थियों को विचार करने के लिए थोड़ा समय दें। फिर पूछें, "क्या आप जानते हैं कि वर्षों से, दुनिया के ग्रामीण हिस्सों में कई महिलाओं को सिर्फ इसलिए स्वास्थ्य से जुड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा क्योंकि वे मासिक धर्म (menstrual periods) के समय इस्तेमाल किए जाने वाले बुनियादी स्वच्छता प्रॉडक्ट का खर्च नहीं उठा सकती थीं?" आज, हम एक ऐसे व्यक्ति के बेहतरीन सफ़र का पता लगाएँगे, जिसने न केवल अपने समुदाय में बल्कि पूरे भारत में महिलाओं की इस कहानी को बदलने का फैसला किया।

कोयंबटूर में पले-बढ़े अरुणाचलम मुरुगनाथम हमेशा कुछ-न-कुछ नया जानने में लगे रहते थे। शादी के बाद, उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी मासिक धर्म के दौरान सैनिटरी पैड की ज़्यादा कीमत की वजह से पुराने कपड़े ही इस्तेमाल कर रही थी। उन्होंने सोचा, "सभी महिलाएँ इन बुनियादी ज़रूरतों को पूरा क्यों नहीं कर सकतीं?"

अपनी हमेशा कुछ नया जानने की खूबी का उपयोग करते हुए, उन्होंने एक अलग-सा मिशन शुरू किया– एक किफायती सैनिटरी पैड बनाना। जबकि ज़्यादातर लोग मासिक धर्म से जुड़ी सामाजिक मान्यताओं की वजह से चुप रहते थे, मुरुगनाथम का इरादा और मजबूत होता गया। उन्होंने घर में ही खुद से मूत्राशय (bladder) का एक मॉडल बनाया और मरे हुए जानवरों के खून का उपयोग करके खुद पर प्रोटोटाइप का परीक्षण करने का अनोखा कदम उठाया। उनके प्रयोगों से लोगों में गुस्सा बढ़ने लगा और यहाँ तक कि कुछ समय के लिए उन्हें अपने परिवार से भी दूर कर दिया गया।

उनका कार्य चुनौतियों से भरा था। फीडबैक के लिए उन्होंने मेडिकल विद्यार्थियों से संपर्क किया। अपनी समझ से, उन्होंने अपने प्रॉडक्ट को और बेहतर किया। लेकिन यह सिर्फ पैड बनाने के बारे में नहीं था। वह एक कम लागत वाली मशीन तैयार करना चाहते थे ताकि बहुत-से समुदाय अपने ज़रूरत के लिए पैड खुद बना सकें, एक ऐसा कदम जो किफायती मासिक धर्म स्वच्छता प्रॉडक्ट देगा और नौकरियाँ भी पैदा करेगा।

इस बिज़नेस में लंबे समय से बड़ी कंपनियों थी और लोगों का उन पर भरोसा न होने के बावजूद भी उन्होंने बहुत सोच-विचार किया और एक अच्छी योजना बनाई। वह जानते थे कि अपने प्रॉडक्ट को बेचने के लिए उसे लोगों को मासिक धर्म स्वास्थ्य के बारे में सिखाने की ज़रूरत है, इसलिए उन्होंने ऐसा किया। जब उन्होंने आखिरकार अपनी मशीन को पूरा कर लिया, तो उन्हें एक मुश्किल रास्ता चुनना पड़ा– पेटेंट कराना और पैसा कमाना, या सबकी भलाई के लिए इस ज्ञान को बाँटना। मुरुगनाथम ने बाद वाले रास्ते को चुना, यह पक्का करते हुए कि उनका आविष्कार भारत के सबसे आखिर तक के कोनों में भी पहुँचे सके।

आज, कोयंबटूर में अरुणाचलम मुरुगनाथम का साधारण सा ऑब्ज़र्वेशन एक ग्लोबल क्रांति में बदल गया है। इंटरनेशनल मैगजीन में आर्टिकल से लेकर "पैडमैन" नाम की बॉलीवुड फिल्म की प्रेरणा तक। उनकी कहानी ऑब्ज़र्वेशन, क्रिटिकल थिंकिंग और कुछ नया बनाने की शक्ति का सुबूत है।

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

1. आलोचनात्मक सोच और नवप्रवर्तन के बारे में मुरुगनाथम की कहानी से हम क्या सबक सीख सकते हैं?
2. अन्य कौन से तरीके हैं जिनसे हम अपने समुदायों में समस्याओं को हल करने के लिए आलोचनात्मक सोच का उपयोग कर सकते हैं?
3. हम सामाजिक वर्जनाओं (social taboos) को कैसे चुनौती दे सकते हैं और दुनिया में बदलाव ला सकते हैं?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

मुरुगनाथम की यात्रा से, हम क्रिटिकल थिंकिंग को सही से समझते हैं। उन्होंने सिर्फ एक समस्या की पहचान नहीं की; उन्होंने इसका विश्लेषण किया, कई तरह से इसका ऑब्ज़र्वेशन किया और एक नए तरीके से समाधान निकाला। उनके सबसे अलग नज़रिए ने अनगिनत ज़िंदगियों को बेहतर तरीके से बदल दिया।

गतिविधि 3.3 सवाल पूछें- पूछताछ की भूलभुलैया

परिचय

किसी भी मुद्दे की सही समझ होना ज़रूरी है जो कि सिर्फ बताई गई जानकारी से विकसित नहीं हो सकती। सवाल पूछना एक महत्त्वपूर्ण कौशल है जो किसी मुद्दे की पूरी समझ बनाने में सहायता करता है।

आवश्यक सामग्रीः

- EMC डायरी/ कॉपी और पेन

अनुमानित समयः 3-4 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 5-6 विद्यार्थियों के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे):

- सवाल पूछना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- प्रश्न तैयार करते समय विद्यार्थियों को अच्छे प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित करें। सही प्रश्न तैयार करने के लिए विद्यार्थियों को पर्याप्त समय, अवसर और फीडबैक दें। यह भी देखें कि ऐसा करते समय सभी विद्यार्थी शामिल हों।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

1. विद्यार्थी 5-6 के समूह में बैठेंगे।
2. हर समूह अपने लिए निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी एक का चुनाव करेगा:
   - आप एक शिक्षक हैं और आपकी कक्षा के कुछ विद्यार्थी रोज़ नहीं आते हैं और होमवर्क भी नहीं करते हैं।
   - आपका एक साथी रोज़ खाने में चिप्स, चॉकलेट, नमकीन जैसे जंक फूड ही लाता है।
   - आप फैक्टरी में कार्य करने वाली एक महिला हैं। आपको पता चलता है कि आपको साथी पुरुष कर्मचारियों के मुकाबले कम वेतन मिला है।
   - आप रोज़ शाम को पार्क में अपने दोस्तों के साथ खेलते हैं पर बढ़ते प्रदूषण के कारण खेलने नहीं जा पा रहे।
   - आपको शाम 6 बजे के बाद घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं है।
3. परिस्थिति का चुनाव करने के बाद हर समूह निम्नलिखित टेबल के हिसाब से प्रश्न बनाएगा:

प्रत्यक्ष (सीधे) प्रश्न	अप्रत्यक्ष प्रश्न
प्रश्न जिनमें क्या, क्यों, कैसे, कौन जैसे शब्द हों, जैसे– • इस घटना का प्रभाव किस पर हो रहा है? • ऐसी स्थिति क्यों बन रही है? • स्थिति को कैसे सुलझाया जा सकता है?	प्रश्न जिनकी शुरूआत यदि/अगर से हो: • यदि आपने ऐसा किया होता तो, ... • यदि परिस्थिति उलट होती तो, ... • यदि आपको इस परिस्थिति में कुछ बदलना हो तो, ...

4. सारे प्रश्न लिखने के बाद समूह हर प्रश्न को पढ़ेगा और सोचेगा कि प्रश्नों को और महत्त्वपूर्ण या अर्थ पूर्ण कैसे बनाया जा सकता है?
5. आवश्यकता होने पर प्रश्नों को बदला जा सकता है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे और अपनी जर्नल में लिखेंगे:

1. प्रश्न बनाने से आपको क्या नई जानकारी मिली?
2. क्या प्रश्न पूछने से आप परिस्थिति को बेहतर रूप से समझ पाए? कैसे?

3. कई बार ऐसा समझा जाता है कि प्रश्न पूछने से केवल टकराव पैदा होता है। इस विषय में आपकी क्या राय है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह में हुई चर्चा को संक्षेप में पूरी कक्षा को बताएगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | **साझा करें**

इस गतिविधि से हमने सीखा कि किसी भी परिस्थिति की पूर्ण समझ बनाने के लिए सवाल पूछना महत्त्वपूर्ण है। कुछ परिस्थितियों में लग सकता है कि सवाल पूछने से टकराव हो सकता है पर असल में सवाल पूछने से टकराव का कारण पता चलता है जिससे अंत में परिस्थिति के बारे में पूरी जानकारी मिलती है और परिस्थिति सुधरने की संभावना बढ़ जाती है। हमने यह भी सीखा कि सार्थक तथा महत्त्वपूर्ण प्रश्न कैसे बनाए जा सकते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

क्रिटिकल थिंकिंग सिर्फ एक कौशल से कहीं अधिक है; यह एक माइन्ड्सेट है। इस यूनिट में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से, विद्यार्थी उन यात्राओं पर निकले जहाँ उन्हें न केवल अपनी दिमाग बल्कि अपनी जानने की इच्छा और रचनात्मकता/क्रिएटिविटी का भी उपयोग करने की आवश्यकता थी।

रानी विहार के मामले में सामुदायिक चर्चा में बातचीत और सामूहिक समस्या-समाधान की शक्ति पर रोशनी डाली गई। मिस्ट्री बॉक्स चैलेंज़ के माध्यम से, विद्यार्थियों ने अपनी जानने की इच्छा को अच्छी तरह से बनाए गए प्रश्नों में जाँचने और एक दिशा देने के महत्त्व को समझा। अरुणाचलम मुरुगनाथम की प्रेरक यात्रा ने अलग सोच और समर्पण (dedication) की बात पर जोर दिया, और यह कैसे समाज में बड़े बदलाव ला सकता है। अंत में, पूछताछ की भूलभुलैया कटौती और लॉजिकल तर्क का एक व्यावहारिक अनुभव था, ये वो कौशल है जो क्रिटिकल थिंकिंग के केंद्र में हैं।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

- आप इस यूनिट में सीखे गए क्रिटिकल थिंकिंग कौशल को कक्षा के बाहर की स्थितियों में कैसे लागू करेंगे?
- क्या आप अपने रोज़ की जिंदगी में कोई ऐसा समय याद कर सकते हैं जब सही प्रश्न पूछने या गहराई से सोचने से बेहतर नतीजे मिले हो?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

क्रिटिकल थिंकिंग एक लगातार चलने वाली यात्रा है। जैसे ही आप दुनिया में कदम रखते हैं, याद रखें कि प्रत्येक चुनौती या समस्या गहराई से सोचने, प्रश्न पूछने और समाधान खोजने का एक अवसर है। इस यूनिट का असली मतलब केवल उत्तर खोजने में नहीं बल्कि खोज करने, समझने और बढ़ने के सफर में छुपा है। हमेशा कुछ नया जानने की कोशिश करते रहें और कभी भी "क्यों?" पूछना बंद न करें। **स्टूडेंट्स स्पेशल** की अलग-अलग गतिविधियाँ करते समय विद्यार्थी समीक्षात्मक सोच (क्रिटिकल-थिंकिंग) की प्रैक्टिस करेंगे और सीखेंगे।

फ़ैसिलिटेटर नोट

फ़ैसिलिटेटर नीचे दी गई कहानी को कक्षा में पढ़कर सुनाएँ और विद्यार्थियों को इन सम्माननीय व्यक्तित्व के बारे में और ज़्यादा खोजने और जानने के बारे में कहें।

रीड टू लीड

किरण मजूमदार शाह : बायो टेक्नॉलजी में एक खास चेहरा

जब किरण मजूमदार शाह ने 1978 में बायोकॉन के साथ बायोटेक क्षेत्र में कदम रखा, तो उन्हें दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ा: भारत में एक अनजान इंडस्ट्री और उनके महिला होने की वजह से शक। इन रुकावटों के आगे झुकने के बजाय, किरण ने क्रिटिकल थिंकिंग का इस्तेमाल किया।

उन्होंने दो खास मुद्दों की पहचान की: भारत में बायो टेक्नॉलजी का शुरुआती समय और जेन्डर भेदभाव। बाजार को पहचानते हुए, किरण ने इसे रुकावट नहीं बल्कि एक अवसर देखा। यदि वह बायोकॉन को टॉप कंपनी के रूप में स्थापित कर सकी, तो यह गेम-चेंजर होगा।

भेदभाव का सीधे मुकाबला करने के बजाय, उन्होंने अपने काम को बोलने देना चुना। उन्होंने यह पक्का किया कि अन्य देशों के प्रॉडक्ट की तरह ही बायोकॉन के प्रॉडक्ट भी बढ़िया क्वालिटी वाले हों। गहराई से और अलग तरीके से सोचकर उन्होंने बड़ी इंटरनेशनल कंपनियों के साथ काम करने का फैसला किया। इस कदम से लोगों का बायोकॉन पर भरोसा और बढ़ गया।

उसके सोचने का तरीका सामान्य नहीं था। उसने सिर्फ समस्याओं को सुलझाने की कोशिश नहीं की; उसने सफलता के लिए छिपी हुई संभावनाओं को भी खोजने के लिए गहराई से देखा। इसी सोच के साथ उन्होंने बायोकॉन को भारत में एक बड़ा नाम बनाया और दिखाया कि बिज़नेस में स्मार्ट सोच कितनी शक्तिशाली हो सकती है।

यूनिट 04

सहयोग

ISG427

यूनिट का परिचय

कक्षा का दृश्य

कक्षा में रोहन उदास बैठा था। कुछ समय बाद वहाँ कक्षा के अन्य विद्यार्थी भी आ जाते हैं।

क्या बात है रोहन? तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो?

हाँ, रोहन आज तो तुम लंच-टाइम में भी क्लास में ही बैठे थे। सब ठीक तो है?

अरे, नहीं! सब ठीक है। बस अगले हफ्ते जो प्रोजेक्ट जमा होना है, उसकी थोड़ी टेंशन हो रही थी।

ये लो! बस इतनी सी बात। प्रोजेक्ट की क्या टेंशन हो गई, बता तो जरा।

प्रोजेक्ट की प्रेजेंटेशन है और मुझे समझ ही नहीं आ रहा कि ये कैसे होगा? तुम्हें तो पता है कि ड्रॉइंग में मेरा हाथ कितना टाइट है।

ये चिंता तो मुझे भी है। ड्रॉइंग तक तो ठीक है लेकिन मार्केट की मुझे कोई जानकारी नहीं है। कहाँ से शुरू करना और कैसे करना है, कोई आइडिया नहीं है।

जब हम हैं साथ तो फिक्र की क्या बात! मिल गया ना सोल्यूशन। ये ग्रुप-टास्क है तो क्यों ना हम अब एक साथ मिलकर ये प्रोजेक्ट पूरा करें। मैं मार्केट-सर्वे करता हूँ, नेहा ड्राइंग-वर्क करेगी, और रोहन तुम प्रेजेंटेशन सँभाल लेना।

वाह! ये तो कमाल हो गया। वरुण तुम्हारा फैसला एकदम सही लग रहा है। अब तो मुझे पूरा यकीन है कि हम सभी के आपसी सहयोग से इस प्रोजेक्ट को पूरा कर पाएँगे।

भारत की जानी-मानी ऑटो-मोबाईल कंपनी मारुति का भी उदाहरण परस्पर-सहयोग को समझने के लिए बहुत सही है। मारुति कंपनी, कार के विभिन्न पुर्जों (parts) के लिए विभिन्न कंपनियों के साथ परस्पर सहयोग करती है ताकि वो अपने ग्राहकों को उनकी जरूरत के हिसाब से सबसे बढ़िया प्रॉडक्ट प्रदान कर सके।

मारुति कार में

लाइट के लिए 1umax ltd, Minda Group

ए.सी. के लिए Subros

टायर के लिए Bridgestone, MRF, CEAT, Apollo, Goodyear, Michelin

म्युजिक के लिए Sony, Smartplay Pro for

लॉक-सिस्टम के लिए Minda के साथ सहयोग (Collaboration) किया है। मारुति कंपनी खुद ही सभी पुर्जे न बनाकर बाकी निर्माता-उद्योगों के साथ सहयोगपूर्ण नीति अपनाती है। मारुति द्वारा अपनाई गई इस नीति के कारण ही यह इतने पुराने समय से आज तक ऑटो-मोबाईल मार्केट में अपनी पहचान बनाए रखने में सफल हो पाई है।

ठीक भी कहा गया है कि एक से भले दो। मारुति कंपनी भी दूसरी कंपनियों के साथ मिलकर और ज्यादागुणवत्तापूर्ण (quality) कार्य कर रही है। अत: जीवन में परस्पर सहयोग से हम मुश्किल राह को भी आसान बना सकते हैं और कम मेहनत से ज्यादा और अच्छा नतीजा पा सकते हैं।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

विद्यार्थी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित क्षमताओं के साथ एक-दूसरे की सामर्थ्य एवं कौशल का प्रयोग करने का प्रयास करेंगे।

1. **समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना।**
2. **विविधता (diversity) एवं सहयोग की भावना का विकास।**
3. **स्वयं और समूह में निर्णय लेने में योगदान।**

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि/कहानी	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट की शुरूआत	1 पीरियड	
गतिविधि ट्रैफिक जाम	2-3 पीरियड	• स्वयं एवं समूह में निर्णय लेने में योगदान।
कहानी सहयोग से क्रांति विविधता (diversity) एवं सहयोग की भावना का विकास।	2-3 पीरियड	• विविधता (diversity) एवं सहयोग की भावना का विकास।
गतिविधि 'आओ मिलकर बनाएँ'	2-3 पीरियड	• समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना एवं विविधता की सराहना।
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: मिशन मंगल यान	1-2 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

हमारे जीवन में सहयोग का बहुत महत्त्व है। सहयोग के बिना किसी बेहतर समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। एक-दूसरे के सहयोग के चलते हम अपने अंदर तमाम सकारात्मक एवं रचनात्मक बदलाव लाते हैं। इसके ज़रिए नए-नए प्रयोग और खोजों के विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है। जैसे कक्षा के अंदर कुछ भी नया करने के लिए हम अपनी क्षमताओं के अनुसार एक-दूसरे की मदद करते हैं।

गतिविधि 4.1 ट्रैफिक जाम

परिचय

एक-दूसरे के सहयोग के साथ यह गतिविधि (ट्रैफिक जाम) सहजता से की जा सकती है। इसे पूरा करने के लिए टीम के संज्ञानात्मक कौशल (cognitive skill) और सहयोगी मानसिकता (collaborative mindset) का प्रयोग किया जाता है। इसे करने में एक पैटर्न (तरीका) भी बनता है, जिससे इसे समझना और करना आसान हो जाता है। अत: इसे समझने के लिए करके देखना आवश्यक है।

आवश्यक सामग्री:

- संज्ञा

अनुमानित समय: 2–3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य: 6–6 का समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- स्वयं एवं समूह में निर्णय लेना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- गतिविधि में जमीन/फर्श पर बनाए गए वृत्त (circle) साफ नज़र आएँ।
- गतिविधि को पूरा करने के लिए विद्यार्थियों को पूरा अवसर व पर्याप्त समय मिले।
- इस गतिविधि को करने के दौरान समूहों में विद्यार्थियों की संख्या को घटाया/बढ़ाया जा सकता है।
- इसे हर टीम के 2, 4 या ज्यादा व्यक्तियों के साथ भी आसानी से कर सकते हैं। टीम के सदस्यों की संख्या घटने-बढ़ने के साथ गतिविधि को पूरा करने की अवधि (समय-सीमा) को घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

- 6-6 विद्यार्थियों का समूह बनाया जाए।
- हर समूह की 3-3 की दो टीम (टीम A व B) बनाएँ।
- जमीन पर 7 वृत्त (circle) खींचें।
- दोनों टीम एक-दूसरे के आमने-सामने एक लाइन में इस प्रकार खड़ी हों कि बीच का एक वृत्त खाली रहे।

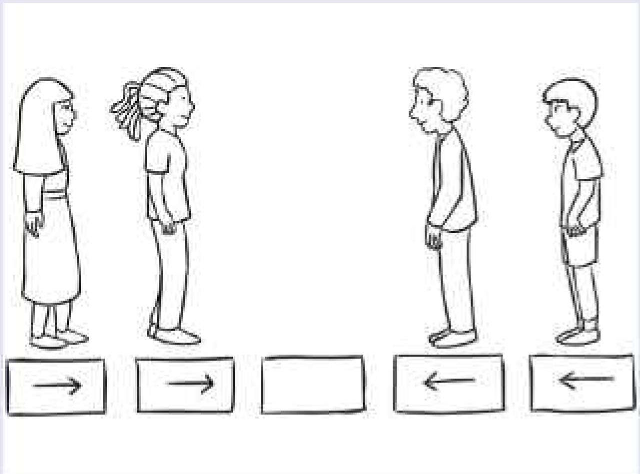

- दोनों टीम को अपनी जगह बदलनी है। टीम A के तीनों सदस्य टीम B की जगह और टीम B के सदस्य टीम A की जगह आएँगे।
- इस गतिविधि को प्रत्येक समूह सुविधानुसार एक-एक कर या एक साथ कर सकता है।
- जगह/स्थान बदलने के कुछ नियम हैं:
    - एक वृत्त में सिर्फ एक ही व्यक्ति होगा।
    - आप खाली वृत्त की तरफ ही जा सकते हैं। पीछे लौटना या पीछे मुड़ना संभव नहीं है।
    - यदि एक वृत्त खाली है तो आगे की ओर एक वृत्त से दूसरे में जाना है।
    - अपनी टीम के किसी साथी को आप लाँघ (cross) नहीं सकते हैं।
    - नियमों को तोड़े जाने की स्थिति में गतिविधि को दोबारा शुरू किया जाएगा।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

समूह के सभी विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्नलिखित सवालों पर चर्चा को आगे बढ़ा सकते हैं:

1. गतिविधि के दौरान क्या-क्या चुनौतियाँ आईं?
2. इस गतिविधि को करने से पहले और करने के बाद आपने क्या महसूस किया? विस्तार से बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

ऊपर दिए गए विचार बिंदुओं पर अपने-अपने समूह में चर्चा करने के बाद, हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह की चर्चा को कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

इस गतिविधि में हम आपस में बातचीत करते हुए एक सहमति पर पहुँचते हैं। उसे बार-बार कोशिश करके देखते हैं। पूरा न होने पर पुनः बातचीत करते हुए नई कार्य योजना तैयार करते हैं। फिर से कोशिश करते हैं। इसकी शुरूआत एक छोटी टीम से की जा सकती है। जिसे धीरे-धीरे दोहराते हुए बड़ी टीम के साथ भी कर सकते हैं। इस गतिविधि को अलग-अलग टीमों की कुशलता और योग्यता के आधार पर इसे प्रतियोगिता के तौर पर भी करा सकते हैं।

कहानी 4.2 सहयोग से क्रांति

"एक साथ आने से शुरू होती है कहानी,
और वहीं एक साथ काम करना बन जाती है
जीत की निशानी।"

परिचय

बच्चों, पिछली गतिविधि 'ट्रैफिक जाम' में देखा कि कैसे हम सब मिलकर किसी भी समस्या को आराम से हल कर पाते हैं। इसी के आगे आज की कक्षा की शुरूआत करने से पहले एक प्रश्न है आप सबके लिए-

"आपके अनुसार देश के सबसे बड़े डेयरी-ब्रांड का क्या नाम है?

(कक्षा से अपेक्षित उत्तर प्राप्त होंगे जैसे- अमूल डेयरी, मदर डेयरी आदि।)

वाह! बहुत बढ़िया। अमूल डेयरी ही देश का सबसे बड़ा डेयरी ब्रांड है। लेकिन क्या आपको पता है कि इसकी (अमूल डेयरी) शुरूआत कब और कैसे हुई थी?

चलिए, आज सुनते हैं एक कहानी। कहानी आपसी सहयोग की, जिसमें गाँव के किसानों की मेहनत और तकनीक ने मिलकर असंभव काम को भी संभव कर दिखाया। ये संभव हो पाया मात्र सहयोग (collaboration) से। समूह में एक साथ मिलकर सब एक और एक ग्यारह की तरह काम कर पाते हैं। तो जानते हैं कि कैसे देश में श्वेत क्रांति (White Revolution) लाने वाले डॉ वर्गिस कुरियन और गुजरात के किसानों एक- साथ मिलकर दूध की नदियाँ तक बहाने में सफल हो पाए।

अनुमानित समयः 2–3 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- विविधता (diversity) एवं सहयोग की भावना का विकास।

कहानी की शुरूआत होती है, गुजरात के एक छोटे से गाँव 'आणंद' से। भारत में शहरों में दूध की आपूर्ति (supply) गाँव से की जाती है। गाँव से दूध शहरों तक पहुँचाने में बिचौलिए (mediator) एक अहम भूमिका निभाते थे। जोकि गाँव से कम कीमत पर दूध खरीदकर शहरों में अधिक कीमत में बेचते थे और भारी मुनाफा कमाते थे। जब किसानों को इस बात का पता चला कि उन्हें उनके दूध की असली कीमत नहीं मिल रही तो उन्होंने मिलकर एक सामूहिक-निर्णय लिया और बिचौलियों को दूध देना बंद कर दिया।

डॉ. वर्गिस कुरियन

इसके बाद किसान सरदार वल्लभ भाई पटेल (स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह-मंत्री) से मिले और उनकी सलाह पर श्री त्रिभुवन पटेल के नेतृत्व में 1946 में एक सहकारी संस्था की नींव रखी। आगे चलकर यही संस्था 'अमूल-डेयरी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। शुरूआत में आस-पास के ही किसान इससे जुड़े हुए थे।

संस्था में नई उम्मीद तब जागी, जब डॉ. वर्गिस कुरियन इससे जुड़े। मूलतः कालीकट (वर्तमान कोझिकोड) के डॉ. कुरियन की नियुक्ति बतौर इंजीनियर गुजरात में हुई परंतु वो यहाँ खुश (संतुष्ट) नहीं थे। उधर किसानों के पास दूध तो था लेकिन पैसे और तकनीक के अभाव में वे इसे शहरों तक पहुँचाने में नाकामयाब हो रहे थे। इसी वजह से दूध के खराब होने पर किसानों को नुकसान होता था। त्रिभुवन पटेल और किसान डॉ. कुरियन से मिले। किसानों की समस्या सुनकर उनके मन में उनके लिए सहानुभूति का एहसास हुआ और उन्होंने वहीं रुककर किसानों के साथ मिलकर काम करने का फैसला लिया।

सबसे पहले गाँव-गाँव जाकर किसानों को संस्था का उद्देश्य समझाया और उससे जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रयास रंग लाने लगे और डेयरी में अब हर रोज 250 लीटर दूध आने लगा। जिसकी मात्रा धीरे-धीरे करके बढ़ती जा रही थी।

गुजरात के छोटे-छोटे गाँव से दूध रातों-रात मुंबई तक पहुँचने लगा। जो दूध बिक नहीं पाता था, उसका मक्खन बनाया जाने लगा। संस्था के दायरे में गाँव की संख्या को बढ़ता देख डॉ. कुरियन ने दूध को संरक्षित (preserve) करने के लिए उपकरण जुटाना शुरू कर दिया। उस समय मात्र गाय के दूध से पाउडर बनाने की तकनीक थी, भैंस के दूध से नहीं। इसके लिए कुरियन ने अमेरिका से अपने दोस्त एच.एम.दलाया को भारत बुलाया। कह सकते हैं कि विविधता और समानुभूति से उन्होंने एक साथ मिलकर (Collaboration) वो कर दिखाया जो अभी तक कहीं नहीं हुआ था। 1955 में पहली बार भैंस के दूध से पाउडर बनाने में कामयाबी हासिल की। किसानों की मेहनत और तकनीक की सहायता से दूध का व्यापार बढ़ गया।

अमूल की सफलता से प्रभावित होकर 'राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड' की स्थापना हुई और डॉ कुरियन को अध्यक्ष बनाया गया और इसी के साथ शुरूआत हुई दुग्ध क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) की। सरकारी-तंत्र और डेयरी किसानों ने आपस में सहयोग (collaboration) किया। इसी वजह से विदेशों से दूध को मँगवाने वाला देश अब विश्व का नं. 1 दुग्ध-उत्पादक देश बन गया।

आज पूरे देश में प्रतिदिन कुल उत्पादित 126 मिलियन लीटर दूध में से 35 मिलियन लीटर अमूल से होता है व विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। अमूल ने देश में एक खास जगह बना ली है। आज इससे करीब 35 लाख किसान जुड़े हैं और उत्पादन, वितरण, परिवहन आदि में करीब 15 लाख लोगों को रोजगार मिला है। 1994-95 के 1,114 करोड़ के इसके टर्न-ओवर को बढ़ाकर 2023-24 में 80,000 करोड़ करने का उद्देश्य रहा है।

इससे प्रेरित होकर प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक श्याम बेनेगल ने 'मंथन' नामक फिल्म बनाई, जिसे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वहीं डॉ. कुरियन को उनकी लगन और मेहनत के लिए रेमन मैग्सेसे अवार्ड, वर्ल्ड फूड प्राइज व पद्म विभूषण आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

1. क्या आप बता सकते हैं कि डॉ. कुरियन और किसानों ने अमूल डेयरी के विकास में कैसे सहयोग किया?
2. डॉ. वर्गिस कुरियन और किसानों के सहयोग ने संगठन की सफलता में कैसे योगदान दिया?
3. अपना कोई एक काम बताएँ जब आपने किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने साथियों के साथ मिलकर काम किया हो।

चिंतन एवं चर्चा साझा करें

वर्गिस कुरियन की कहानी में किसानों द्वारा किए गए दूध उत्पादन और उसे शहरों तक सप्लाई करने के रोचक एवं प्रेरक किस्से पढ़ने को मिलते हैं। साथ ही इसमें अमूल जैसे प्रॉडक्ट के इतने बड़े असर को भी हम जानते हैं, जो देश–विदेश में एक डेयरी प्रॉडक्ट के तौर पर अपनी पहचान बना चुका है। बेशक, वर्गिस कुरियन के प्रयासों ने डेयरी–उद्योग को कृषि भारत का एक बड़ा उद्योग बनाने में एक अहम भूमिका निभाई।

गतिविधि 4.3 'आओ मिलकर बनाएँ'

परिचय

हमने अभी तक गतिविधि और कहानी में देखा कि कैसे एक-दूसरे की क्षमताओं को पहचानकर और साथ मिलकर काम करने से असंभव को भी संभव करके दिखाया जा सकता है। बहुत-से लोग मिलकर तमाम चीज़ें बनाते हैं व उन्हें हम तक पहुँचाने के लिए व्यवस्थाएँ बनाते हैं। क्या हम रोजाना ज़िंदगी में इस प्रकार के सहयोग को पहचान पाते हैं? आइए, इसी बात से जुड़ी एक गतिविधि करते हैं।

आवश्यक सामग्रीः

- कक्षा में विद्यार्थियों के पास उपलब्ध कोई भी सामान

अनुमानित समयः 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 4-5 विद्यार्थियों का समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- समानुभूतिपूर्ण (empathetic) होना एवं विविधता की सराहना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- सभी विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करें।
- गतिविधि के समय सभी विद्यार्थियों का ऑब्ज़र्वेशन करें, जिसे बाद में चर्चा के समय सभी के साथ साझा करें।
- टाइमर या अलार्म का प्रयोग करें और 10 सेकंड शेष रहने पर काउंट-डाउन का भी प्रयोग करें ताकि विद्यार्थियों को समय का अंदाजा रहे।

- गतिविधि दो चरणों में होगी-

  1. प्रथम चरण- विद्यार्थी व्यक्तिगत (individually) तौर पर गतिविधि करेंगे।
  2. द्वितीय चरण- गतिविधि समूह में की जाएगी।

प्रथम चरण:

- सभी विद्यार्थी उपलब्ध सामान से ही कुछ रचनात्मक/क्रिएटिव व उपयोगी सामान बनाने के लिए सोचें। (अनुमानित समय-1 मिनट)
- विद्यार्थियों को सामग्री एकत्रित करने के लिए 1 मिनट का समय दें।
- विद्यार्थी अब इस सामान से कुछ उपयोगी वस्तु बनाने की कोशिश करें।(समय-15 मिनट)
- जिन विद्यार्थियों ने सबसे पहले कुछ उपयोगी बनाया है, उन्हें प्रेजेंट के लिए कहें।

विद्यार्थी बाद में भी इसकी योजना बना सकते हैं कि वो अगले दिन कक्षा में कम से कम समय में और अधिक उपयोगी सामान कैसे बना सकते हैं।

द्वितीय चरण:

- इस चरण में, फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को 4-5 के समूह में बाँटें।
- अब विद्यार्थियों को अपने-अपने समूह में विचार-विमर्श कर योजना बनाने के लिए कहें कि कल वाली गतिविधि को समूह में एक-दूसरे के साथ मिलकर कैसे और अधिक अच्छे से किया जा सकता है। (समय-5 मिनट)
- इसी दौरान विद्यार्थी एक-दूसरे की योग्यता और कौशल के अनुसार समूह में सबकी भूमिका/कार्य निश्चित करेंगे।
- बनाई गई योजना के आधार पर कोई रचनात्मक वस्तु तैयार करेंगे जिसके लिए उन्हें 10-15 मिनट का समय दिया जाएगा।
- 15 मिनट बाद प्रत्येक समूह कक्षा के सामने अपनी प्रस्तुति देगा तथा दूसरे समूह दी गई प्रस्तुति पर अपना फीडबैक देंगे।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करेंगे-

- गतिविधि करते समय क्या-क्या चुनौती सामने आईं और आपने उनका कैसे सामना किया? EMC डायरी/कॉपी में लिखें। लिखे गए चरणों के आधार पर हर समूह अपनी योजना को कक्षा के सामने प्रस्तुत करेगा।
- प्रथम चरण में व्यक्तिगत तौर तथा द्वितीय चरण में सामूहिक तौर पर किए गए कार्य में क्या अंतर लगा?
- क्या समूह में मिलकर काम करते समय असहमति की स्थिति बनी? यदि हाँ तो निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए आपने क्या तरीका अपनाया?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

ऊपर दिए गए विचार बिंदुओं पर अपने-अपने समूह में चर्चा करने के बाद, हर समूह से एक विद्यार्थी अपने समूह की चर्चा के मुख्य बिंदुओं को सबके साथ साझा करेगा।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

हमारे आस-पास जो कुछ भी होता है या नया बनता है, उसमें कई लोगों का योगदान होता है। आपसी

सहयोग और योगदान से ही समाज की हर गतिविधि सही ढंग से चलती है। हम एक-दूसरे का सहयोग करके और सहयोग पाकर ही अपने उद्देश्यों में सफल हो सकते हैं।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन और चर्चा | **साझा करें**

- हमें अपने आस-पास आपसी सहयोग (collaboration) कहाँ दिखता है? उदाहरण देकर बताएँ।
- इस यूनिट में क्या कुछ ऐसी बातें हुईं, जो आपने पहले नहीं सोची थीं?

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

इस यूनिट में विभिन्न गतिविधियों और कहानी के ज़रिए एक-दूसरे के साथ मिलकर और समानुभूति के साथ कार्य करने के महत्त्व को न केवल हमने जानने की कोशिश की बल्कि व्यक्तिगत एवं सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता पर भी बात की।

EMC में स्टूडेंट स्पेशल परस्पर सहयोग से चलने वाली गतिविधि है, जिसमें सभी विद्यार्थी अपने-अपने कौशल के अनुसार एंकर, जोक-स्टार और ऑब्ज़र्वर आदि की भूमिका निभाते हैं और एक-दूसरे के साथ मिलकर स्टूडेंट स्पेशल को सफल बना पाते हैं।

फ़ैसिलिटेटर नोट

नीचे दिए गए केसलेट को पढ़ें और विद्यार्थियों से इन प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बारे में और अधिक जानने के लिए कहें।

रीड टू लीड

मिशन मंगल यान

मंगल ग्रह का अध्ययन करने के लिए 2013 में इसरो (भारत अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) द्वारा मंगलयान लॉन्च किया गया। यह मिशन कम लागत (cost) और तैयारी के लिए कम समय के कारण सबको चुनौतीपूर्ण लगा।

मंगलयान मिशन में माइलस्वामी अन्नादुरई, प्रोजेक्ट निदेशक सब्बा अरुणन और अलूर सिलेन किरण कुमार आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। नंदिनी हरिनाथ और रितु करिधल ने मंगलयान के अंतरिक्ष में जाने के रास्ते की गणना करने के लिए एक स्वदेशी सॉफ्टवेयर प्रणाली को डिज़ाइन किया। मौमिता दत्ता और मीनल संपत ने ज़रूरी वैज्ञानिक उपकरणों का निर्माण और परीक्षण किया। इनके अलावा भी कई अन्य महिला और पुरुष वैज्ञानिकों ने मिशन की सफलता में भूमिका निभाई।

टीम में विविधता और परस्पर सहयोग का ही नतीजा था कि मंगलयान मिशन से भारत न केवल मंगल ग्रह की कक्षा तक पहुँचने की उपलब्धि हासिल करने वाला पहला एशियाई देश बन गया, बल्कि अपने पहले ही प्रयास में तथा अब तक सबसे कम लागत मात्र 450 करोड़ में ऐसा करने वाला पहला देश भी बन गया।

यूनिट 05

अवसर पहचान कर आगे बढ़ना

U7A5N3

यूनिट का परिचय

"अवसर सभी के जीवन में आते हैं,
लेकिन अवसर का लाभ वही लोग उठा पाते हैं,
जो अवसरों को पहचानने की क्षमता रखते हैं।"
(अज्ञात)

दी गई पंक्तियों (quote) से आप क्या समझ पा रहे हैं?

फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों से जवाब लेकर फिर उसे संक्षिप्त (छोटा करके) में कक्षा में बताएँ।

आमतौर पर जीवन में अवसर तो हर जगह छुपे होते हैं, ज़रूरत है उन्हें सही समय पर पहचानने और उनसे फायदा लेने की। आमतौर पर ये अवसर किसी मुश्किल में ही छुपे होते है और हम इनसे बचने की कोशिश करते हैं। इन समस्याओं से बचने के बजाए इन्हें पहचानने और इनका समाधान ढूँढने की ज़रूरत है।

इस यूनिट में हम ऐसी ही कुछ प्रक्रियाओं (process) से गुजरेंगे, जो हमें सही अवसर पहचान कर एक नया विचार बनाने में या अपने किसी विचार की पुष्टि (confirm) करने में मदद कर सकते हैं।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

1. उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना
2. पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि का नाम	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट की शुरुआत	1 पीरियड	
गतिविधि मेरी पसंद का बैग (bag)	2-3 पीरियड	• उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना
कहानी शिवः कंप्युटर-मैन	2-3 पीरियड	• पहचानी गई ज़रूरतों में अपनी प्राथमिकता देख पाना
गतिविधि नए मौके ढूँढना	1-2 पीरियड	• उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना, • पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीडः लक्ष्मी मेनन	1 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरुआत

विद्यार्थियों से यूनिट के शुरू में दी गई पंक्तियों (lines) पर चर्चा शुरू करते हुए उनसे पूछें कि-

- क्या आप परिभाषित कर सकते हैं कि अवसर आपके लिए क्या मायने रखते हैं?
- आप अपने जीवन या करियर में अवसरों की पहचान करने के लिए किन रणनीतियों (strategies) का उपयोग करते हैं?

विद्यार्थियों को बताएँ कि इस यूनिट में हम देखेंगे कि कैसे ज़रूरत के आधार पर हम अपने प्रोजेक्ट्स या नए काम के लिए ठोस विचार सोच सकते हैं। इस साल जो विद्यार्थी किसी सामाजिक या आर्थिक रूप से प्रभावी काम करने के लिए एक प्रोजेक्ट (Business Blaster) कर रहे हैं, यह क्षमता (अवसर पहचान कर आगे बढ़ना) ऐसे प्रोजेक्ट में उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होगी।

गतिविधि 5.1 मेरी पसंद का बैग

परिचय

इस गतिविधि में हम देखेंगे कि कैसे अपने पूर्वाग्रहों (prejudice/bias) की वजह से हम कई बार लोगों को या परिस्थितियों को ठीक से नहीं समझ पाते। यह हमारे लिए कुछ नया सोचने और विश्वास से उन्हें दूसरों तक ले जाने में मुश्किल पैदा कर सकता है। लेकिन अच्छी बात यह है कि दूसरों का समझने का एक व्यवस्थित तरीका है, जिसके 3 मुख्य चरण हैं-

1. समस्या को जानना और समझना,
2. जो समस्या से प्रभावित है, उसकी ज़रूरत को जानना
3. समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करना ।

इनका प्रयोग करके हम किसी समस्या या किसी की ज़रूरत को उनके नज़रिए से समझ सकते हैं। आइए, यह तरीका समझते हैं।

आवश्यक सामग्रीः

- कागज़, पेन

अनुमानित समयः 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 2-2 के जोड़े में

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- उपयोगकर्त्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना

फ़ैसिलिटेटर नोट

विद्यार्थियों को अपने सवाल सोचने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे कि वे बैग को प्रयोग करने वाले विद्यार्थी को बेहतर समझ पाएँ।

- विद्यार्थी ऐसे साथियों के साथ 2–2 के जोड़े बनाएँ, जिन्हें वे बहुत अच्छे से नहीं जानते।
- विद्यार्थियों को बताएँ कि इस गतिविधि में उन्हें एक–दूसरे के लिए चित्र बनाकर एक बैग डिज़ाइन करना होगा।
- इस गतिविधि में 3 चरण होंगे।

पहला चरण- 5 मिनट

- विद्यार्थियों से उनकी समझ के अनुसार अपने साथी के लिए बैग की डिज़ाइन बनाने को कहें।
- बैग बना लेने के बाद उन्हें एक–दूसरे को अपना डिज़ाइन दिखाने को कहें।
- इसके बाद हाँ या ना में अपने साथी को बताएँ कि यह बैग उनके लिए अनुकूल है या नहीं।

दूसरा चरण- 15–20 मिनट

- विद्यार्थियों से बैग के प्रति एक–दूसरे की पसंद और इच्छाएँ समझने के लिए कहें।
- इसके लिए वे निम्नलिखित जैसे कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं-
  - यह बैग तुम किस लिए इस्तेमाल करना चाहते हो?
  - तुम्हें किस तरह के मैटीरियल (material) का बैग पसंद है?
  - तुम्हारे लिए बैग का उचित आकार क्या है?
- इस जानकारी के आधार पर उन्हें फिर से अपने साथी के लिए एक नया डिज़ाइन बनाकर एक–दूसरे से फीडबैक लेने को कहें।

तीसरा चरण- 20 मिनट

- इस बार विद्यार्थियों से एक–दूसरे के बारे में व्यक्तिगत जानकारी इकट्ठा करने को कहें, जिससे कि आप अपने साथी के व्यक्तित्व, पसंद आदि को समझ पाएँ।
- इसके लिए वे निम्नलिखित प्रकार के कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं (इस बार उन्हें क्या के साथ क्यों भी पूछना है)–
  - उनका पसंदीदा रंग क्या है? क्यों?
  - अपने खाली समय में तुम्हें क्या करना पसंद है? क्यों?
  - तुम्हारा पसंदीदा मौसम कौन सा है? क्यों?
- इस जानकारी के आधार पर उन्हें फिर से अपने साथी के लिए एक नया डिज़ाइन बनाकर एक–दूसरे से फीडबैक लेने को कहें।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

सभी विद्यार्थियों से निम्नलिखित पर बात करें-

1. पहले चरण से तीसरे चरण तक आपकी अपने उपयोगकर्त्ताओं (users) की जरूरतों के बारे में समझ कैसे बदली?
2. दूसरे और तीसरे चरण के सवालों में क्या फर्क था?
3. अवसर पहचानने में उपयोगकर्त्ता से बात करने/सवाल पूछने के क्या फायदे हो सकते हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सभी विद्यार्थियों को अपने तीनों चरणों के चित्र प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

हमें कई बार लगता है कि हम लोगों और उनकी जरूरतों को समझते हैं, पर यह हमारा व्यक्तिगत नज़रिया भी हो सकता है। सही तरह से कुछ करने का अवसर पहचानने के लिए यह जरूरी है कि हम मौजूदा परिस्थिति को समझने के लिए "क्या और क्यों" जैसे प्रश्नों के आधार पर उसका विश्लेषण (analyze) करें। इस तरह से हम नई जानकारी हासिल कर सकते हैं तथा अपनी मान्यताओं/समझ की भी पुष्टि/वेरीफिकेशन कर सकते हैं, जिससे कि और भी सटीक तरह से किसी समस्या का समाधान ढूँढ़ सकते हैं।

कहानी 5.2 शिव: कंप्युटर-मैन

परिचय

हमने गतिविधि में समझ की ज़रूरतों को पहचानना कितना ज़रूरी है। ज़रूरतों में ही अवसर छुपा होता है। इन ज़रूरतों में से हमें किसको प्राथमिकता देनी हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस ज़रूरत को पूरा करने का अवसर देखते हैं। अवसर को पहचानकर काम को बेहतर तरीके से कर सकते हैं।

अनुमानित समय: 2-3 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना।

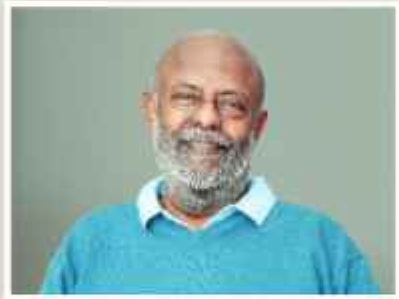

शिव नादर

एचसीएल (हिंदुस्तान कंप्यूटर्स लिमिटेड) के संस्थापक शिव नादर अवसरों की पहचान करने की अपनी असाधारण क्षमता और उन्हें हासिल करने के मजबूत इरादे के लिए मशहूर हैं। उनकी कहानी उनकी आंत्रप्रेन्योरशिप के जुनून का सुबूत है।

तमिलनाडु में जन्मे शिव नादर ने कोयंबटूर के पीएसजी कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी से पढ़ाई पूरी की। फिर एक आईटी कंपनी में नौकरी से अपने करियर की शुरुआत की, लेकिन इसमें उन्हें कुछ खास मज़ा नहीं आया तो नौकरी छोड़ दी। उन्होंने कुछ नया करने की सोची और 1975 में अपने साथियों के साथ मिलकर माइक्रोकॉम्प (Microcomp) नाम से अपनी खुद की एक कंपनी बनाई। इसमें टेली-डिजिटल कैलक्यूलेटर्स और दूसरे डिजिटल ऑफिस प्रॉडक्टस बनाए जाते थे।

शिव नादर ने देखा कि देश में कम्प्यूटर्स की कमी है और उन्होंने इस सुनहरा मौके को अच्छे से पहचाना। उस समय मल्टीनैशनल कम्प्यूटर कंपनी आईब्रीएम किसी वजह से भारत में काम बंद करने जा रही थी। इस परिस्थिति में शिव नादर ने अपने लिए एक बेहतरीन रास्ता बनाते हुए भारत के ग्लोबल आईटी केंद्र बनने की क्षमता को पहचाना। भविष्य को भाँपने की उनकी खूबी ने उन्हें 1976 में एचसीएल शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

HCL के शुरुआती दिनों में, नादर ने हार्डवेयर बनाने को एक अवसर के रूप में देखा। वह भारत में स्वदेशी कंप्यूटर हार्डवेयर विकसित करने पर ध्यान देने वाले पहले कुछ लोगों में से एक थे। इस नया करने के नज़रिए (innovative approach) और ग्राहकों की ज़रूरत को समझते हुए शिव नादर ने एक ही वर्ष में HCL में भारत का पहला माइक्रो-कंप्यूटर बनाकर सबको हैरान कर दिया। आगे चलकर इसी कंप्युटर का एक हिस्सा, अगले लगभग 15 वर्षों तक दुनियाभर में बनने वाले कम्प्यूटर्स का अहम हिस्सा बन गया, जिसे मिनी फ्लॉपी कहा जाता था।

ग्लोबल कंपनी बनने के सपने के लिए नादर ने भारत से बाहर भी HCL को फैला दिया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों को सेवा देने के अवसर को सही से पहचाना और 1980 में सिंगापुर में 'फार ईस्ट कंप्यूटर' कंपनी की स्थापना की। अमेरिका और अन्य प्रमुख बाजारों में मजबूत पकड़ बनाई। कई देशों तक पहुँचने से एचसीएल को ग्लोबल स्तर पर सफलता मिली। तभी एक सरकारी नीति के कारण कंप्युटर और उससे जुड़े सामान (हार्डवेयर) को विदेश में भेजना और बेचना मुश्किल हो गया तो शिव नादर ने सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में भी काम करना शुरू किया। आईटी क्षेत्र नया होने की वज़ह से लोगों को

इसका ज्यादा पता नहीं था, इसलिए कंपनी ने ही अच्छी शिक्षा देने के लिए एन.आई.आई.टी. की स्थापना करके इसका जिम्मा उठाया। यह उनकी एक और बड़ी सफलता थी।

शिव नादर ने बहुत-सी बड़ी कंपनियों के साथ बिजनेस साझेदारी एवं गठबंधन (tie ups) किए, जिनमें नोकिया, HP, सिस्को, तोशिबा और पैरेट सिस्टम्स आदि रही। आज शिव नादर का नेटवर्थ +12.6 अरब है। अब एच. सी.एल. की चेयरपर्सन शिव नादर की बेटी रश्मी नादर हैं। नादर की लगन और मेहनत के लिए इन्हें देश ही नहीं विदेश में भी सम्मानित किया गया, जैसे कि 2007 में E&Y Entrepreneur of the Year और 2008 में पद्म-भूषण आदि। शिव नादर के पास अवसरों को पहचानने की समझ और उन्हें आगे बढ़ाने का साहस था, उनके इसी आंत्रप्रेन्योर माइन्ड्सेट ने उन्हें ग्लोबल आईटी इंडस्ट्री का एक प्रमुख चेहरा बना दिया। एच. सी. एल. को देश का पहला स्टार्ट-अप माना जाता है, जो आज विश्वभर में 60 देशों के 2,25,000 लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

(https://www.forbes.com/profile/shiv-nadar/?sh=54d3694a5383)

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

1. शिव नादर ने अपने करियर की शुरूआत से किन-किन अवसरों को पहचानते हुए खुद को स्थापित किया?
2. यदि आपके स्कूल में कोई अवसर किसी भी वजह से आपके हाथों से निकल गया है तो आपने उस अनुभव से क्या सीखा?
3. जब आपके पास कई अवसर हों तो आप उनमें से किसी एक को किस आधार पर चुनते हैं?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

अवसर पहचान पाने के लिए यह जरूरी है कि हम बिलकुल खुले मन से हमारे सामने आ रही परिस्थितियों को देखें। निराश होने की बजाय उनमें छिपी संभावनाओं को देख सकें। जब कोई परिस्थिति हमारे मन के अनुसार नहीं होती, तब भी उसमें अवसर ढूँढे जा सकते हैं जैसे कि शिव नादर ने भी किया। और यह तभी संभव है, जब हम अपने काम और उस क्षेत्र में चल रहे तमाम ट्रेंड्स (trends) और जरूरतों के प्रति जागरूक हैं।

गतिविधि 5.3 नए मौके ढूँढना

परिचय

जब हम कोई नया काम करने की सोचते हैं तो उसके बारे में अलग–अलग लोगों की प्रतिक्रिया भी अलग होती है। वे सब एक जैसा नहीं सोचते। ऐसे में उनके विभिन्न विचारों को सुनना और उसके आधार पर अपने काम के बारे में निर्णय लेना एक महत्त्वपूर्ण क्षमता है। आइए सीखते हैं, यह गतिविधि करके।

आवश्यक सामग्रीः

- कागज़, पेन

अनुमानित समः 1–2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 6–6 के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- उपयोगकर्ताओं (users) से मिलकर उनकी ज़रूरतें पहचानना।
- पहचानी गई ज़रूरतों में प्राथमिकता देख पाना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस गतिविधि में विद्यार्थियों को बाग को उपयोग करने वाले (users) और इंटरव्यू लेने वाले, दोनों का रोल निभाना होगा। इसका चलाने/संचालन करने में उनकी मदद करें।

सभी विद्यार्थियों को निम्नलिखित परिस्थिति बताएँ–

एक स्कूल में विभिन्न विषयों को आसानी से पढ़ने/पढ़ाने के लिए कुछ विद्यार्थी और शिक्षक एक ऐप, लर्न ईज़ी (learn easy) इस्तेमाल करते हैं। इसमें वीडियो देखकर थ्योरी (theory) को समझना और अपनी समझ का आकलन (assessment) करना जैसी सुविधाएँ हैं। बहुत-से विद्यार्थी व शिक्षक इसका उपयोग करने लगे हैं, पर इसका दायरा और बढ़ाया जा सकता है।

इस गतिविधि में हम इस ऐप के वर्तमान उपयोगकर्ताओं (users) के अनुभवों के आधार पर ऐप का प्रयोग बढ़ाने के नए तरीकों के बारे में सोचेंगे।

- सभी विद्यार्थियों को इस ऐप के निम्नलिखित 6 उपयोगकर्ताओं (users) के बारे में बताएँ–
  1. कल्पना जी, शिक्षक हैं और इस ऐप का उपयोग अपने सीखने के लिए करती हैं।
  2. शालू, कक्षा 10 की विद्यार्थी है जो बोर्ड परीक्षा की तैयारी के लिए ऐप का इस्तेमाल करना पसंद करती है।
  3. इशरत, कक्षा 10 की विद्यार्थी है जिसे अकेले पढ़ना पसंद नहीं, इसलिए ऐप का इस्तेमाल करना पसंद नहीं करती है।
  4. जावेद, शिक्षक हैं जिन्होनें ऐप को क्लास में इस्तेमाल करना शुरू किया है।
  5. नव्या, कक्षा 9 की विद्यार्थी है और एक ही भाषा में ऐप होने से इसका ज्यादा इस्तेमाल नहीं कर पा रही है।
  6. अविनाश, कक्षा 10 का विद्यार्थी है जिसे देख के सीखना बहुत आसान लगता है और इसलिए इस ऐप का इस्तेमाल करता है।
- विद्यार्थियों के 6-6 के समूह बनाएँ।
- समूह में सभी अपने लिए एक उपयोगकर्ता (users) का रोल चुने और उसके अनुसार अपने ऐप इस्तेमाल करने के अनुभव पर सोचें। (5 मिनट)
- इसके बाद समाधान सोचने के लिए समूह में हर विद्यार्थी बाकी सभी उपयोगकर्ताओं का नज़रिया समझने के लिए इंटरव्यू के प्रश्न तैयार करें। (10 मिनट)
- समूह में विद्यार्थी एक-एक करके हर उपयोगकर्ता से गतिविधि 1 की तरह 5 से 6 प्रश्न पूछें और नोट्स बनाएँ। (20 मिनट) यह प्रश्न कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं–
  - ऐप इस्तेमाल करने में आपको क्या दिक्कतें आ रही हैं?
  - इस ऐप में क्या बदलाव लाया जा सकता है कि जिससे यह आपके लिए और उपयोगी बने?
- इकट्ठा की हुई जानकारी के आधार पर हर समूह से बिज़नेस आइडिया (business idea) सोचने को कहें। वे एक से अधिक आइडिया सोच सकते हैं। (15 मिनट)
- सभी विचारों में से किन्हीं 3 को चुनने को कहें। इन्हें चुनने के लिए उन्हें अपना तर्क भी सोचने को कहें। (5 मिनट)

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

समूह में सभी को निम्न सवालों पर चर्चा करने को कहें-

- इंटरव्यू करके आपको ऐसी क्या जानकारी मिली जो पहले आपके पास नहीं थी? इस जानकारी ने कैसे आपके बिज़नेस आइडिया (business idea) को प्रभावित किया?
- कुछ लोग ऐप से खुश थे पर कुछ लोगों को इसके इस्तेमाल में दिक्कतें भी आ रही थी। आपको किस की जानकारी से बिज़नेस आइडिया (business idea) सोचने में ज्यादा मदद मिली?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

हर समूह से विद्यार्थियों को अपने सोचे हुए विचार और उनके तर्क साझा करने को आमंत्रित करें। साथ ही उन्हें चर्चा किए हुए प्रश्नों पर भी अपने विचार साझा करने को कहें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

अक्सर किसी समस्या के एक से ज्यादा पहलू होते हैं जैसे कि दी गई गतिविधि में हमने देखा। कुछ विद्यार्थियों के लिए ऐप ने काम आसान बना दिया था पर कुछ के लिए यह इतना बड़ा आकर्षण नहीं बन रही थी। कुछ नए विचार सोचने के लिए यह जरूरी है कि हम अलग-अलग तरह के उपयोगकर्ताओं को समझें, पूरी जानकारी हासिल करें और उसके आधार पर प्राथमिकताएँ तय कर पाएँ। यह प्रक्रिया हमें ना सिर्फ नए अवसर पहचानने में मदद करती है पर साथ ही साथ सबसे जरूरी समस्या को भी ढूँढ़ने में मदद करती है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन और चर्चा **साझा करें**

1 क्या आपने अभी तक के अपने जीवन में किसी समस्या को पहचानकर अवसर में बदला। आपने इसके साथ आगे बढ़ने के लिए क्या कदम उठाए थे?

2. अपने फील्ड प्रोजेक्ट (स्कूल) में अवसर पहचानने और उनमें से किसी एक को प्राथमिकता (preference) देने के लिए आप किन बातों का ध्यान रखेंगे।

3. उपयोगकर्ताओं से प्रभावी तरीके से बात करने के बारे में इस यूनिट से आपने क्या सीखा?

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

एक उपयोगी विचार सोच पाने के लिए जरूरी है कि हम इस प्रक्रिया में पहले गहराई से उपयोगकर्ता का नज़रिया समझें। प्राप्त जानकारी के आधार पर अनेक विकल्पों की कल्पना कर पाएँ, जो उनकी समस्याओं को सही तरीके से हल कर सकते हों। इसके बाद एक्शन लेने या करने के चरण पर जाना, हमें अपने काम के प्रति ज्यादा आत्मविश्वास दे सकता है क्योंकि अब हमारे पास समस्या को ठीक से समझने और विकल्पों को प्राथमिकता के आधार पर चुनने के लिए ज़रूरी जानकारी उपलब्ध है। L.E.I. करियर एक्स्प्लॉरेशन, बिज़नेस-ब्लास्टर में विद्यार्थियों को ऐसे अनेकों अवसर देखने को मिल सकते हैं, जिनका अच्छे से विश्लेषण (analyze) करके वो अपने करियर में आगे बढ़ सकते हैं।

फ़ैसिलिटेटर नोट

नीचे दिए गए केसलेट को पढ़ें और विद्यार्थियों से इस प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बारे में और अधिक जानने के लिए कहें।

रीड टू लीड

लक्ष्मी मेनन

लक्ष्मी मेनन, जो 'प्योर लिविंग' की संस्थापक हैं, एक सामाजिक उद्यमी हैं। वह हर परिस्थिति में ज़रूरत को पहचानने और उस पर आगे बढ़ने की क्षमता रखती है। लक्ष्मी ने वृद्धाश्रम की महिलाओं के लिए 'अम्मूमाथिरी (दीये की बाती)' बनाई ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें। इन दिया की मदद से बहुत सारे घर और मंदिरों तक रोशनी पहुँची।

2018 में केरल में बाढ़ के कारण सामान जैसे कपड़े खराब हो गए। लक्ष्मी ने खराब कपड़ों से 'चेकुट्टी नाम की गुड़िया' बनाने का विचार किया, जिससे कामगारों को रोजगार मिला। ये गुड़िया जेनेवा में भी प्रस्तुत की गई और अच्छी कमाई हुई।

कोविड के दौरान, उन्होंने PPE किट से बची सामग्री से बिस्तर बनाए, जो गरीबों की मदद करने में मदद करते थे। इससे न केवल बेरोजगारों को रोजगार मिला बल्कि सस्ते दाम में बिस्तर मुहैया कराके स्थानीय सरकार की भी मदद हुई।

लक्ष्मी ने हर मुश्किल में अवसर देखा और उत्साह के साथ उसपर आगे बढ़ी।

यूनिट 06

योजना बनाकर काम करना

X4V2J6

यूनिट का परिचय

इस यूनिट में हम योजना बनाने और इसे लागू करने के महत्त्व को समझेंगे, जिसके लिए एक बढ़िया उदाहरण है- मधुमक्खियाँ।

फैसिलिटैटर निम्नलिखित प्रश्न को कक्षा में विद्यार्थियों से पूछे-

- बच्चों, क्या आपको पता है कि मधुमक्खियाँ अपना प्रत्येक कार्य बड़े ही सुनियोजित ढंग से करती हैं?
- ये अपने कार्यों को सही तरीके से योजना बनाकर कैसे कर पाती हैं? बताओ।

(किन्हीं 1-2 विद्यार्थियों को जवाब के लिए प्रोत्साहित करते हुए और अंत में उनके उत्तरों की संक्षिप्त व्याख्या (paraphrasing) करते हुए।)

मधुमक्खियों के छत्ते में बहुत सारी मधुमक्खियाँ रहती हैं। अतः इतनी बड़े समूह में रहने और सफलतापूर्वक काम करने के लिए योजना बनाना बहुत ज़रूरी है। छत्ते के प्रत्येक सदस्य की एक खास भूमिका होती है। उदाहरण के लिए रानी, नर और अन्य मादा मक्खियाँ छत्ता बनाने, खाना ढूँढने और सुरक्षा जैसे विभिन्न कार्यों के लिए ज़िम्मेदार होती हैं। छत्ते में भंडारण (storage) और तापमान के अनुसार छः कोण वाली (hexagon) कोशिकाएँ बनाना हो, शहद इकट्ठा करना और उसे संरक्षित (preserve) रखना हो या फिर आपदा-प्रबंधन आदि प्रत्येक काम बड़े योजनाबद्ध तरीके से होता है, जिसके लिए समय और संसाधन (resources) का ध्यान रखते हुए योजना बनाना और छोटे-छोटे कार्य बाँटना बहुत ज़रूरी है।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

इस यूनिट में विद्यार्थी किसी भी कार्य को अच्छी तरह करने के लिए योजना बनाने का महत्त्व समझ पाएँगे। वे दिए गए कार्य को योजना बना कर पूरा करेंगे। ऐसा करने के लिए निम्नलिखित क्षमताओं पर ध्यान देना होगा:

1. किसी कार्य को पूरा करने के लिए योजना बनाना
2. योजना बनाने में समय सीमा तथा साधनों का ध्यान रखना
3. कार्य को छोटे चरणों में बाँटना

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि/कहानी	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट की शुरुआत	1 पीरियड	
गतिविधि नाव बनाएँ	1–2 पीरियड	• किसी कार्य को पूरा करने के लिए योजना बनाना
कहानी मुंबई डब्बावाला	1–2 पीरियड	• कार्य को छोटे चरणों में बाँटना
गतिविधि निर्जन द्वीप	2–3 पीरियड	• योजना बनाने में समय सीमा तथा साधनों का ध्यान रखना • कार्य को छोटे चरणों में बाँटना
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: अदिति गुप्ता		

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

विद्यार्थियों से अपने साथ बैठे साथी के साथ निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में चर्चा करने के लिए कहें। उनके उत्तर पूछ कर बोर्ड पर लिखते जाएँ:

- क्या कभी ऐसा हुआ है कि आप कोई आवश्यक कार्य करना चाहते हों और वह समय पर या अच्छी तरह पूरा नहीं हुआ?
- ऐसा होने के क्या कारण हो सकते हैं?

किसी विद्यार्थी द्वारा बताए गए कारणों में 'योजना बनाकर कार्य को न करना' आ सकता है। यदि उनके द्वारा बताए गए कारणों में यह कारण नहीं आता तो भी विद्यार्थियों को बताएँ कि इन कारणों के साथ ही एक कारण योजना न बनाना भी हो सकता है।

इस यूनिट में हम सीखेंगे कि योजना बनाकर काम करने से क्या होता है और योजना बनाते हुए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

गतिविधि 6.1 नाव बनाएँ

परिचय

अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए योजना बनाने का कौशल विकसित करना अनिवार्य है।

"लक्ष्य निर्धारित करना मुख्य बात नहीं है, यह तय करना है कि आप इसे कैसे हासिल करेंगे और उस योजना के साथ बने रहेंगे।"

-टॉम लैंड्री (अमेरिका के फुटबॉल कोच)

बिना योजना के काम करना नामुमकिन तो नहीं है, लेकिन योजना के साथ किए गए काम को ज्यादा कुशलता के साथ और कम समय में किया जा सकता है और सफलता तक पँहुचने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। इस गतिविधि में विद्यार्थी योजना बनाने से कार्य के नतीजे में आए सुधार का अनुभव करेंगे।

आवश्यक सामग्रीः

- हर समूह के लिए एक-एक पूरा अख़बार (सभी 12-16 पन्ने)

अनुमानित समयः 1-2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 5-6 विद्यार्थियों के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- किसी कार्य को पूरा करने के लिए योजना बनाना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- ध्यान दें कि समूह में प्रत्येक विद्यार्थी अवश्य भाग लें।
- विद्यार्थियों को समूह में योजना बनाने के लिए प्रेरित करें लेकिन इसमें उनकी सहायता न करें।
- गतिविधि में दो बार नाव बनाने को दी जाएँगी, अतः विभिन्न समूहों की नाव की गिनती लिखकर रखें ताकि पहले और बाद में तुलना की जा सके।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

5–6 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ और हर समूह को अख़बार के 2–3 पन्ने दें।

पहली बार नाव बनानाः

- हर समूह को पहले 5 मिनट में इस अख़बार से ज्यादा से ज्यादा नाव बनानी हैं। 5 मिनट पूरे होने पर नोट करें कि प्रत्येक समूह ने कितनी नाव बनाईं। ध्यान रखें कि–
- विद्यार्थी किसी भी तरह की गोंद, स्टेपलर, टेप, पिन, कैंची आदि का प्रयोग नहीं करें।
- गतिविधि के इस पहले पड़ाव के बाद अपनी नाव और बचे हुए अख़बार फ़ैसिलिटेटर को लौटा दें।

दूसरी बार नाव बनानाः

- अबकी बार विद्यार्थी नए तरीके से नाव बनाने और फिर उसे पेन-रीफिल, तीलियों, पेड़ के पत्तों या रंग आदि आस-पास से उपलब्ध सामग्री से और ज्यादा आकर्षक (attractive) बनाने का प्रयास कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों को योजना बनानी है कि 5 मिनट में ही, उपलब्ध संसाधनों के साथ वे अपने पहले प्रयास से ज्यादा तथा आकर्षक ढंग से नाव कैसे बनाएँगे।
- योजना बनाते समय सभी समूह–सदस्यों के कार्य भी पहले से ही निर्धारित कर लिए जाएँ, जैसे कि सामान एकत्रित करना, नाव बनाना, सजाना आदि। (5 मिनट)
- अपने आस–पास उपलब्ध सामान को एकत्रित करने के लिए कहें। (5 मिनट में)
- सभी समूहों को फिर से अख़बार के 2–3 पन्ने दें।
- समूहों को फिर से नाव बनाने के लिए 5 मिनट का समय दें और अंत में नोट करें कि इस बार हर समूह ने कितनी नाव बनाईं।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे-

- नाव बनाने के पहले और दूसरे प्रयास में क्या अंतर था? अपने अनुभव को उदाहरण देते हुए विस्तार से बताएँ।
- किसी भी कार्य को आरंभ करने से पहले योजना बनाना क्यों ज़रूरी है और यदि योजना नहीं बनाते हैं तो नतीजे किस तरह के रहते हैं?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद कुछ विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ अपनी बात को साझा करने के लिए बुलाएँ। जब एक विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ अपने विचार साझा कर ले तब उस विद्यार्थी को किसी दूसरे विद्यार्थी को बुलाने के लिए कहें। इसी तरह यह विद्यार्थी अपनी बात साझा करने के बाद किसी तीसरे विद्यार्थी को बुलाने के लिए कहें। यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक कम से कम 5 विद्यार्थी अपनी बात साझा न कर लें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

हमने इस गतिविधि में एक ही काम को दो बार किया- एक बार बिना योजना बनाए और दूसरी बार योजना के साथ। दूसरे प्रयास में हमने अनुभव किया कि कैसे सोच-समझकर बनाई गई योजना हमारे कार्य को बेहतर बनाती है। इस प्रक्रिया से हम कई बातों पर ध्यान देते हुए कार्य कर सकते हैं, जैसे- समय और सामान का उचित प्रयोग कैसे किया जाए, सबसे बढ़िया नतीजा पाने के लिए क्या उपाय हो सकते हैं, कौन-कौन से साधन काम में लाए जा सकते हैं, इत्यादि।

कहानी 6.2 मुंबई डब्बावाला

परिचय

पिछली गतिविधि में हमने योजना बनाने के महत्त्व के बारे में जाना। इसे और बेहतरी से जानने के लिए आज हम इसी तर्ज़ पर काम करने वाले 'मुंबई डब्बावाला' की कहानी के माध्यम से जानेंगे कि कार्य को योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाए तो बड़े से बड़ा काम भी कैसे सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

अनुमानित समयः 1–2 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- कार्य को छोटे चरणों में बाँटना।

मुंबई की हलचल भरी सड़कों पर, जहाँ समय कीमती है व हर रोज़ की भागदौड़ में 'आराम' शब्द का अस्तित्व बस नाममात्र ही रह गया है, ऐसे में लंचबॉक्स योद्धाओं की एक विशेष सेना का नाम उभर कर आता है– मुंबई डब्बावाला जो शहर के गुमनाम नायक हैं।

इस कहानी की शुरुआत होती है, आज से करीब 125 साल पहले। 1890 में जब एक बैंकर ने महादेव जी से कहा, "काश! कोई घर का बना खाना मुझे दफ्तर में दे जाए।" महादेव हावजी सोचने लगे कि लंच में खाने की समस्या तो मुम्बई में काम करने वाले सैकड़ों सरकारी और गैर सरकारी कर्मचारियों की है। तब गैस–कुकर तो था नहीं, ऊपर से मुंबई की लोकल ट्रेन की भीड़, जिसमें खाली हाथ जाना ही मुश्किल काम होता था और अगर हाथ में टिफिन हो तो और भी बड़ी मुश्किल। महादेवजी मन ही मन इस समस्या का समाधान ढूँढ़ने में लग गए कि ऐसा क्या किया जाए कि घर का खाना सब तक पहुँचाया जा सके।

काफी सोच-विचार के बाद उन्होनें एक योजना बनाई और अपने साथियों के साथ साझा की। कई साथी जो रोज़गार या आय-वृद्धि के इच्छुक थे, वो महादेव के साथ जुड़ने को तैयार हो गए। उन्होनें मिलकर एक साधारण लंचबॉक्स डिलीवरी प्रणाली बनाई, जो जल्द ही प्रसिद्ध हो गई।

लगभग 66 वर्ष के बाद 1956 में 'डब्बावालों' की एक रजिस्टर्ड कंपनी बन गई, जो आज भी काम कर रही है। आँधी, बारिश या चिलचिलाती धूप में भी, डब्बा हमेशा लंच टाइम से पहले ही ग्राहक को मिल जाता है। बिना किसी चूक के, सही ग्राहक तक, सही समय पर। आखिर ऐसा कैसे संभव हो पाता है? हर सुबह डब्बावालों का एक बड़ा समूह शहर भर घूमता है, गृहणियों (housewives) से लंचबॉक्स इकट्ठे करके साइकिल या लोकल-ट्रेन से पूरे शहरभर में पहुँचते हैं। ये सब एक लॉजिस्टिक बैले को अंजाम देते हैं, जो आपूर्ति श्रृंखला विशेषज्ञों (supply chain management enperts) को आश्चर्यचकित (surprise) कर देता है।आज 'डब्बावालों' के ग्राहकों की संख्या लाखों में हो गई है। ऐसे में योजना बना कर काम करना और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

लोकल ट्रेन में निश्चित किए गए स्टेशनों पर, निश्चित समय में डब्बों की अदला-बदली होती है। ट्रैफिक जाम से बचने के लिए ये रेहड़ी, साइकिल का प्रयोग करते हैं या पैदल ही चलते हैं। विशेष कोडिंग सिस्टम से पूरा डब्बा सिस्टम चलता है, जो बहुत ही सरल है और जिसे कम पढ़े-लिखे डब्बावाले आसानी से समझ जाते हैं। वे प्रतिदिन मुंबई जैसे घनी आबादी वाले शहर मे 1,30,000 से अधिक डब्बे पहुँचाते हैं यानि हर रोज 2,60,000 डब्बों का लेन-देन।

इस संगठन के कुछ खास नियम हैं, जिनका इससे जुड़े हुए सब लोग पालन करते हैं; जैसे-

- सफेद टोपी और वर्दी पहनना, जिससे कि दूर से ही इन्हें देखकर लोग रास्ता दे देते हैं।
- हर एक नए 'डब्बे वाले' की 6 महीने की ट्रेनिंग होती है।
- इलाकों के हिसाब से 10 से 20 'डब्बावालों' का समूह होता है जिसका नेता समूह का एक सबसे अनुभवी सदस्य होता है।
- बिना पहले बताए छुट्टी ना लेना आदि।
- प्रतीकों, रंगों और संख्याओं पर निर्भर कोडिंग प्रणाली के साथ, वे हर छह मिलियन डिलीवरी में एक से भी कम गलती की आश्चर्यजनक सटीकता दर प्राप्त करते हैं।

इस कंपनी को सिक्स सिग्मा रेटिंग मिली है, जिसका मतलब है- 60 लाख बार कार्य करने में केवल एक गलती की संभावना। आजकल 'डब्बावाला' संगठन, SMS व ऑनलाइन प्रणाली से भी अपने ग्राहकों को जोड़ रहे हैं। कई प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों से तथा कई बिजनेसमैन इनके काम के तरीके को समझने के लिए आते हैं। मुंबई के 'डब्बावाले' मानो मुंबई की लाइफ-लाइन बन चुके हैं।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

सभी विद्यार्थी 5-6 के समूहों में निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे:

- 'मुबंई डब्बावाला' के काम करने में योजना बनाना किस तरह महत्त्वपूर्ण है?
- 'डब्बावाला' के कार्य में गलती होने की संभावना न के बराबर होती है। वे ऐसा कैसे कर पाते हैं?
- समूह में चर्चा करते हुए अपनी दिनचर्या (daily routine) की (विभिन्न विषयों को पढ़ने के लिए) योजना बनाएँ।

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

इस कहानी में हमने देखा कि कार्य को योजनाबद्ध तरीके से करने से सफलता प्राप्त होती है। एक बड़ा कार्य जिसमें कई लोगों को एक साथ कार्य करना हो, वह भी छोटे-छोटे चरणों में बाँटने से कुशलता से किया जा सकता है।

गतिविधि 6.3 सुनसान/निर्जन द्वीप

परिचय

मुंबई डब्बावाला की कहानी से हमने जाना कि कार्य को अच्छी तरह पूरा करने के लिए योजना बनाना मददगार होता है। पर एक अच्छी योजना कैसे बनाई जाए? एक अच्छी योजना बनाते हुए क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए? उसे हम इस गतिविधि के जरिए और अच्छी तरह समझ सकते हैं।

आवश्यक सामग्री:

- कापी, पेन

अनुमानित समय: 2-3 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य: 5-6 विद्यार्थियों के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- योजना बनाने में समय सीमा तथा साधनों का ध्यान रखना
- कार्य को छोटे चरणों में बाँटना

फ़ैसिलिटेटर नोट

- इस गतिविधि में विद्यार्थियों को योजना बनाते समय कोई सुझाव न दें।

- गतिविधि 2 चरण में पूरी की जाएगी।

पहला चरण

- 5-6 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ।
- विद्यार्थियों को बताएँ कि वे एक निर्जन द्वीप पर फँसे हुए हैं और उनके पास वहाँ कुछ प्राकृतिक-संसाधन हैं, जैसे- नारियल और अन्य खाने लायक फल, लकड़ी और बहता पानी आदि।
- जिंदा रहने और बचकर निकलने के लिए उपर्युक्त प्राकृतिक संसाधनों का ही उपयोग कर सकते हैं।
- संसाधन चुनने के बाद प्रत्येक समूह में विद्यार्थी आपस में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा करेंगे और EMC डायरी या कॉपी में योजना बनाएँगे (सोचने और विचार-विमर्श के लिए 10-15 मिनट का समय दें)
  - वे उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कैसे करेंगे?
  - उन्हें किन बाधाओं का अनुमान है और वे उन्हें दूर करने की योजना कैसे बनाते हैं?
  - वे कहाँ और कैसे जाना चाहेंगे?
  - योजना बनाने के बाद, प्रत्येक समूह बाकी समूह के सामने अपनी योजना प्रस्तुत करेगा।

2. दूसरा चरण-

- प्रस्तुतिकरण के बाद अब सभी समूह अपनी-अपनी विभिन्न योजनाओं का मूल्यांकन (evaluation) करें, प्रत्येक योजना की ताकत और कमजोरियों की पहचान करने के लिए अपने-अपने समूह में चर्चा करें और एक बार फिर से प्रभावी योजना बनाने का प्रयास करें।
- अब विद्यार्थियों को कुछ अन्य सहायक सामान भी मिल जाएगा जिनमें खाने का सामान, एक रेडियो और एक दिशा सूचक यंत्र/कंपास (compass) शामिल हैं।
- विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए योजना को छोटे-छोटे चरणों में बाँटना होगा-
  1. वे वहाँ से कैसे निकलेंगे, कितना समय चाहिए होगा, जो साधन उनके पास हैं उनका उपयोग कैसे करेंगे, कैसे किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचेंगे, क्या खाना चाहेंगे आदि।
  2. इन सब बातों का ध्यान रखते हुए उन्हें योजना बनाने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य तथा कार्य निर्धारित करने होंगे, जिन्हें वे डायरी या कॉपी में लिखेंगे।
  3. सभी समूह अपनी यात्रा की योजना को कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।

कैसे करें | **चिंतन एवं चर्चा** | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

- अपनी यात्रा की योजना बनाते हुए आपने किन-किन बातों का ध्यान रखा?
- दोनों बार बनाई गई योजनाओं में क्या मुख्य अंतर रहा?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

सभी समूह बारी-बारी से अन्य समूहों की योजना के बारे में सकारात्मक तथा आलोचनात्मक सुझाव देंगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

इस गतिविधि से हमने सीखा कि कोई भी चुनौती या कार्य बहुत बड़ा नहीं है। अगर योजना को छोटे-छोटे चरणों में बाँट कर योजना बनाई जाए और उसका पालन किया जाए तो हर कार्य को सफलता से पूरा किया जा सकता है। इसमें उपलब्ध समय और संसाधनों को ध्यान में रखना भी आवश्यक है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

- किसी भी कार्य को करने के लिए योजना बनाते समय किन पहलुओं पर विचार करना अच्छा होता है?
- अपने जीवन का कोई उदाहरण साझा करें, जहाँ योजना बनाने और उसको लागू करने से आपको मनचाहे नतीजे मिलें हों।

चिंतन एवं चर्चा **साझा करें**

किसी कार्य को सफल बनाने के लिए योजना बनाना जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है योजना बनाते हुए समय, साधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखना और कार्य को छोटे चरणों में बाँट कर पूरा करना। यह कौशल विद्यार्थियों के अध्ययन-जीवन (study life) के लिए बहुत मायने रखता है। यदि विद्यार्थी योजना बनाकर अपना कक्षा-कार्य या गृह-कार्य या परीक्षा की तैयारी करते हैं तो वो कम समय में अच्छे से अपना लक्ष्य पूरा कर सकते हैं।

योजना बनाकर काम करने के कौशल को हम EMC में स्टूडेंट-स्पेशल; बिजनेस-ब्लास्टर; कैरियर एक्स्प्लॉरेशन; LEI आदि सभी कंपोनेंट्स में प्रयोग करते हुए इन्हें अच्छे से पूरा कर पाते हैं, साथ ही हमारा योजना बनाने का अभ्यास भी हो जाता है।

फ़ैसिलिटेटर नोट

नीचे दिए गए केसलेट को पढ़ें और विद्यार्थियों से इस प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बारे में और अधिक जानने के लिए कहें।

अदिति गुप्ता

Aditi Gupta

अदिति गुप्ता 'Menstrupedia Comic' कंपनी की सह-संस्थापक हैं। अपनी तरह की यह विश्व की पहली कंपनी है। अपने 'योजना बनाने और प्रबंधन करने' के कौशल के कारण ही अदिति इस कंपनी को बना पाने में सफल हो पाई। इस कंपनी का मुख्य उद्देश्य मासिक धर्म से जुड़ी गलत धारणाओं को दूर करके सही जानकारी देना और उन्हें जागरूक करना है। उन्होंने लक्षित समूह (target group) की आवश्यकताओं की पहचान (Need Analysis) करने के साथ शुरुआत की। उसने देखा कि हमारे समाज में मासिक धर्म को लेकर आज भी लोग खुलकर बात नहीं कर पाते हैं तथा इसे लेकर अनेकों गलत धारणाएँ भी हैं। उन्होंने स्कूलों, एन.जी.ओ. व स्वास्थ्य-केंद्रों के साथ मिलकर काम किया। अदिति गुप्ता अपनी प्रभावी योजना और कार्यान्वयन कौशल की वजह से इतने संवेदनशील (sensitive) मुद्दे से जुड़ी जागरूकता को भी बड़े अच्छे तरीके से लोगों तक पहुँचाने में सफल हुई।

यूनिट 07

विश्लेषण करके सीखना

Z7N5E9

यूनिट का परिचय

साथी से सीखना

जानकारी खोजकर सीखना

खुद करके सीखना

सीखने के बहुत तरीके होते हैं। कई बार हम किसी शिक्षक से, अपने परिवार या दोस्तों से कुछ सीखते हैं और कई बार खुद से। खुद से सीखने के सबके अलग-अलग तरीके हो सकते हैं जैसे परिस्थितियों और अपने अनुभवों का विश्लेषण करना। इस यूनिट में हम सीखने के तरीकों को जानेंगे, विश्लेषण (analysis) को समझेंगे और खुद की समझ बढ़ाएँगे।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

इस यूनिट में विद्यार्थी विश्लेषण करने की क्षमता को विकसित करेंगे। इसके लिए वे निम्नलिखित क्षमताओं का अभ्यास करेंगे-

1. **सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना**
2. **विश्लेषण करके सीखना**

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि/कहानी	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट की शुरूआत	1 पीरियड	
गतिविधि सीखने के तरीके	1-2 पीरियड	• सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना
कहानी शीरोज: महिला सशक्तिकरण का जाल	1-2 पीरियड	• विश्लेषण करके सीखना
गतिविधि हम सीखेंगे साथ-साथ	1-2 पीरियड	• सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: डोसा प्लाजा (प्रेम गणपति)	1 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरूआत

ऊपर दिए गए चित्रों को दिखाते हुए विद्यार्थियों के साथ निम्नलिखित सवाल पर चर्चा करें-

- क्या आप बता सकते हैं कि आप कैसे सीखते है?

4-5 विद्यार्थियों से उत्तर लेकर उन्हें बताएँ -

हम अपने हर अनुभव से सीखते हैं, चाहे हम उसमें सफल हों या असफल। हमें लगातार अनुभवों का विश्लेषण करके सीखना चाहिए। विश्लेषण से हमारा मतलब है कि किसी कार्य या भावना को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के आपसी संबंध और निर्भरता (dependency) का आकलन (assessment) करना। इस यूनिट में हम सीखने के अलग-अलग तरीकों का अभ्यास करेंगे और विश्लेषण करके सीखने के बारे में समझेंगे।

गतिविधि 7.1 सीखने के तरीके

परिचय

जीवन में, कभी-कभी हम एक्टर होते हैं, एक भूमिका निभाते हैं जबकि बाकी समय, हम दर्शक होते हैं, ऑब्ज़र्वेशन और व्याख्या करते हैं। दोनों स्थितियों में, हम अनुभवों पर विचार कर सकते हैं और बेहतर सीख सकते हैं। स्थितियों का विश्लेषण करने और उसके अनुसार खुद को ढालने के महत्त्व को समझने के लिए रोल प्ले एक बढ़िया तरीका हो सकता है। इस गतिविधि मे हम रोल-प्ले ही करेंगे।

आवश्यक सामग्रीः

- खुला स्थान या मंच/स्टेज
- टोपी, स्कार्फ या साधारण कपड़े जैसे सामान (वैकल्पिक)

अनुमानित समयः 1-2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 4-5 के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- सीखने के अलग-अलग तरीके पहचानना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

- विद्यार्थियों को गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेने और गतिविधि के रिफ्लेक्शन वाले चरण के दौरान गहराई से सोचने के लिए प्रोत्साहित करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

1. 4-5 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ।
2. प्रत्येक समूह को एक सामान्य स्थिति दें जैसे किसी कार्यक्रम का आयोजन, परिवार में कोई फंक्शन, या सामुदायिक समस्या का समाधान।
3. प्रत्येक समूह के भीतर, विद्यार्थियों को दी गई स्थिति के आधार पर प्रत्येक सदस्य के लिए खास रोल तय करने के लिए कहें।
4. प्रत्येक समूह को अपनी स्थिति के आधार पर 3 मिनट का रोल प्ले तैयार करने के लिए 15 मिनट का समय मिलेगा।
5. प्रत्येक समूह को कक्षा के सामने अपनी रोल निभाने के लिए कहें।
6. प्रत्येक समूह में एक अब्ज़र्वर-समूह होगा जो फीडबैक देने के लिए कलाकारों द्वारा किए गए रोल-प्ले और निर्णयों पर चर्चा और विश्लेषण करेगा। अब्ज़र्वर-समूह विश्लेषण करेगा। (रोल-प्ले को देखने के बाद) कि क्या रोल-प्ले करने वाला समूह सौंपे गए काम को पूरा करने के लिए भूमिकाओं और ज़िम्मेदारी को प्रभावी तरीके से बाँटकर पूरा कर पाए।
7. प्रत्येक प्रेजेंटेशन के बाद, अब्ज़र्वर-समूह चर्चा से फीडबैक और मुख्य-बिंदु साझा करने के लिए एक सदस्य का नाम देगा।
8. फीडबैक के आधार पर रोल-प्ले करने वाला समूह अच्छे नतीजे के लिए भूमिकाओं (रोल) को बदल या जोड़ सकता है। (यदि फीडबैक के बाद उन्होंने अपनी भूमिका में ज़रूरी बदलाव किए हैं तो फ़ैसिलिटेटर समूहों को दोबारा प्रेजेंटेशन देने के लिए कह सकता है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

गतिविधि के बाद विद्यार्थियों को निम्न प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए कहें -

1. अपनी भूमिका निभाने से आपके लिए सबसे बड़ी सीख क्या थी?
2. अपनी भूमिका में चुनौतियों या नई जानकारी का सामना करने पर आपने खुद को कैसे बदला और कैसे बदलाव किया?
3. किसी कार्य या उसके समाधान का विश्लेषण करने के लिए अन्य नज़रिए को जानना कितना महत्त्वपूर्ण है?
4. आपको कौन-से सीखने के तरीके अपने लिए सबसे ज्यादा उपयोगी लगे और क्यों?
5. आप अलग-अलग परिस्थितियों में विभिन्न तरीकों से कैसे सीख सकते हैं? उदाहरण देकर बताएँ।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

कुछ विद्यार्थियों को रोल-प्ले के आधार पर अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें-

- उन्होंने क्या महसूस किया?
- उन्होंने क्या देखा? और
- वे असल ज़िंदगी की परिस्थितियों में कैसी प्रतिक्रिया देंगे?

कक्षा में ज़्यादा से ज़्यादा शेयरिंग ली जाए।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

रोल-प्ले करना हमें एक अनोखा नज़रिया देता है जिससे हम किसी और की तरह सोचने की कोशिश करते हैं। यह समझना ज़रूरी है कि हम जो भी फैसला लेते हैं उसके कोई न कोई नतीजे ज़रूर होते हैं। इसलिए हम अपने और दूसरों के कार्यों का विश्लेषण करके मिलने वाली सीख को भविष्य के लिए अपना सकते हैं। असल ज़िंदगी के नज़रियों के उदाहरणों/समझ बनाकर, हमें असल ज़िंदगी के नतीजों का सामना किए बिना उनका विश्लेषण करने और उनसे सीखने का मौका मिलता है।

कहानी 7.2 शीरोज: महिला सशक्तिकरण का जाल

परिचय

गतिविधि में हमने देखा कि कैसे किसी व्यक्ति की जिज्ञासा (curiosity) और विश्लेषणात्मक (analytical) नज़रिए से व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास हो सकता है। अब आगे बढ़ते हुए, चलिए सायरी चहल के जीवन के बारे में जानें। उनकी यात्रा के माध्यम से, हम सीखेंगे कि लगातार विश्लेषण और सीखना ऐसे रास्ते कैसे बना सकता है जो न केवल एक व्यक्ति को फायदा पहुँचाते हैं बल्कि पूरे समुदाय को भी मजबूत बनाते हैं।

अनुमानित समय: 1–2 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- विश्लेषण करके सीखना

आप हमेशा महिलाओं द्वारा बाधाओं को तोड़ने के बारे में क्यों पढ़ते हैं?

क्या कभी सायरी चहल के बारे में सुना है?

नहीं, मुझे लेना चाहिए?

बिलकुल! आइए, मैं आपको एक ऐसी महिला के बारे में बताती हूँ जिसने अपनी जिज्ञासा (curiosity) और विश्लेषण (analyse) करने की इच्छाशक्ति से चुनौतियों को मौकों में बदल दिया। तो आप सब तैयार हैं?

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में जन्मी सायरी चहल के शुरुआती साल भले ही सामान्य रहे हों। वह किसी भी अन्य बच्चे की तरह सपनों और आकांक्षाओं से भरी हुई थी। अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी।

https://in.bookmyshow.com/person/sairee-chahal/1050645

हालाँकि, जैसे ही सायरी ने पेशेवर दुनिया में कदम रखा, उन्होंने जल्दी ही उन चुनौतियों को पहचान लिया जिनका महिलाओं को अक्सर सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों को किस्मत मानने की बजाय, सायरी ने जिज्ञासु और विश्लेषणात्मक दिमाग से उनका सामना किया। इन चुनौतियों के असल कारण क्या थे? उनसे कैसे निपटा जा सकता था?

साधारण चींटी के मजबूत इरादे से प्रेरणा लेते हुए, सायरी ने बदलाव लाने की अपनी खोज शुरू की। उनके पहले उद्यम/स्टार्टअप, फ्लेक्सिमॉम्स का मकसद मातृत्व (माँ बनने के बाद के) अवकाश के बाद माताओं को काम पर लौटने में मदद

करना था। हालाँकि, उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि उनके सामने एक बड़ी चुनौती थी: उनके करियर के अलग-अलग हिस्सों में महिलाओं के लिए पर्याप्त संसाधन और नेटवर्क नहीं थे।

भारतीय इंटरनेट-इकोसिस्टम में बड़े जेन्डर-गैप, काम करने की जगह पर विविधता (diversity) की कमी और इंडस्ट्री में महिलाओं की कम संख्या का विश्लेषण करके उन्होंने SHEROES की स्थापना की। यह महिलाओं के लिए करियर-फोकस्ड कम्यूनिटी के रूप में शुरू हुई। SHEROES महिलाओं के लिए पेशेवर और व्यक्तिगत रूप से विकसित होने की एक अच्छी जगह है। यह केवल ब्रांडिंग में बदलाव नहीं था, बल्कि घंटों के विश्लेषण, बातचीत, फीडबैक और एक समावेशी (inclusive) स्थान बनाने के अभियान पर आधारित बदलाव था।

जो चीज़ सायरी को अलग करती थी, वह थी उनकी सुनने, सीखने और फिर अपनाने की क्षमता। SHEROES प्लेटफॉर्म पर हर बातचीत के साथ, उन्हें नया नज़रिया मिला जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि समुदाय की ज़रूरतें पूरी हों। पूरे भारत से महिलाओं ने SHEROES से संपर्क किया। वे चर्चा करना चाहते थे- 'मैं काम पर कैसे वापस आऊँ, काम ढूँढू, थोड़े समय काम करूँ, सैलरी पर बातचीत कैसे करूँ' और भी बहुत कुछ। जल्द ही वे स्वास्थ्य, रिश्ते, ससुराल, स्टार्टअप, आंत्रप्रेन्योरशिप और बाकी सभी चीज़ों पर चर्चा करना चाहते थे। सायरी ने अवसर का विश्लेषण किया और सलाह देने के साथ ही मीटिंग्स शुरू की। उनके फैसले हमेशा समझने, विश्लेषण करने और सीखने की जगह से आते थे।

आज, SHEROES महज एक प्लेटफॉर्म से कहीं ज़्यादा है; यह एक आंदोलन है। यह सायरी के गहरे विश्लेषण और प्रयोग का सुबूत है। महिलाओं की डिजिटल आदतों को समझने से लेकर उनकी छिपी ज़रूरतों को पूरा करने तक, SHEROES के साथ सायरी की यात्रा लगातार सीखने की शक्ति का एक बेहतरीन उदाहरण है।

'अगर हम सीखने के इच्छुक हैं तो हमारी चुनौतियाँ हमारी सबसे बड़ी शिक्षक हो सकती हैं।'

-सायरी चहल

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

कहानी के बाद, कक्षा को इन प्रश्नों से जोड़ें:

- सायरी चहल की स्थितियों को विश्लेषण करने की क्षमता ने उनकी सफलता में कैसे योगदान दिया?
- क्या आप ऐसे किसी उदाहरण को याद कर सकते हैं, जहाँ आपने जो सीखा उसके आधार पर आपने अपना नज़रिया बदल दिया हो?
- आपको क्या लगता है, सायरी के विश्लेषणात्मक नज़रिए ने महिलाओं को कैसे प्रभावित किया? उसके कौशल ने उसे समस्याओं को हल करने में कैसे मदद की?

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

सायरी चहल की कहानी हर स्थिति से सीखने के लिए खुले रहने के महत्त्व को बताती है। चुनौतियों का विश्लेषण करके और नज़रिए के आधार पर उसे अपनाने, सायरी ने न केवल अपने भाग्य को आकार दिया, बल्कि उन्होंने अनगिनत अन्य महिलाओं के लिए भी रास्ता बनाया। फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को इस तथ्य पर विचार करने और अपने समूहों में चर्चा करने के लिए कह सकता है– प्रतिकूल परिस्थितियों में, एक विश्लेषणात्मक दिमाग हमारी सबसे बड़ी संपत्ति हो सकती है।

गतिविधि 7.3 हम सीखेंगे साथ-साथ

परिचय

ष्शीरोजष् कहानी में हमने जाना कि सायरी चहल ने हर स्थिति को पहले समझा और फिर उस पर कोई ऐक्शन (action) लिया। और साथ ही साथ अलग-अलग तरीकों से सीख कर अपने काम को एक अलग मुकाम पर पहुँचाया। साथ ही, उन्होंने सीखने के विभिन्न माध्यम अपनाए और अपने उद्यम को एक नए स्तर पर ले गईं। इस गतिविधि में हम एक-दूसरे से सीखना (peer learning) का अभ्यास करेंगे।

आवश्यक सामग्रीः

- इस गतिविधि के लिए एक खुले स्थान की ज़रूरत होगी।

अनुमानित समयः 1-2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः सामूहिक कार्य

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- सीखने के अलग-अलग तरीकों को पहचानना

फ़ैसिलिटेटर नोट

1. सुनिश्चित करें कि दोनों बार अंदर वाले गोले में 10 नए विद्यार्थी चर्चा का हिस्सा बने।
2. बाहर बैठे विद्यार्थियों को अंदर गोले में अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. ध्यान रखें कि चर्चा के 5 मिनट बाद ही नए विद्यार्थी अंदर आ सकते है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

- सभी विद्यार्थी कक्षा में दो संकेंद्रित गोलों (Concentric Circles) में इस तरह बैठ जाएँ।
- किन्हीं 10 विद्यार्थियों को अंदर वाले गोले में बैठने के लिए आमंत्रित करें और बाकी सभी विद्यार्थियों को बाहर वाले गोले में बैठने को कहें।
- अब विद्यार्थियों को बताएँ कि इस गतिविधि में अंदर बैठे विद्यार्थियों को दैनिक जीवन के किसी विषय पर चर्चा करनी होगी जो बाहर बैठे विद्यार्थी ध्यान से सुनेंगे।
- फ़ैसिलिटेटर किसी एक विषय का चयन करें (उदाहरण- रोजाना की जिंदगी में व्हाट्सएप्प (Whatsapp) का प्रभाव)
- विद्यार्थियों को चुने गए विषय के फायदे, नुकसान व अन्य बातों पर चर्चा करते हुए एक आपसी सहमति बनानी है।
- चर्चा के बीच में अगर किसी बाहर बैठे विद्यार्थी को चर्चा में भाग लेना हो तो वह-
  - अंदर बैठे किसी विद्यार्थी के कंधे पर हाथ रखे और वे दोनों विद्यार्थी अपनी जगह आपस में बदल लें।
- इस तरह से चर्चा 10 से 15 मिनट तक चल सकती है।
- यह गतिविधि 2 बार दोहराएँ।
  - नया विषय देते हुए 10 नए विद्यार्थियों को अंदर वाले गोले में बैठने के लिए आमंत्रित करें। उदाहरण- "स्कूल मैगजीन (magazine) कैसी होनी चाहिए"।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

विद्यार्थी दो-दो के जोड़े में निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में सोचे और चर्चा करें-

- इस गतिविधि से आपने क्या-क्या सीखा? विस्तार में बताएँ।
- आप सीखने के इस तरीके को अपने रोजाना जिंदगी में कैसे इस्तेमाल कर सकते है?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा कर लेने के बाद कुछ विद्यार्थियों को पूरी कक्षा के साथ गतिविधि से हुई सीख को साझा करने के लिए आमंत्रित करें। जब एक विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ साझा कर ले तब उसी विद्यार्थी को दूसरे किसी विद्यार्थी को आमंत्रित करने के लिए कहें जो पूरी कक्षा के सामने कम बोलता हो। यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक कम से कम 6 विद्यार्थी अपनी बात साझा न कर लें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

इस गतिविधि में हमने अपने साथियों की बातों को सुनकर अपने विचारों का दायरा बढ़ाया और उन्हें साझा किया। हम सभी के अनुभव और कौशल अलग-अलग होते है। ऐसे में ध्यान से सुनना, अपने अनुभवों पर विचार करना और दूसरों के अनुभवों से भी सीख कर आगे बढ़ना बहुत जरूरी हो जाता है।

यूनिट का निष्कर्ष

विश्लेषण हमें निम्नलिखित पहलुओं में मदद कर सकता है:

- समस्याओं और अवसरों को पहचानें
- समस्याओं के कारणों और हमारे कार्यों के संभावित नतीजों को समझें
- बेहतर फैसले लें
- हमारी गलतियों से सीखें
- हमारे प्रदर्शन में सुधार करें

चिंतन एवं चर्चा | साझा करें

1. किसी ऐसे कार्य के बारे में बताएँ जो आप हमेशा से सीखना चाहते है। आप उसे किन-किन माध्यमों से सीख सकते है?
2. अपने अनुभवों का विश्लेषण करके क्या आप अपने बारे में कुछ नया जान सकें? विस्तार से बताएँ।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

इस यूनिट में आपने सीखने के अलग-अलग तरीकों को जाना और अपने अनुभवों पर विश्लेषण करने के महत्त्व को समझा। हमारे जीवन में समय के साथ-साथ अनेक नए लोग, नई परिस्थितियाँ हमेशा आती रहेंगी। अगर हम अपनी भावनाओं और अनुभवों के प्रति सजग रहे तो हम हर परिस्थिति का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे, साथ ही अपने आस-पास के लोगों से भी सीखने में नहीं हिचकिचाएँगे। स्टूडेंट्स स्पेशल गतिविधियाँ करते समय विद्यार्थी प्रत्येक नए टॉपिक का विश्लेषण करेंगे और सीखेंगे।

फ़ैसिलिटेटर नोट

नीचे दिए गए केसलेट को पढ़ें और विद्यार्थियों से इस प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बारे में और अधिक जानने के लिए कहें।

रीड टू लीड

डोसा प्लाजा: प्रेम गणपति का विश्लेषणात्मक उदय

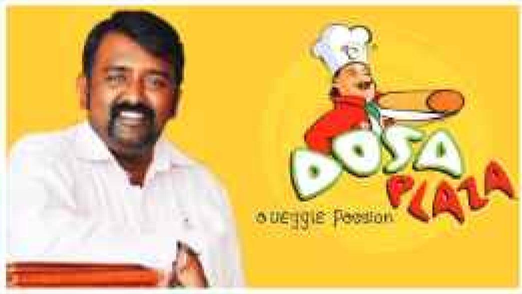

1973 में तमिलनाडु के तूतीकोरिन जिले में जन्मे प्रेम गणपति ने गहन अवलोकन और विश्लेषण के माध्यम से आत्म-सुधार (self & improvement) की यात्रा शुरू की। 17 साल की उम्र में स्थानीय भाषा न जानने के कारण उन्हें मुंबई में अकेला छोड़ दिया गया था। बर्तन धोने से शुरुआत करते हुए, वह एक वेटर बन गए, अलग-अलग लोगों के साथ बातचीत की और ग्राहकों की प्राथमिकताओं (preference) को समझा। सफाई के महत्त्व को पहचानते हुए, उनका छोटा-सा स्टॉल ष्डोसा प्लाजाष हिट हो गया, यहाँ तक कि बड़े-बड़े लोग भी आने लगे। उनकी विश्लेषणात्मक मानसिकता (analytical mindset) उन्हें साइबर कैफे तक ले गई, जहाँ उन्होंने अपने बिज़नेस को बढ़ाने के तरीकों ढूँढें। जिसके साथ कमरे में रहते थे उससे इंटरनेट सिखा और करियर में आगे बढ़े। उनका साधारण-सा डोसा स्टॉल 'डोसा प्लाज़ा' में बदल गया, जो आज भारत, संयुक्त अरब अमीरात, न्यूजीलैंड और ओमान में फैले 78 आउटलेट्स की एक सीरीज है। उनके शब्दों में, 'असली विद्यार्थी वह है जो हर व्यक्ति और हर अनुभव से सीखेगा।'

प्रेम गणपति के मामले में, विश्लेषण से उन्हें मदद मिली:

- अपने ग्राहकों की जरूरतों को पहचानें
- उसके खाना पकाने के कौशल में सुधार करें
- अपने रेस्टोरेंट में स्वच्छता बनाए रखें
- नए व्यंजनों (dishes) के साथ प्रयोग करें
- उनका व्यवसाय बढ़ाएँ

यूनिट 08

गिरकर संभलना

F3F7A4

यूनिट का परिचय

सुश्री भाटिया (अध्यापक) स्कूल मेले के बारे में घोषणा करती हैं और विद्यार्थियों से इसमें भाग लेने के लिए आइडियाज लाने के लिए कहती हैं।

प्रिया, मेरे पास एक बहुत बढ़िया आइडिया है। चलो स्कूल-मेले में समोसे बेचते हैं। हम खूब पैसा कमाएँगे!

बढ़िया आइडिया है! लेकिन हमने पहले कभी समोसा नहीं बनाया है।

अरे! हम सीख लेंगे। चलो, यह करते हैं।

अर्जुन और प्रिया घर पर समोसा बनाने का अभ्यास करते हैं।

यह हमारा पाँचवाँ प्रयास है। हमें सही आकार क्यों नहीं मिल पाता?

शायद हमारा समोसा कुछ अलग ही शेप लेना चाहता है बजाय कि त्रिकोण टोपी की तरह।

हार नहीं मानूँगा! फिर से कोशिश करते हैं।

अब, हमने अभी तक जो समोसे बनाए हैं, उनके लिए अपने परिवारों से फीडबैक लेते हैं।

और शायद कुछ ट्यूटोरियल देख सकते हैं? हम दूसरों के अनुभवों से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

कुछ दिनों तक प्रैक्टिस करने के बाद, अर्जुन और प्रिया अपने समोसे स्कूल-मेले में प्रेजेंट करने के लिए तैयार हैं।

ऐसा क्यों है कि हम अपनी असफलताओं और अनिश्चितताओं (uncertainties) से परेशान हो जाते हैं? असफलता दुनिया का अंत नहीं है। वास्तव में, असफलता हमें अपनी क्षमताओं पर सोचने का मौका देती है। एक नए और बेहतर नज़रिए के साथ काम करने से अंत में सफलता मिलती है। ऐसा सकारात्मक रवैया न केवल हमारा आत्मविश्वास बढ़ाता है बल्कि यह हमें लक्ष्य हासिल करने के लिए नए तरीके आजमाने के लिए भी प्रेरित करता है।

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

इस यूनिट में, विद्यार्थी निम्नलिखित क्षमताओं का अभ्यास करके असफलता मिलने के बाद भी प्रयास करते रहना सीखेंगे:

1. **दृढ़/मजबूत बने रहना**
2. **असफलता से सीखना**
3. **असफलता का खुद और दूसरों पर प्रभाव समझना**

यूनिट का प्रवाह

गतिविधि/कहानी	अनुमानित पीरियड	उद्देश्य (क्या सीखेंगे)
यूनिट की शुरुआत	1 पीरियड	
गतिविधि असफलता की सीख	1-2 पीरियड	• असफलता से सीखना • असफलता का स्वयं एवं दूसरों पर प्रभाव समझना
कहानी चुनौती के माध्यम से लचीलापन: फाल्गुनी नैय्यर की 'नाइका'	1-2 पीरियड	• दृढ़ता/मजबूत(टिके रहना) • असफलता से सीखना
गतिविधि टावर बनाना	1-2 पीरियड	• असफलता से सीखना
यूनिट का निष्कर्ष रीड टू लीड: Quick Heal (क्विक हील)	1 पीरियड	

विद्यार्थियों के साथ यूनिट की शुरुआत

विद्यार्थियों को अपने निजी जीवन से एक उदाहरण साझा करने के लिए कहें जब वे किसी काम में असफल रहे और निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- जब भी आप किसी काम में असफल हुए, तो क्या आपने उसे दोबारा आजमाने के बारे में सोचा?

फ़ैसिलिटेटर को अपनी किसी भी असफलता को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इससे विद्यार्थी अपनी बात खुलकर कहने के लिए प्रेरित होंगे और असफलता से जुड़ी शर्मिंदगी खुद पर हावी नहीं होने देंगे।

गतिविधि 8.1 असफलता से सीख

परिचय

कई बार असफलताएँ हमारे आगे बढ़ने में रुकावट बनती हैं, लेकिन इसको रचनात्मक नजरिए से देखने से हमें नए कौशल सीखने के काफी अवसर मिलते हैं। इसलिए हार मानने की बजाय अलग-अलग तरीके आजमाना हमें आगे का रास्ता दिखाता है। अब हम देखेंगे कि क्या हम नाकाम होकर दोबारा कोशिश करने के लिए तैयार हैं?

आवश्यक सामग्रीः

- समाचार पत्र की डबल शीट (प्रत्येक समूह)

अनुमानित समयः 1–2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्यः 2–2 के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- असफलताओं से सीखना
- असफलता का स्वयं और दूसरों पर प्रभाव समझना

फ़ैसिलिटेटर नोट

गतिविधि के दौरान कक्षा में रचनात्मक के स्तर पर कुछ कठिनाई हो सकती है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

- विद्यार्थियों के दो-दो के जोड़े बनाएँ।
- प्रत्येक जोड़े को अख़बार की डबल शीट पर खड़े होने के लिए कहें।
- प्रत्येक जोड़े को अख़बार पर खड़े होकर, बिना इसे फाड़े, केवल अपने पैरों का उपयोग करके, अख़बार को पलटना होगा।
- गतिविधि में 30 सेकंड के बाद सभी को रुकने के लिए कहें। अब, जो जोड़े पहले प्रयास में पेपर को पलट नहीं सके, वे इसे एक मिनट के भीतर फिर से दूसरी बार कोशिश करेंगे।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

गतिविधि के बाद, विद्यार्थियों से निम्नलिखित प्रश्नों पर जोड़ियों में चर्चा करने के लिए कहें-

- असफल होने पर आपकी और आपके साथी की क्या प्रतिक्रिया थी और इसका एक-दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ा?
- यह गतिविधि आसान नहीं थी। आपने पहले प्रयास में ऐसा क्या सीखा कि जिससे आपका दूसरा प्रयास बेहतर हो गया?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | **सीखें साथियों के साथ** | साझा करें

चर्चा समाप्त होने के बाद, कुछ जोड़ियों को अपनी बात साझा करने के लिए कहें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | **साझा करें**

अक्सर साथ में काम करते समय हम यह भूल जाते हैं कि हमारा मूड, भावनाएँ और प्रतिक्रियाएँ दूसरों पर असर डालती हैं। जो व्यक्ति हार से सीखता है, वह समूह में सकारात्मक माहौल बनाता है। इसके विपरीत दूसरों को दोष देने वाला व्यक्ति नकारात्मकता फैलाता है। इसलिए, दूसरों के साथ काम करने के लिए, हमें मुश्किल परिस्थितियों में भी, शांति से अपना काम जारी करते रहना चाहिए।

कहानी 8.2

चुनौती के माध्यम से लचीलापनः फाल्गुनी नैय्यर की 'नाइका'

परिचय

अब तक की गतिविधियों में हमने देखा कि लगातार प्रयास करके हम चुनौतियों से पार पा सकते हैं। आइए, अब एक ऐसी महिला की कहानी पर नज़र डालते हैं, जिसने मुख्य रूप से सफलता इसलिए हासिल की क्योंकि उन्होंनें बार-बार असफलताओं का सामना करने के बाद भी कभी हार नहीं मानी और लगातार कोशिश करती रही। किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करना स्वयं पर दृढ़ (पक्का) विश्वास का सुबूत है। यही सोच सार्थक और प्रभावशाली सफलता का आधार बनती है।

अनुमानित समयः 1-2 पीरियड

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- दृढ़/मजबूत बने रहना
- असफलता से सीखना

भूमिका

उस समय के बारे में सोचें जब आपको किसी बाधा(मुश्किल) का सामना करना पड़ा। क्या आपने हार मान ली या कोई रास्ता ढूँढ लिया? 'क्या आप कभी किसी चीज़ को लोकप्रिय/मशहूर बनाना चाहते थे लेकिन रास्ते में आने वाली समस्याओं के कारण डर लगता था?' आइए, मजबूत होने और समस्याओं का सामना करने के बाद फिर से खड़े होने के बारे में बात करें। कई बार, सफलता की मशहूर कहानियाँ कठिन समय से शुरू होती हैं। स्टार्टअप, या नए व्यवसायों के पास कभी हार न मानने की कई कहानियाँ हैं। आइए, नाइका के पीछे की प्रेरणा शक्ति फाल्गुनी नय्यर की यात्रा के बारे में जानें और देखें कि कैसे उन्होंने चुनौतियों को ब्यूटी इंडस्ट्री में कदम रखने की सीढ़ियों में बदल दिया।

कोटक महिंद्रा बैंक में 18 साल लंबे और बढ़िया करियर के साथ, फाल्गुनी नय्यर फाइनेंशियल वर्ल्ड (अर्थ जगत) में एक सम्मानित नाम था। हालाँकि, जिस उम्र में कई लोग आगे की आरामदायक ज़िंदगी के बारे में सोच रहे होते हैं, फाल्गुनी आगे बढ़ने की चाहत रखती हैं। यह सिर्फ कुछ नया शुरू करने के बारे में नहीं था; यह एक ज़रूरत की पहचान करने के बारे में था। उन्होंने भारतीय बाजार में एक कमी देखी- विशेष रूप से ब्यूटी-प्रॉडक्ट के लिए कोई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म नहीं था। और इसलिए, 2012 में नाइका की शुरुआत की गई।

फाल्गुनी नय्यर

नाइका की शुरुआत इतनी आसान नहीं थी। प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय ब्यूटी ब्रांडों को भारत में एक उभरते प्लेटफॉर्म पर भरोसा करने के लिए राजी करना एक मुश्किल काम था। शक हुआ। सवाल बने रहे। क्या नाइका को एक जोखिम के रूप में ये सभी ब्रांड उठाने को तैयार थे? इसके साथ-साथ कंपनी के ऑपरेशन से जुड़ी समस्याएँ भी थी- देरी से डिलीवरी, ऑर्डर में गलतियाँ जिसके कारण कस्टमर असंतुष्ट थे।

लेकिन फाल्गुनी ने इन असफलताओं को अपनी हार के रूप में देखने के बजाय अवसर के रूप में देखा। हरेक शिकायत और अड़चन उनके लिए एक सबक थी। एक सबक जिसने उन्हें दिखाया कि कमियाँ कहाँ थीं और कैसे समाधान कर सकते हैं।

टेक्नॉलजी की मदद से, उन्होंने खरीदारी के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए वर्चुअल मेकअप ट्रायल जैसी सुविधाएँ पेश कीं। लेकिन जब चीजें सही से होने लगी थीं, 2020 अपने साथ एक खतरनाक चुनौती लेकर आया, कोविड-19 महामारी। यह सिर्फ एक चुनौती नहीं थी, यह एक पहाड़ था। लेकिन इस भारी रुकावट से फाल्गुनी की नजर धुंधलाई नहीं। इसके बजाय, उन्होंने आगे बढ़ने का अवसर देखा। वे हर रोज़ प्रयोग में आने वाली चीजों के साथ नाइका की तरफ से पेश किए जाने वाले सामान में विविधता लाई, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि ब्रांड उस मुश्किल समय में भी काम की और मददगार बनी रहे।

आज, नाइका न केवल एक ब्यूटी प्लेटफॉर्म के रूप में बल्कि फाल्गुनी की कभी न हारने वाले जज़्बे का सुबूत भी है। उनकी यात्रा हमें एक महत्त्वपूर्ण सबक सिखाती है- मुश्किलें किसी तरह की रुकावट नहीं हैं; वे हमें हमारी मंजिल तक ले जा रही हैं। FY-23 के दौरान कंपनी का कुल GMV 9,743 करोड़ रुपये और नेट रेवेन्यू 5,143 करोड़ रुपये है। नाइका ने पिछले कुछ वर्षों में ब्यूटी और व्यक्तिगत देखभाल (बीपीसी), और फैशन वर्टिकल दोनों में कई ब्रांड लॉन्च या अधिग्रहण (acquired) किए हैं। यदि आप चुनौतियों को स्वीकार करते हैं और उन्हें सीखने के अवसर के रूप में देखते हैं, तो कोई भी समस्या ऐसी नहीं है कि जिसे सुलझाया ना जा सके। फाल्गुनी नय्यर की कहानी सिर्फ एक ब्रांड बनाने की नहीं है; यह लचीलेपन, मजबूत इरादे और गिरकर फिर से उठाने की आदत के बारे में है।

चिंतन एवं चर्चा — साझा करें

- फाल्गुनी ने समय के हिसाब से ढलने की खूबी कैसे दिखाई, खासकर कोविड-19 महामारी के दौरान?
- क्या आप ऐसे समय के बारे में सोच सकते हैं, जब आपके जीवन में किसी झटके या हार ने आपको कुछ खास सबक सिखाया हो?
- आपको अपने जीवन में अतीत में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? इन बाधाओं को दूर करने के लिए आपकी ताकत और प्रेरणा का स्रोत क्या था?

चिंतन एवं चर्चा

साझा करें

नाइका के साथ फाल्गुनी नय्यर की यात्रा एक महत्त्वपूर्ण सीख देती है: असफलताओं से उबरने की शक्ति। अगर विकास की सोच के साथ देखा जाए तो हर असफलता सफलता की एक सीढ़ी बन सकती है। फाल्गुनी की तरह, हम भी सीखकर, जरूरत के हिसाब से ढलकर/बदलकर और लगे रहकर अपनी चुनौतियों को अवसरों में बदल सकते हैं। जैसे ही हम अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं। याद रखें कि ठोकर खाना स्वाभाविक है, लेकिन महत्त्वपूर्ण है गिरकर फिर से उठने और आगे बढ़ने की हमारी इच्छाशक्ति।

नेल्सन मंडेला के शब्दों में, 'मुझे मेरी सफलताओं से मत आंकिए, मुझे इस बात से आंकिए कि मैं कितनी बार गिरा और फिर उठ खड़ा हुआ।' आइए चुनौतियों को स्वीकार करें, एक-दूसरे का साथ दें और हमेशा गिर कर संभलने का प्रयास करें।

नेल्सन मंडेला

गतिविधि 8.3 टावर बनाना

परिचय

चुनौतियाँ हमें कुछ नया करने, सीखने और बढ़ने के अवसर प्रदान करती हैं। अक्सर, हमारे शुरुआती कोशिश मनचाहे नतीजे नहीं दे पाते हैं। लेकिन हार मानने के बजाय, यदि हम सीखें और ढलें/बदलाव करें, तो हम आश्चर्यजनक सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं। यह गतिविधि विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती है कि वे शुरुआती विफलताओं से कुछ अनूठा बनाने के लिए सीखने की दोहराने वाली प्रक्रिया का अनुभव करें।

आवश्यक सामग्री:

- ताश का एक पैकेट (प्रत्येक समूह के लिए)
- कॉपी (जर्नल) और पेन

अनुमानित समय: 1–2 पीरियड

सामूहिक/व्यक्तिगत कार्य: 4–5 विद्यार्थियों के समूह

उद्देश्य (क्या सीखेंगे)

- असफलता से सीखना।

फ़ैसिलिटेटर नोट

एक सकारात्मक माहौल को बढ़ावा दें जहां विद्यार्थी गलतियों या निर्णय के डर के बिना प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित महसूस करें।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

1. विद्यार्थियों को 4-5 के समूहों में बाँटें।
2. प्रत्येक समूह को ताश के पत्तों का एक पैकेट प्रदान करें।
3. केवल 7 मिनट में दिए गए कार्डों का उपयोग करके समूहों को सबसे ऊँचा टावर बनाने की चुनौती दें।
    - प्रक्रिया के दौरान, उन्हें नोट करना चाहिए:
    - शुरुआती रणनीतियाँ (स्ट्रैटिजी) या डिज़ाइन।
    - चुनौतियों या असफलताओं का सामना करना पड़ा।
    - उन विफलताओं के जवाब में किए गए सुधार।
4. निर्धारित समय के बाद या एक बार जब वे एक डिजाइन हासिल कर लेते हैं जिससे वे संतुष्ट हो जाते हैं, तो सभी टावरों का अवलोकन (देखने) करने के लिए गैलरी वॉक हो सकता है।

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | साथियों के साथ सीखना | साझा करें

गतिविधि के पूरा होने के बाद, समूहों से चर्चा करने के लिए कहें:

1. आपको किन विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा? आपने उन पर काबू पाने के लिए क्या किया?
2. जब आपके शुरुआती डिज़ाइन काम नहीं आए तो आपको कैसा महसूस हुआ? तब समूह में क्या विचार थे?
3. आपका दूसरा प्रयास आपके पहले प्रयास से किस प्रकार अलग था? यदि फिर से प्रयास किया जाए तो आप क्या अलग/नया प्रयास करेंगे?

कैसे करें | चिंतन एवं चर्चा | सीखें साथियों के साथ | साझा करें

फ़ैसिलिटेटर निम्नलिखित पर चर्चा को बढ़ावा दे सकता है:

1. समस्या-समाधान में अलग-अलग नज़रियों का महत्त्व।
2. अपने नज़रिए को सुधारने या पूरी तरह से बदलने के बारे में उन्हें कैसा महसूस हुआ।
3. चुनौतियों का सामना करने में लचीलेपन और दृढ़ता/मजबूती का महत्त्व।

जीवन, इस गतिविधि की तरह, अक्सर हमारे सामने ऐसी चुनौतियाँ लाकर खड़ी करता है जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की हो। हमारी पहली रणनीतियाँ हमेशा काम नहीं कर सकतीं, और यह ठीक है। जो बात मायने रखती है वह है ढल जाना, सीखने और मजबूत रहने की हमारी क्षमता। प्रत्येक चुनौती छुपे हुए अवसर के समान है, इसे पहचानने के लिए सही नज़रिए की ज़रूरत रहती है।

यूनिट का निष्कर्ष

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

इस यूनिट को समाप्त करने के बाद, एक रणनीति बनाएँ जो आपको प्रयास जारी रखने और असफलताओं से सीखने के लिए प्रेरित करेगी। अपने आस-पास के अन्य विद्यार्थियों से इस पर चर्चा करें। विद्यार्थी 'स्टूडेंटस स्पेशल' में अपने प्रदर्शन का उदाहरण ले सकते हैं।

चिंतन एवं चर्चा | **साझा करें**

हमारे हर रोज़ की ज़िंदगी में, ऐसा समय आता हैं जब हम सफल होते हैं, और ऐसा समय भी आता है जब हम असफल होते हैं, लेकिन यह बिलकुल सामान्य है। कई बार सफलता एक बार में नहीं मिलती, बार-बार मिलने वाली असफलताएँ हमें अपनी गलतियों से सीखने के लायक बनाती हैं और हमें बेहतर और अधिक प्रभावी तरीके से काम करने में मदद करती हैं। इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और इच्छाशक्ति मजबूत होती है। वास्तव में, दुनिया के सभी मशहूर आविष्कारों के पीछे यही नज़रिया था।

लाइट बल्ब का आविष्कार करते समय एडिसन ने 1,000 असफल प्रयास किए। किसी ने पूछा, 'इतनी असफल कोशिशों के बाद भी आप रुके क्यों नहीं?' एडिसन ने उत्तर दिया कि 'मैं असफल नहीं हुआ हूँ, बल्कि लाइट बल्ब न बनाने के 1000 तरीके खोजे हैं।'

फ़ैसिलिटेटर नोट

नीचे दिए गए केसलेट को पढ़ें और विद्यार्थियों से इन प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बारे में और अधिक जानने के लिए कहें।

रीड टू लीड

क्विक हील की बहादुरी की कहानी

संजय काटकर (बांये) और कैलाश काटकर (दांये)

पुणे में कैलाश और संजय काटकर दोनों भी एक छोटे से कमरे में रहते थे। कैलाश रेडियो की मरम्मत करता था जबकि संजय ने कंप्यूटर-साइंस की पढ़ाई की थी। कंप्यूटर में फ्लॉपी से आने वाले वायरस का कोई उपाय नहीं था और वाइरस से कंप्यूटर खराब हो जाता था। इसके लिए संजय ने एक एंटीवायरस बनाया। फिर दोनों भाइयों ने 1995 में एंटीवायरस सॉफ्टवेयर बेचने के लिए क्विक हील की शुरुआत की। शुरुआत में थोड़ी मुश्किलें आई जैसे कि लोगों का सॉफ्टवेयर या वाइरस के बारे में न जानना, योग्य इंजीनियर न मिलना आदि। लेकिन हार मानने के बजाय उन्होंने अपनी क्षमताओं पर ध्यान दिया और पाँच साल तक संघर्ष करते हुए ब्रांडिंग और ऑटोमेशन की तकनीक पर ध्यान लगाया। धीरे-धीरे क्विक हील आगे बढ़ती रही और इंटरनेशनल लेवल पर मशहूर हो गई। 2010 तक, उन्होंने विदेशों में विस्तार किया और आज अपने छोटे-से बिज़नेस को 400 करोड़ की साइबर सुरक्षा कंपनी में बदल दिया। उनकी कहानी दृढ़ता और गिरकर संभलने की ताकत को सामने लाती है।

C-1 माइंडफुलनेस

U2U4U3

माइंडफुलनेस (Mindfulness) का अर्थ है पूरा दिमाग लगाकर वर्तमान के प्रति सजग बने रहने की अवस्था। माइंडफुलनेस की प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चों को अपने वातावरण, संवेदनाओं, विचारों एवं भावनाओं के प्रति सजग करना है, जिससे वे अपने सामान्य व्यवहार में सोच-विचार करके बेहतर प्रतिक्रिया (response) देने में सक्षम हो जाएँ। यह एक सरल प्रक्रिया है जो कोई भी, कहीं भी और कभी भी कर सकता है। माइंडफुलनेस के अभ्यास से कई फायदे हैं:

ध्यान बनाए रखना

पढ़ाई या अन्य काम, स्कूल में या घर पर

काम के प्रति सजग रहना

काम या बात सही है या गलत

ध्यान रखने की बातें :

करें

- स्वयं की सक्रिय भागीदारी और सजगता
- प्यार, सौहार्द, विनम्रता के साथ शांत वातावरण
- सहजता और भागीदारी

न करें

- शब्द या मंत्र का उच्चारण
- तनावपूर्ण अभिव्यक्ति, जैसे- डाँट, सख्त शब्द, दबाव
- विधार्थी का नाम ले कर सूचना

माइंडफुलनेस का कार्यक्रम:

- दैनिक EMC क्लास की शुरुआत में 3-5 मिनट माइंडफुल चेक-इन और अंत में 1-2 मिनट साइलेंट चेक-आउट
- हर महीने के पहले सोमवार (या उसके अगले दिन, यदि सोमवार को छुट्टी हुई), EMC क्लास में माइंडफुलनेस गतिविधि

हर रोज़ की क्लास में माइंडफुलनेस	हर महीने के पहले सोमवार को माइंडफुलनेस
शुरूआत: माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)	**शुरूआत:** माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)
साधारण EMC क्लास (प्रत्येक दिन की EMC क्लास में सिर्फ चेक-इन और चेक-आउट की प्रक्रिया होगी। माइंडफुलनेस के अनुभव पर चर्चा या माइंडफुलनेस गतिविधि केवल महीने के पहले सोमवार को होगी)	माइंडफुलनेस का विस्तृत सत्र (इनमें से कोई भी एक) • माइंडफुलनेस का परिचय • Mindful Listening • Mindful Silence • Mindful Breathing
अंत: साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट)	**अंत:** साइलेंट चेक-आउट (1-2 मिनट)

हर रोज़ की क्लास में माइंडफुलनेस

शुरुआतः माइंडफुल चेक-इनः 3-5 मिनट

निर्देशः

1. शिक्षक सभी विद्यार्थियों से कहें कि वे आरामदायक स्थिति में बैठकर, चाहें तो कमर सीधी करके आँखें बंद कर लें, हाथ डेस्क पर या अपने पैरों पर रख सकते हैं। अगर किसी को आँखें बंद करने में मुश्किल महसूस हो रही हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
2. विद्यार्थियों से कहें कि वे अपना-ध्यान पहले अपने आस-पास के वातावरण में उत्पन्न हो रही आवाज़ों पर ले जाएँ और उसके बाद अपनी साँसों की प्रक्रिया पर ले जाएँगे। विद्यार्थियों को बताएँ कि ये आवाज़ें धीमी हो सकती हैं...या तेज, रुक-रुक कर आ सकती हैं...या लगातार।

(20 सेकंड रुकें)

3. विद्यार्थियों से कहें कि जैसी भी हों, इन आवाज़ों के प्रति सजग हो जाएँ। ध्यान दें कि ये आवाज़ें कहाँ से आ रही हैं।

(30 सेकंड रुकें)

4. विद्यार्थियों से कहें कि अब वे अपना ध्यान अपनी साँसों पर लेकर जाएँ। साँसों के आने और जाने पर ध्यान दें।
5. विद्यार्थियों को बताएँ कि वे साँसों को किसी प्रकार बदलने की कोशिश न करें। केवल अपनी साँसों के प्रति सजग हो जाएँ।

(10 सेकंड रुकें)

6. विद्यार्थियों से कहें कि वे ध्यान दें कि साँस कब अंदर आ रही है और कब बाहर जा रही है। अंदर आने और बाहर जाने वाली साँस में कोई अंतर है या नहीं। क्या ये साँसें ठंडी हैं या गरम.. .तेजी से आ रही हैं या आराम से... हल्की हैं या गहरी।
7. विद्यार्थियों से कहें कि वे अपनी हर साँस के प्रति सजग हो जाएँ।

(20 सेकंड रुकें)

8. अब विद्यार्थियों से कहें कि वे धीरे-धीरे अपना ध्यान अपने बैठने की स्थिति पर ले आएँ और जब भी ठीक लगे, वे अपनी आँखें खोल सकते हैं।

अंतः साइलेंट चेक आउट (1-2 मिनट)

फ़ैसिलिटेटर नोटः

- साइलेंट चेक-आउट के बाद कोई प्रश्न नहीं।
- विद्यार्थी स्वेच्छा से अपने अनुभव साझा कर सकते हैं।

निर्देशः

1. अपनी आँखें बंद करें या नीचे की ओर देखते हुए उन्हें खुला रखें - जो भी आरामदायक लगे।
2. आज की गतिविधि/कहानी/चर्चा से उत्पन्न विचारों और भावनाओं पर विचार करें।
3. मौन चिंतन के लिए 1-2 मिनट का समय निकालें।

(इस दौरान कोई और निर्देश नहीं)

याद रखें, माइंडफुलनेस का अर्थ बिना किसी निर्णय के उपस्थित और जागरूक रहना है। प्रक्रिया का आनंद लें।

सत्र-1 (माइंडफुलनेस का परिचय)

शुरुआत: माइंडफुल चेक-इन: 3-5 मिनट

गतिविधि: माइंडफुलनेस का परिचय: 20-30 मिनट

फ़ैसिलिटेटर नोट:

- नीचे दिए गए बिंदुओं पर विद्यार्थियों से उनके स्तर के अनुसार, उनके जीवन से संबंधित उदाहरणों पर चर्चा करें।
- सभी विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए प्रेरित करें और सभी उत्तरों को स्वीकार करें।

निर्देश:

- "EMC क्लास हर महीने के पहले सोमवार को आप माइंडफुलनेस की अलग-अलग गतिविधियाँ करेंगे।"

प्रश्न:

- क्या कोई बताना चाहेगा कि आपके अनुसार माइंडफुलनेस क्या है?
- पिछले साल माइंडफुलनेस के अभ्यास से आपको क्या मदद मिली?

निर्देश:

- "शांत बैठ कर, आँखें बंद रखकर मन में जो भी विचार आते हैं उन्हें आने दें।"

(1 मिनट रुकें)

- अब आँखें खोलें।

प्रश्न:

- कितने विद्यार्थियों के विचार बीते हुए पल/घटना के बारे में थे?
- कितने विद्यार्थियों के विचार आने वाले पल की प्लानिंग/चिंता के बारे थे?
- कितने विद्यार्थियों के विचार में या इस पल/वर्तमान में थे?

साझा करें:

- ज्यादातर यह पाया जाता है कि अधिकतर विचार भूतकाल या भविष्य में रहते हैं, जबकि हम कार्य वर्तमान में करते हैं।
- माइंडफुल(Mindful) का अर्थ है, तरह-तरह के विचारों में डूबा दिमाग जिसे विचारों की उलझन में खयाल ही नहीं है कि वह क्या कर रहा है।
- माइंडफुल (Mindful) का अर्थ है, पूरे ध्यान के साथ कोई भी क्रिया करना। इस अभ्यास को माइंडफुलनेस कहते हैं। वर्तमान में बने रहना, अभी के प्रति सजग तथा सचेत रहना ही माइंडफुलनेस है।

माइंडफुलनेस के अभ्यास से:

- पढ़ाई के दौरान का ध्यान कक्षा में बनाए रखने में मदद होती है। स्कूल में या घर पर पढ़ाई करते वक्त पढ़ाई पर फोकस बनाए रखने में मदद मिलती है।
- ध्यान देने के अभ्यास से तनाव, उदासी, चिंता, अकेलापन जैसी दिक्कतें कम होती हैं।
- यदि हर क्षण हमारा ध्यान हम जो कार्य कर रहे हैं, उस पर होगा तो कार्य जल्दी, बेहतर तरीके से और बिना तनाव के कर पाएँगे।

अंत: साइलेंट चेक आउट (1-2 मिनट)

सत्र-2 MINDFUL LISTENING

शुरुआत: माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)

गतिविधि: Mindful Listening

A. ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय ले कर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें।
- पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया ?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फर्क महसूस कर रहे हैं?
  - मानसिक तनाव (Stress)
  - भावों का एहसास - सुख, दु:ख, क्रोध आदि
  - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न है?

B. Mindful Listening: 5 मिनट

चरण-1: (1-2 मिनट)

- आज आप शांत बैठ कर अपने आस-पास की आवाज़ों पर ध्यान देने वाले हैं। इसी को Mindful Listening कहते हैं।
- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठ कर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- आँखें बंद करने के बाद कक्षा में आने वाली विभिन्न आवाज़ों को सुनें। ये आवाज़ें पंखे की, ट्रैफिक की, किसी के बात करने की, किसी के हँसने की, इत्यादि हो सकती हैं।
- अपना ध्यान अपने आस-पास के वातावरण से आती हुई आवाज़ों पर ले जाएँ। आवाज़ अच्छी है या बुरी ऐसा सोचे बिना उन्हें केवल ध्यान देकर सुनने का प्रयास करें।
- अगर किसी को लगे कि उसका ध्यान आवाज़ों से हट गया है तो वह इस बारे में सजग हो जाए और अपना ध्यान वापिस आवाज़ों पर लाने का प्रयास करे।

(यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।)

- आँखें खोल कर कक्षा से सामूहिक रूप में पूछें - कौन-कौन सी आवाज़ें सुनीं?

चरण-2: (2-3 मिनट)

- दोबारा से आरामदायक स्थिति में बैठें, कमर सीधी करें और धीरे-धीरे आँखें बंद करें।
- वातावरण में उपस्थित आवाज़ों को फिर सुनें। हो सकता है कुछ आवाज़ों पर पहले ध्यान न गया हो।

- ध्यान दें कौन–कौन सी आवाजें वातावरण में हैं। कौन–कौन सी ऐसी आवाजें हैं जो आपको लगातार सुनाई दे रही हैं?
- आवाज़ अच्छी है या बुरी ऐसा सोचे बिना उन्हें केवल ध्यान देकर सुनने का प्रयास करें।
- अगर किसी को लगे कि उसका ध्यान आवाज़ों से हट गया है तो वे इस बारे में सजग हो कर अपना ध्यान वापिस आवाज़ों पर लाने का प्रयास करें।

(यह 2–3 मिनट तक करवाएँ)

C. गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदु: 15 मिनट

- इस गतिविधि के दौरान आपको कैसा अनुभव हुआ?
- क्या पहली और दूसरी बार के ध्यान से सुनने के अनुभव में कोई अंतर था?
- किनका ध्यान आवाज़ों से भटका? (हाथ उठवाया जा सकता है।)
- यदि आपका ध्यान भटका तो क्या आप उसे वापस आवाज़ों पर ला पाए?

अंत: साइलेंट चेक आउट (1- 2 मिनट)

सत्र-3 MINDFUL SILENCE

शुरुआतः माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)

गतिविधिः Mindful Silence

A. ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चाः 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय ले कर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें।
- पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया ?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फर्क महसूस कर रहे हैं?
  - मानसिक तनाव (Stress)
  - भावों का एहसास - सुख, दुःख, क्रोध आदि
  - क्लास में ध्यान
  - माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न है?

B. Mindful Listening : Silence: 5 मिनट

चरण-1: (1-2 मिनट)

- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठ कर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- आँखें बंद करने के बाद कक्षा में आने वाली विभिन्न आवाज़ों को सुनें। ये आवाज़ें पंखे की, ट्रैफिक की, किसी के बात करने की, किसी के हँसने की, इत्यादि हो सकती हैं।

(यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।)

चरण-2: (2-3 मिनट)

- धीरे-धीरे अपना ध्यान इन आवाज़ों के बीच की खामोशी पर लाएँ। इस खामोशी को सुनने/ महसूस करने का प्रयास करें तथा अपना ध्यान इस खामोशी पर केंद्रित करें।
- अगर किसी को लगे कि उनका ध्यान खामोशी से हट गया है तो वह इस बारे में सजग हो जाए और अपना ध्यान वापिस खामोशी पर लाने का प्रयास करें।

(यह गतिविधि 2-3 मिनट तक करवाएँ)

C. गतिविधि में चर्चा के लिए प्रस्तावित बिंदुः 15 मिनट

- आपका अनुभव कैसा रहा?
- पहले आवाज़ों पर और उसके बाद खामोशी पर ध्यान देने के अनुभव किस तरह अलग थे?
- क्या खामोशी को सुनना मुश्किल था? इसका क्या कारण रहा होगा?
- क्या आपने पहले भी कभी वातावरण में खामोशी को महसूस किया था?

अंतः साइलेंट चेक आउट (1- 2 मिनट)

सत्र-4 MINDFUL BREATHING

शुरुआत: माइंडफुल चेक-इन (3-5 मिनट)

गतिविधि: Mindful Breathing

A. ध्यान देने की प्रक्रिया पर चर्चा: 10 मिनट

- 2-3 मिनट का समय ले कर माइंडफुलनेस से स्वयं में आए बदलावों के बारे में सोचें। पिछले महीने की गई माइंडफुलनेस गतिविधि के अनुभव के बारे में भी सोचें। इन गतिविधियों का प्रयोग क्या आपने EMC क्लास के अलावा किया?
- माइंडफुलनेस के अभ्यास से अपने जीवन में कुछ फर्क महसूस कर रहे हैं?
  - मानसिक तनाव (Stress)
  - भावों का एहसास- सुख, दुःख, क्रोध आदि
  - क्लास में ध्यान
- माइंडफुलनेस गतिविधि से संबंधित कोई विशेष अनुभव, चुनौतियाँ या प्रश्न है?

B. Mindful Breathing : 5 मिनट

चरण-1: (1-2 मिनट)

- Mindful Breathing में हम अपना ध्यान अपनी साँस पर ले कर आते हैं और हर अंदर-बाहर आती जाती साँस पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- सभी विद्यार्थी आरामदायक स्थिति में बैठ कर, कमर सीधी कर आँखें बंद कर लें। अगर किसी को आँखें बंद करने में असहज महसूस हो रहा हो तो वह नीचे की ओर देख सकता है।
- अपने शरीर के अंदर आती तथा बाहर जाती प्रत्येक साँस पर ध्यान दें।
- अपने पेट पर एक हाथ रखें।
- श्वास के साथ-साथ इस बात पर ध्यान दें कि साँस लेते और छोड़ते समय पेट कब अंदर की तरफ जाता है और कब बाहर की ओर फूलता है।
- यदि ध्यान श्वास एवं पेट से हट गया है तो इस बारे में सजग हो जाए और फिर से ध्यान दे साँस लेते और छोड़ते समय पेट कब अंदर की तरफ जाता है और कब बाहर की ओर फूलता है।

(यह 1-2 मिनट तक करवाएँ।)

प्रश्नः

- क्या आपने अपने पेट को फूलते और अंदर जाते हुए महसूस किया?
- आपका पेट कब अंदर गया और कब बाहर की ओर फूला?

चरण-2: (2-3 मिनट)

- गतिविधि को दोबारा 1-2 मिनट के लिए करवाएँ।
- एक बार फिर विद्यार्थियों को ध्यान से जाँचने के लिए बोलें कि साँस लेने तथा छोड़ने और पेट के अंदर और बाहर होने में क्या संबंध है?

C. Mindful Belly Breathing पर चर्चा: 15 मिनट

- सामान्यत: साँस लेते समय आपका ध्यान पेट के अंदर-बाहर होने पर जाता है?
- पेट और श्वास पर ध्यान देने से क्या साँस की गति में बदलाव आता है?
- साँस गहरी व ध्यानपूर्वक लेने का अनुभव कैसा था?

अंत: साइलेंट चेक आउट (1- 2 मिनट)

C-2 स्टूडेंट-स्पेशल

D2Q6T7

स्टूडेंट स्पेशल, EMC का वह हिस्सा है जिसमें विद्यार्थी कक्षा में विभिन्न मज़ेदार गतिविधियाँ स्वयं करते हैं। इसमें आपसी संवाद एवं अभिव्यक्ति के ज़रिए अपना आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। ये गतिविधियाँ उन्हें आत्मविश्वास और प्रभावी संचार बेहतर करने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। विद्यार्थी सीमित समय में विचारों का विभिन्न तरीकों से आदान प्रदान करने का अभ्यास करते हैं, और रचनात्मक फीडबैक भी प्राप्त करते हैं क्योंकि विद्यार्थी ही कक्षाओं के संचालन की ज़िम्मेदारी लेते हैं, वे योजना बनाकर काम करना भी साथ-साथ सीखते हैं।

सीखने के उद्देश्य:

1. प्रभावी संचार
   - आंखों से संपर्क बनाए रखना
   - हाथ और चेहरे के हाव-भाव
   - आवाज़ का उतार-चढ़ाव (मॉड्यूलेशन)
   - समय का प्रभावी उपयोग
2. स्वयं पर विश्वास करना और आत्मविश्वास विकसित करना
3. किसी कार्य को प्रभावी योजना बनाकर पूरा करना।

रचनात्मक फीडबैक (constructive feedback):

क्या साझा करें?

- दो चीज़ें उन्होंने अच्छी की।
- एक चीज़ जो वे अगली बार बेहतर कर सकते हैं।

क्या ऑब्ज़र्व करें–

- सक्रिय साझेदारी
- ध्यानपूर्वक सुनना
- सम्मानजनक आवाज़ और शारीरिक भाषा

गतिविधि का परिचय :

Just A Minute (JAM):

- 5 विद्यार्थियों को स्पीकर्स के रूप में नामित किया जाएगा।
- स्पीकर्स को 1 विषय या एक प्रश्न दिया जाएगा।
- वे कक्षा के सामने विषय/प्रश्न पर 1 मिनट तक बोलेंगे।

जल्दी डिबेट

- किसी एक विषय के पक्ष में बोलने के लिए 3 और विपक्ष में बोलने के लिए 3 विद्यार्थियों को बुलाया जाएगा।
- दोनों टीमों के सदस्य एक के बाद एक अपने तर्क रखेंगे।

  (पक्ष 1 – विपक्ष 1 – पक्ष 2 – विपक्ष 2 – पक्ष 3 – विपक्ष 3)

स्टूडेंट-स्पेशल क्लास की संरचना:

समय सारणी

- साप्ताहिक: सप्ताह के अंतिम कार्य दिवस का EMC पीरियड
- अतिरिक्त: कोई भी खाली पीरियड

दोनों गतिविधियों (JAM और जल्दी डिबेट) में से प्रत्येक सप्ताह बदल-बदल कर गतिविधि करवाई जाए।

स्पेशल टीम का गठन

- फ़ैसिलिटेटर द्वारा गतिविधि- JAM के लिए 14 विद्यार्थियों की एक टीम का चयन किया जाएगा।
- गतिविधि- जल्दी डिबेट के लिए 17 विद्यार्थियों की एक टीम का चयन फ़ैसिलिटेटर द्वारा किया जाएगा।
- अगली स्टूडेंट-स्पेशल क्लास के लिए S-S टीम का चयन गतिविधि के अंत में किया जाएगा (फ़ैसिलिटेटर द्वारा)।
- फ़ैसिलिटेटर ये सुनिश्चित करे कि हर बार अलग-अलग विद्यार्थियों को भाग लेने का मौका मिल सके।

S-S टीम की भूमिकाएँ

फ़ैसिलिटेटर

गतिविधि के दिन से पहले

- SS टीम के एंकर को आमंत्रित करें।
- आवश्यक तैयारियों के लिए एंकर के साथ स्टूडेंट स्पेशल टीम के विभिन्न सदस्यों की भूमिकाएँ साझा करें।

गतिविधि के दिन

- एक अच्छा श्रोता बनने और गतिविधि की बारीकियों को ऑब्जर्व करने के बुनियादी नियमों के बारे में बात करके शुरुआत करें।
- विद्यार्थियों (पूरी कक्षा) को सूचित करें कि उन्हें अपनी EMC डायरी/ कॉपी में गतिविधि के कम से कम दो मुख्य निष्कर्षों (सीख) के बारे में लिखना होगा।
- SS टीम को बुलाएँ और कक्षा उन्हें सौंप दें।

एंकर:

- गतिविधि के दिन से पहले,टीम को JAM गतिविधि के लिए स्पीकर्स के लिए प्रश्न और जल्दी डिबेट गतिविधि के लिए डिबेट के लिए विषय पहले से तैयार करने के लिए कहें।
- गतिविधि के दिन, कक्षा की शुरुआत माइन्डफुलनेस के साथ करें।
- SS टीम के सदस्यों का परिचय दें।
- कक्षा में टाइम कीपर, जोक-स्टार,ऑब्ज़र्वर्स और स्पीकर्स की भूमिकाओं की घोषणा करे।

टाइम कीपर:

- घड़ी के साथ पहली सीट पर बैठेंगे।
- जोक-स्टार, प्रत्येक स्पीकर्स और प्रत्येक ऑब्ज़र्वर द्वारा क्लास में प्रेजन्टेशन में लिया गया टाइम नोट करेंगे।
    - 45 सेकंड के बाद मेज पर एक बार थपकी देंगे या जोर से ताली बजाएंगे।
    - 1 मिनट बाद मेज पर दो बार थपकी देंगे या दो तेज ताली बजाएंगे।
- गतिविधि के अंत में टाइम-रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे जिसमें यह उल्लेख किया जाएगा कि तय किए गए समय के अनुसार किन स्पीकर्स ने निर्धारित किया गया समय लिया और किसको निर्धारित समय से अधिक समय लगा।

जोक-स्टारः

- गतिविधि को मज़ेदार ढंग से शुरू करने के लिए कक्षा को एक चुटकुला सुनाएँगे।
- चुटकुला सुनाने के लिए 1 मिनट से ज्यादा समय नहीं दिया जाएगा।

प्रतिभागी (स्पीकर्स):

Just A Minute	जल्दी डिबेट
5 प्रतिभागी (स्पीकर्स)	**6 प्रतिभागी (स्पीकर्स):** 3 विषय के पक्ष में और 3 प्रस्ताव के विरोध में
प्रत्येक 1 मिनट में अलग-अलग विषय/प्रश्न पर बोलेंगे।	प्रत्येक 1 मिनट में जल्दी-डिबेट के पक्ष या विपक्ष में बोलेंगे।

ऑब्जर्वर्स :

ऑब्जर्वेशन दो हिस्से में की जाएगी।

1. 1ऑब्जर्वर द्वारा पूरी SS टीम को रचनात्मक फीडबैक दिया जाएगा।
2. प्रत्येक स्पीकर को ऑब्जर्व करके अंत में ऑब्जर्वर्स द्वारा रचनात्मक फीडबैक दिया जाएगा। (प्रत्येक स्पीकर के लिए एक ऑब्जर्वर जैसे JAM में 5 स्पीकर्स के लिए कुल 5 ऑब्जर्वर्स)।

ऑब्जर्वेशन का तरीकाः

इसके लिए निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखें-

ऑब्जर्वर्स की संख्या	आब्जर्वेशन किसके लिए	फीडबैक के लिए मुख्य बिन्दु
1ऑब्जर्वर	एंकर	• क्या एंकर ने गतिविधि की मर्यादा बनाए रखी? • क्या एंकर ने निर्धारित समय के अनुसार गतिविधि शुरू और खत्म की? • क्या एंकर दर्शकों और SS टीम के सदस्यों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम था? • क्या एंकर गतिविधि का नेतृत्व करने के लिए आश्वस्त था?
	टाइम-कीपर	• क्या टाइम कीपर ने दी गई भूमिका के साथ न्याय किया? • क्या टाइम कीपर ने टाइम रिपोर्ट आत्मविश्वास और सौम्यता से प्रस्तुत की?

	जोक-स्टार	• क्या जोक-स्टार ने 1 मिनट में चुटकुला खत्म कर दिया? • क्या जोक-स्टार कक्षा का ध्यान आकर्षित कर सकता है और वातावरण को जीवंत बना सकता है?
	नोट-टेकर्स (केवल जल्दी डिबेट)	क्या नोट-टेकर्स अपने-अपने पक्ष के प्रतिभागियों के मुख्य बिंदुओं को अच्छे से व्यक्त कर पाएँ।
5 वत 6 वइेमतअमते	**स्पीकर (1 ऑब्ज़र्वर प्रति स्पीकर)**	• कक्षा में सभी विद्यार्थियों के साथ आँख से संपर्क बनाये रखते हैं। • दिए गए प्रश्नों का प्रासंगिक(उचित) उत्तर देने में समर्थ हैं। • हाव-भाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव (आवाज़ मॉड्यूलेशन) के साथ प्रभावी तरीके से अभिव्यक्त कर पाने में समर्थ।

सेशन प्लानः JAM

गतिविधि से पहले गतिविधि से पहले

एंकरः

- माइन्डफुलनेस के साथ क्लास शुरू करें। (2-3 मिनट)
- SS टीम के सदस्यों का परिचय दें। और फिर उन्हें अपना स्थान लेने के लिए कहें।
- जोक-स्टार को स्टेज पर बुलाएँ । 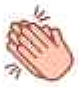

जोक-स्टारः

1 मिनट में एक मज़ेदार चुटकुला सुनाएँ।

एंकरः

- जोक-स्टार का धन्यवाद करें।
- क्लास को आगे बढ़ाने के लिए स्पीकर्स को बुलाएँ।
- ऑब्ज़र्वर्स को उनकी भूमिकाएँ समझाते हुए दो भागों में बाँटें।

1. एंकर, जोक-मास्टर और टाइम-कीपर (SS टीम) को फीडबैक प्रदान करने के लिए 1 ऑब्जर्वर को कहें।
2. बाकी ऑब्जर्वर्स (5 ऑब्जर्वर्स) को एक-एक स्पीकर्स को ऑब्जर्व करने और फीडबैक देने के लिए कहें।

गतिविधि के दौरान:

स्पीकर्स:

- एंकर द्वारा बुलाए जाने पर स्पीकर्स 1-1 करके सामने आएँ।
- बाउल से चिट उठाकर उसमें लिखा प्रश्न सबके सामने पढ़ें।
- इसके बाद अगली 1 मिनट में प्रश्न का उचित उत्तर दें ।
- सभी 5 स्पीकर्स पूरी गर्मजोशी से गतिविधि में भाग लेंगे।

गतिविधि के बाद:

एंकर:

एंकर ऑब्जर्वर्स को स्टेज पर बुलाएँ।

ऑब्जर्वर्स:

ऑब्जर्वर्स 1-1 करके सभी को फीडबैक देंगे।

एंकर:

एंकर टाइम कीपर को स्टेज पर बुलाएं।

टाइम-कीपर:

टाइम कीपर 1-1 करके सभी को टाइम की रिपोर्ट देंगे।

एंकर:

तालियों के साथ गतिविधि को समाप्त करे और मंच फ़ैसिलिटेटर को सौंप दे।

फ़ैसिलिटेटर:

- SS टीम के साथ पूरी क्लास को फीडबैक दें।
- किन्हीं 2-3 विद्यार्थियों से गतिविधि की दो मुख्य सीख (key takeaways) साझा करने के लिए कहें।
- पूरी कक्षा को अपने EMC-जर्नल/पत्रिका में गतिविधि की कम से कम 2 मुख्य सीख लिखने के लिए कहें।
- विद्यार्थियों को गतिविधि का सार बताते हुए उन क्षमताओं को भी जिक्र करें जिनका विद्यार्थियों ने इस गतिविधि के माध्यम से अनुभव किया।

- अगले सप्ताह स्टूडेंट स्पेशल के लिए 17 सदस्यों की नई स्टूडेंट स्पेशल टीम (जल्दी-डिबेट) का चयन करें। उनसे अपने एंकर का चयन करने और अगले सप्ताह की गतिविधि से एक दिन पहले फ़ैसिलिटेटर से संपर्क करने का अनुरोध करें।
- दिन का समापन तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सभी विद्यार्थियों की सराहना के साथ करें।

सेशन-प्लान:जल्दी डिबेट

एंकर:

- माइन्डफुलनेस के साथ क्लास शुरू करें। (2-3 मिनट)
- SS टीम के सदस्यों का परिचय दें व अपना-अपना स्थान लेने को कहे।
- जोक-स्टार को स्टेज पर आमंत्रित करे।

जोक-स्टार:

- क्लास को 1मिनट एक मज़ेदार चुटकुला सुनाए।

एंकर:

- जोक-स्टार का धन्यवाद करते हुए क्लास को आगे बढ़ाने के लिए डिबेट के विषय की घोषणा करे।
- ऑब्ज़र्वर्स को उनकी भूमिका बताते हुए दो भागों में बाँट दे-
  1. ऑब्ज़र्वर को एंकर, जोक-मास्टर, टाइम-कीपर और नोट-टेकर को फीडबैक देने के लिए कहें।
  2. बाकी को स्पीकर्स को ऑब्ज़र्व करने व फीडबैक देने को कहें।

स्पीकर्स:

- एंकर द्वारा बुलाए जाने पर 3 स्पीकर्स पक्ष में और 3 विपक्ष से, बारी-बारी से अपना पक्ष 1 मिनट में रखें।
- सभी स्पीकर्स बोल लेने के बाद दोनों टीम से नोट-टेकर्स अपने-अपने पक्ष के मुख्य बिन्दु 1 मिनट में रखें।

सभी स्पीकर्स व नोट-टेकर पूरी गर्मजोशी से गतिविधि में भाग लेंगे।

गतिविधि के दौरान:

स्पीकर्स:

- एंकर द्वारा बुलाए जाने पर 3 स्पीकर्स पक्ष में और 3 विपक्ष से, बारी-बारी से अपना पक्ष 1 मिनट में रखें।
- सभी स्पीकर्स व नोट-टेकर्स पूरी गर्मजोशी से गतिविधि में भाग लेंगे।

नोट-टेकर (केवल जल्दी-डिबेट में):

- एक नोट लेने वाला विषय के पक्ष में बोलने वाले स्पीकर्स के लिए और एक नोट लेने वाला विषय के विपक्ष में बोलने वाले स्पीकर्स के लिए।
- केवल तीन स्पीकर्स (पक्ष या विपक्ष) के लिए नोट्स और सारांश बिंदु बनाएँ।
- सभी स्पीकर्स के बोलने के बाद, दोनों टीमों के नोट्स लेने वालों को 1 मिनट में अपने-अपने पक्ष के मुख्य बिंदु प्रस्तुत करने चाहिए।

एंकर:

एंकर ऑब्ज़र्वर्स को स्टेज पर बुलाएँ।

ऑब्ज़र्वर्स:

- ऑब्ज़र्वर्स 1-1 करके सभी को फीडबैक देंगे।
- बाकी ऑब्ज़र्वर्स स्पीकर्स को फीडबैक देंगे।

एंकर:

एंकर ऑब्ज़र्वर्स को स्टेज पर बुलाएँ।

टाइम-कीपर:

टाइम कीपर 1-1 करके सभी को टाइम की रिपोर्ट देंगे।

एंकर:

तालियों के साथ गतिविधि को समाप्त करे और मंच फ़ैसिलिटेटर को सौंप दे।

फ़ैसिलिटेटर:

- SS टीम के साथ पूरी क्लास को फीडबैक दें।
- किन्हीं 2-3 विद्यार्थियों से गतिविधि की दो मुख्य सीख (key takeaways) साझा करने के लिए कहें।
- सभी विद्यार्थियों ने इस गतिविधि से कौन-सा कौशल सीखा और वो इन्हें अपने दैनिक जीवन में कैसे प्रयोग कर सकते हैं? जवाब को EMC पत्रिका/कॉपी में लिखने के लिए कहें।
- अगले सप्ताह स्टूडेंट स्पेशल के लिए 14 सदस्यों की नई स्टूडेंट स्पेशल (JAM) टीम का चयन करें। उनसे अपने एंकर का चयन करने और अगले सप्ताह की गतिविधि से एक दिन पहले फ़ैसिलिटेटर से संपर्क करने का अनुरोध करें।
- दिन का समापन तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सभी विद्यार्थियों की सराहना के साथ करें।

APPENDIX

Activity	Grade	Sample Topics
JAM	9	1. आपको किस फ्लेवर की आइसक्रीम पसंद है और क्यों? 2. आप का सबसे मनपसंद खेल कौन-सा है और क्यों? 3. अगर आपको सड़क पर 500 का नोट मिले तो आप क्या करेंगे? 4. मान लीजिए आप अपना गृह-कार्य करना भूल गए हैं तो आप अपनी कक्षा-अध्यापिका या कक्षा अध्यापक को यह बात किस प्रकार बताएँगे? 5. विद्यालय की ओर से किसी शैक्षणिक ट्रिप पर जाने के लिए आप अपने माता-पिता को किस प्रकार मनाएँगे? 6. आप अपने जीवन में क्या करने का सपना देखते हैं? 7. यदि आप 1 दिन के लिए विद्यालय के प्रिंसिपल बन जाए तो आप विद्यालय में क्या-क्या बदलाव लाएँगे? 8. अपने जीवन की एक मज़ेदार घटना सभी को बताएं? 9. कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बताइए जो आपको उदास कर देती हैं? 10. क्या विद्यालय में मोबाइल फोन लाने की अनुमति होनी चाहिए? आपको ऐसा क्यों लगता है? 11. सड़कों पर वाहनों की संख्या कम करने के लिए क्या किया जा सकता है? 12. क्या बच्चों को कोल्ड ड्रिंक पीने की अनुमति मिलनी चाहिए? आपको ऐसा क्यों लगता है?
JAM	11	1. कौन-सी सामाजिक समस्या बिना पैसे के सुलझाई जा सकती है? कैसे? 2. क्या आपको लगता है, असली शिक्षा क्लास के बाहर होती है? क्यों? 3. अगर मैं एक प्राणी होता तो कौन-सा प्राणी होता? क्यों? 4. आप को कौन-सा सामाजिक रिवाज पसंद है? क्यों? 5. आपको किस फ्लेवर की आइसक्रीम पसंद है और क्यों? 6. आप का सबसे मनपसंद खेल कौन-सा है और क्यों? 7. आप अपने जीवन में क्या करने का सपना देखते हैं? 8. यदि आप 1 दिन के लिए विद्यालय के प्रिंसिपल बन जाए तो आप विद्यालय में क्या-क्या बदलाव लाएँगे? 9. अपने जीवन की एक मज़ेदार घटना सभी को बताएँ?

		10. कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में बताइए जो आपको उदास कर देती हैं? 11. क्या विद्यालय में मोबाइल फोन लाने की अनुमति होनी चाहिए? आपको ऐसा क्यों लगता है? 12. सड़कों पर वाहनों की संख्या कम करने के लिए क्या किया जा सकता है?
Jaldi Debate	9	1. रोगों के इलाज खोजने के लिए पशुओं पर टेस्टिंग करना चाहिए। 2. सिगरेट को बैन कर देना चाहिए। 3. सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों के लिए हानिकारक है। 4. पढाई कैसे बेहतर होती है – क्लास में या घर पर? 5. स्कूल में अटेंडेंस को वैकल्पिक रखा जाना चाहिए।
Jaldi Debate	11	1. मतदान की के लिए आयु 16 साल होनी चाहिए। 2. होड़/स्पर्धा (Competition) से पढाई बेहतर होती है। 3. विद्यार्थियों के लिए सेलेब्रिटी अच्छे रोल मॉडल हो सकते हैं। 4. लड़कों और लड़कियों के लिए अलग स्कूल होने चाहिए। 5. क्या ज्यादा जरूरी है – सफलता या प्रसन्नता?

C-3 करियर एक्सप्लोरेशन

Q8W3M4

(स्कूल में अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (पीटीएम)।)

नमस्कार, गुप्ता जी। फिर से मिलकर खुशी हुई। मोनिका कैसी है?

नमस्कार मैडम, मोनिका ठीक है, पूछने के लिए धन्यवाद। हमेशा की तरह स्कूल के काम में लगी है। मैं स्कूल के बाद उसके भविष्य के ऑप्शन के बारे में आपसे कुछ बात करना चाहता था।

बिल्कुल! यह उस पर चर्चा करने का एक अच्छा समय है। हम वास्तव में हाल ही में कक्षा में करियर-एक्स्प्लोरेशन पर ध्यान दे रहे हैं।

ओह, बढ़िया। यह वास्तव में काम कैसे करता है?

इसमें विद्यार्थी अलग-अलग करियर-पथ के बारे में सीखते हैं। हम उन्हें विभिन्न नौकरियों के लिए आवश्यक कौशल के बारे में रिसर्च करने में मदद करते हैं कि उनकी रुचि और ताकत अलग-अलग करियर से कैसे मेल खाते हैं।

यह तो बहुत अच्छी बात है। मोनिका अपनी रुचियों को लेकर कन्फ्यूज रहती है, इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे मार्गदर्शन दूँ।

यहीं पर करियर-एक्स्प्लोरेशन आता है। गतिविधियों और चर्चाओं के माध्यम से, विद्यार्थियों को प्रोफेशनल-लाइफ की व्यापक तस्वीर मिलती है। वे उन चीज़ों से संबंधित करियर के बारे में सीखते हैं जो उन्हें अच्छे लगते हैं, वे जानते हैं कि वे किस चीज़ में अच्छे हैं और वे किस बारे में उत्सुक हैं।

तो, मोनिका उन चीज़ों का भी पता लगा सकती है जो शायद हमारे दिमाग में भी नहीं आई होंगी?

बिल्कुल। इससे उन्हें नई संभावनाएँ खोजने में मदद मिलती है। शुरुआती दौर में इस ज्ञान को मजबूत करने से, विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अपना करियर चुनने में अधिक योग्य और आत्मविश्वास महसूस करते हैं।

यह शानदार है, ऐसा लगता है जैसे यह कैरियर-एक्स्प्लोरेशन उनके लिए एक बहुत बढ़िया रिसोर्स है।

यह निश्चित रूप से है। और हम माता-पिता को भी इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शायद आप और मोनिका उस पर चर्चा कर सकते हैं कि उसने कक्षा में क्या सीखा और साथ में कुछ करियर के ऑप्शन तलाश सकते हैं।

धन्यवाद, खन्ना मैडम। यह बहुत मददगार रहा है। मैं मोनिका से इस बारे में ज़रूर बात करूँगा और देखूँगा कि उसकी रुचि किसमें है। मैं निश्चित रूप से मोनिका को उसके करियर-एक्स्प्लोरेशन के इस पड़ाव में उसका साथ ज़रूर दूँगा।

इंटरव्यू से पहले:

करियर का माइंड मैप	1-2 पीरियड
किसका इंटरव्यू लेना है	1-2 पीरियड
इंटरव्यू के प्रश्न	1 पीरियड
इंटरव्यू के लिए तैयारी	1-2 पीरियड

इंटरव्यू के दौरान:

ध्यान रखने योग्य बातें	1 पीरियड
इंटरव्यू आयोजित करना	हर महीने

इंटरव्यू के बाद:

अनुभव साझा करना	प्रत्येक माह के अंतिम सोमवार/मंगलवार को EMC पीरियड में।

समय का अनुमान विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखकर दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर कम या ज्यादा समय ले सकता है।

विद्यार्थियों के साथ करियर एक्सप्लोरेशन की शुरूआतः:

विद्यार्थियों से निम्न प्रश्न पर चर्चा करते हुए करियर एक्सप्लोरेशन की शुरुआत करें-

- 12वीं के बाद आपने अपने करियर के लिए किन ऑप्शन के बारे में सोचा है?
- ये आप कैसे सोच पाएँ?

कुछ विद्यार्थियों से उत्तर लेने के बाद, उनकी सराहना करते हुए उन्हें बताएँ कि करियर एक्सप्लोरेशन में हम विभिन्न नौकरियों और कारोबारों में शामिल लोगों से मिलेंगे और अलग-अलग करियर के आयामों को समझेंगे। इस प्रक्रिया की शुरुआत हम कुछ गतिविधियों के साथ करेंगे, जो हमें अलग अलग करियर के बारे में सोचने में मदद करेंगी और इंटरव्यू लेने के लिए हमें तैयार करेंगी।

करियर के माइंड मैप का परिचयः संभावनाओं को दिखाना

फ़ैसिलिटेटर की भूमिकाः

विद्यार्थियों को यह समझाकर एक अच्छा और सकारात्मक माहौल बनाएँ कि आज से एक रोचक यात्रा-करियर एक्स्प्लोरेशन की शुरुआत हो रही है। फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को समझाएँ कि हम अलग-अलग व्यवसायों (प्रोफेशन) के बारे में पता लगाएँगे, जिससे उनके भविष्य को आकार देने में मदद मिलेगी।

राउंड-1: एक्स्प्लोरेशन के लिए करियर का चयन

1. **बोर्ड पर दो कॉलम बनाएँ**, एक नौकरियों के लिए और दूसरा व्यवसायों के लिए।
2. **विद्यार्थी करें:**
   - विद्यार्थियों से कम से कम 10 नौकरियों और 10 व्यवसायों का सुझाव देने के लिए कहें जिनके बारे में वे उत्सुक हैं। (विद्यार्थी ज़्यादा नौकरियों और व्यवसायों का सुझाव भी दे सकते हैं। उन्हें 10 तक सीमित रखें।)
   - किसी विद्यार्थी को बोर्ड पर इन कॉलम में कक्षा से मिलने वाले जवाब लिखने के लिए बुलाएँ।

राउंड-2 : समूह में माइंड-मैप

अगले पीरियड में यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी छोटे समूहों में माइंड मैप बनाएँ।

1. **समूह बनानाः** 5-6 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ।
2. **कैरियर चयनः** प्रत्येक समूह बनाई गई सूची में से एक नौकरी और एक व्यवसाय का चयन करे।
3. **समूह-चर्चाः** अपने समूह में चुनी गई नौकरी और व्यवसाय के बारे में चर्चा करें।
   - इस नौकरी + या व्यवसाय में क्या शामिल है?
   - इस नौकरी या व्यवसाय में क्या भूमिकाएँ हैं?
   - इस करियर से संबंधित अन्य कार्य किस प्रकार के हैं? (जैसे इस करियर के लिए कौन से प्रोडक्ट या सेवाएँ ज़रूरी हैं?
   - इस नौकरी या व्यवसाय का संभावित ग्राहक कौन हो सकता है?

4. **माइंड मैप बनाना:** अपने समूह में, प्रत्येक करियर के लिए चर्चा करें और अलग-अलग शीट पर माइंड मैप बनाएँ (10-15 मिनट में)। कनेक्शन और संभावनाएँ दिखाने के लिए विजुअल, चिह्न और कीवर्ड/संकेतों का उपयोग करें।
5. **विचार साझा करना:** अधिक तरीके और विचार प्राप्त करने के लिए पड़ोसी समूहों के साथ माइंड मैप का आदान-प्रदान करें।
6. **ग्रुप प्रेजन्टेशन:** सभी माइंड मैप को कक्षा की दीवारों या अलग-अलग टेबल पर रखें। यह गैलरी- वॉक से भी किया जा सकता है, जिसमें शीट को सभी समूहों के माध्यम से एक-दूसरे को दी जा सकती है, ताकि सभी समूहों को सभी अलग-अलग माइंड मैप देखने को मिलें।

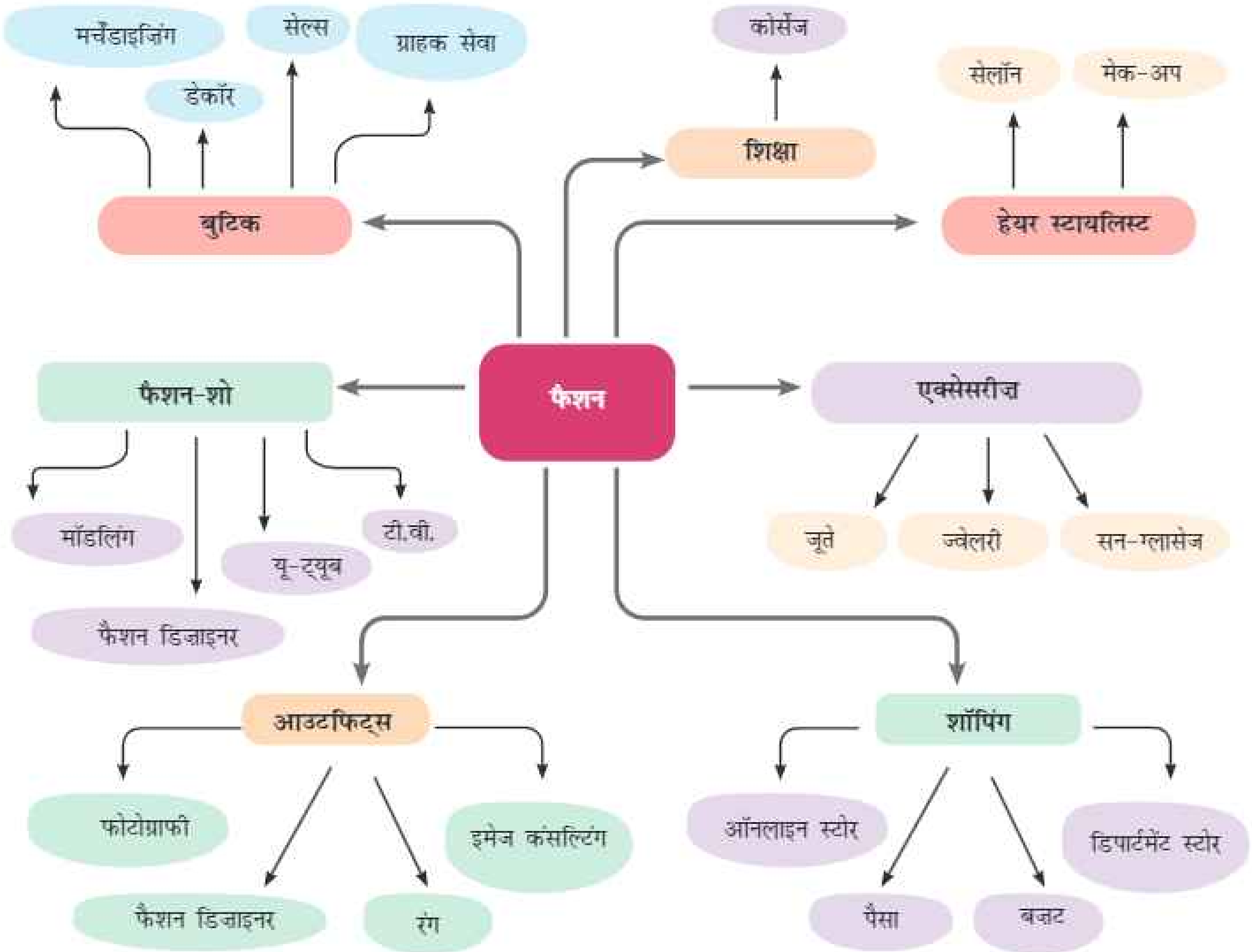

फैसिलिटेटर नोट:

1. यह प्रक्रिया विशिष्ट करियर और उससे संबंधित भूमिकाओं के बारे में जानने के लिए है।
2. इसे एक टीम प्रयास बनाएँ - प्रत्येक विद्यार्थी माइंड मैप में सहायता करता है।
3. विद्यार्थियों को इससे परे सोचने के लिए प्रेरित करें - चुने गए करियर से कौन-सी अन्य नौकरियाँ जुड़ी हो सकती हैं? यह संभव है कि कोई करियर से संबंधित नौकरी और व्यवसाय दोनों के बारे में सोच सकता है।

चिंतन एवं चर्चा:

1. सभी प्रदर्शित माइंड मैप को एक-एक करके देखें।
2. निजी सूची बनाएँ: प्रत्येक विद्यार्थी 10 नौकरियों और 10 व्यवसायों की एक ऐसी निजी सूची बनाएँ, जो उन्हें सबसे अच्छे लगते हैं।

इंटरव्यू से पहले

राउंड 1: किसका इंटरव्यू लेना है-करियर से जुड़ना

परिचय | चरणः | फ़ैसिलिटेटर नोट | साझा करना

अपनी पिछली गतिविधि में, हमने माइंड मैप के माध्यम से विभिन्न करियर को जाना, नौकरियों और व्यवसायों की एक निजी सूची बनाई, जिनके बारे में हम और अधिक जानने में रुचि रखते हैं। अब, आइए जानें कि हम इन करियर में काम करने वाले लोगों-वास्तविक विशेषज्ञों के बारे में कहाँ जान और सीख सकते हैं।

परिचय | चरणः | फ़ैसिलिटेटर नोट | साझा करना

1. समूह बनाना: 5-6 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ।
2. समूह चर्चाः समूहों में, चुने गए करियर में लोगों से कैसे जुड़े, इस पर विचार-मंथन करें।
   (a) क्या आप इन करियर में किसी को पहले से जानते हैं?
   (b) क्या आप आस-पास के किसी व्यक्ति को पहचान सकते हैं, भले ही आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हों (जैसे नर्स या फिटनेस ट्रेनर)?

इंटरव्यू की सूची बनानाः चर्चा के आधार पर, उन 10 लोगों की सूची बनाएँ, जिनका वे इंटरव्यू लेना चाहते हैं। विविधता सुनिश्चित करें: 5 व्यक्तियों को नौकरी और 5 को व्यवसाय में शामिल करें।

क्र. सं.	जॉब	व्यक्ति का नाम और उनके ऑफिस का पता	व्यवसाय	व्यक्ति का नाम और उनके ऑफिस का पता
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				

परिचय | चरण | फ़ैसिलिटेटर नोट | साझा करना

1. विद्यार्थियों को उनके चुने हुए करियर से जुड़े विभिन्न स्थानों, संस्थानों और व्यक्तियों पर सोच-विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें।
2. इस बात पर जोर दें कि यदि वे इन व्यक्तियों को पहले से नहीं जानते हैं तो कोई बात नहीं। हमारा उद्देश्य नए अनुभवों की खोज करना और उनसे सीखना है।
3. विद्यार्थियों को ऐसे जॉब/व्यवसाय को चुनने के लिए प्रोत्साहित करें जिनमें वे वास्तव में रुचि रखते हैं और इंटरव्यू के लिए आसानी से संपर्क कर सकते हैं।

परिचय | चरणः | फ़ैसिलिटेटर नोट | **साझा करना**

यह प्रक्रिया करियर को समझने में अगला कदम उठाने के बारे में है - वास्तविक पेशेवरों से जुड़कर। रुचि और सुविधा के आधार पर इंटरव्यू देने वालों को चुनने से, विद्यार्थी न केवल विभिन्न व्यवसायों के बारे में सीखेंगे बल्कि आवश्यक नेटवर्किंग और संचार कौशल भी विकसित करेंगे।

राउंड 2: इंटरव्यू के लिए प्रश्न

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | चरण

अब जब हमारे पास इंटरव्यू के लिए लोगों की सूची है, तो उन प्रश्नों के बारे में सोचने का समय आ गया है जो हमें उनके करियर को सही मायने में समझने में मदद करेंगे। यह तैयारी सुनिश्चित करती है कि हमारी बातचीत सार्थक और व्यावहारिक हो।

परिचय | **फ़ैसिलिटेटर नोट** | चरण

विद्यार्थियों को उन प्रश्नों के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें, जो विभिन्न करियर की ताकत और चुनौतियों दोनों पर केंद्रित हों।

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | **चरण**

1. Sample Questionnaire Exploration: (एक सैम्पल दें)
   - इंटरव्यू के लिए प्रश्नावली एक सैम्पल विद्यार्थियों को दें (नीचे देखें)।
   - विद्यार्थियों को इसे पढ़ने और समझने के लिए 5 मिनट का समय दें। (शिक्षक पुस्तक से सैम्पल को पढ़ सकते हैं)
2. **चर्चा:** विद्यार्थियों से पूछें कि उस विशिष्ट करियर के बारे में अधिक जानने के लिए कौन से अतिरिक्त प्रश्न जोड़े जा सकते हैं। प्रश्नावली के प्रत्येक सेक्शन के लिए अतिरिक्त प्रश्नों के लिए सुझाव लें।
3. **विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए प्रश्नः** विद्यार्थियों से इंटरव्यू के लिए अतिरिक्त प्रश्नों पर सोच-विचार करने के लिए कहें।
4. **अंतिम प्रश्नावली बनाएँ:** विद्यार्थी नए सोचे गए प्रश्नों को जोड़कर एक अंतिम प्रश्नावली बनाते हैं।
5. **साथियों के साथ साझा:** विद्यार्थी अपने नए प्रश्नों को अपने बगल में बैठे साथियों के साथ साझा करते हैं।

सैंपल प्रश्न

Sample Questionnaire: निम्नलिखित प्रश्नों को नमूने के रूप में देखें। यह विचारशील प्रक्रिया इस बात को सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी सार्थक बातचीत करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं, जो विभिन्न कैरियर पथों की गहरी समझ प्रदान करने में मदद करते हैं।

परिचय

- आपने कहाँ तक पढ़ाई की है? और किस स्कूल में पढ़ाई की?
- आपको स्कूल में कौन-से विषय सबसे ज्यादा पसंद थे? पढ़ाई के अलावा आपको कौन-सी गतिविधियाँ पसंद थी?
- जब आप मेरी उम्र के थे, क्या तब अपने भविष्य के लिए आपके कोई सपने थे?

शुरुआत

- आपने अपने करियर की शुरुआत किस काम से की? उस समय आपके परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति कैसी थी?
- आपको अपने पहले काम के बारे में क्या पसंद आया और क्या नापसंद?

संघर्ष

- हमें अपने जीवन की शुरुआत से लेकर अब तक की यात्रा के बारे में और बताएँ।
- आपके जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियाँ और संघर्ष क्या थे? आप किस बात पर चलते रहे?
- आपके काम के कौन-से पहलू आपको तनाव देते हैं?

सफलता

- आपके जीवन में कुछ छोटी और बड़ी सफलताएँ क्या हैं?
- आपकी सफलता में किन गुणों और क्षमताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
- आपके काम के कौन-से पहलू आपको संतुष्टि देते हैं।

सीख

- अपने जीवन के लिए गए निर्णयों (decisions) को बदल सके तो आप कौन-सा निर्णय बदलना चाहेंगे?
- आप अपने काम को आगे बढ़ाने की योजना कैसे बनाते हैं?
- आपके करियर के शुरुआती दिनों से लेकर अब तक आपकी चुनौतियों में किस तरह का बदलाव आया है?

राउंड 3: इंटरव्यू के लिए तैयारी (1-2 पीरियड)

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | चरण

हमने इंटरव्यू के लिए एक प्रश्नावली बनाई है। लेकिन क्या हमें ये सवाल सीधे पूछना शुरू कर देना चाहिए? हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि इंटरव्यू देने वाला इस इंटरव्यू के उद्देश्य को समझे ताकि वे हमारे प्रश्नों का आराम से उत्तर दे सकें। आइए, इस इंटरव्यू के उद्देश्य के बारे में बात करने का अभ्यास करें।

परिचय | **फ़ैसिलिटेटर नोट** | चरण

सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों को जोड़ियों में अभ्यास करने का समान अवसर मिले।

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | **चरण**

1. विद्यार्थी जोड़े बनाएँगे और एक-दूसरे को अपने बारे में और करियर-एक्स्प्लोरेशन के बारे में बताएँगे। (5 मिनट)
   - परिचय में क्या शामिल किया जाना चाहिए?
     - विद्यार्थी का परिचय
     - करियर एक्स्प्लोरेशन का परिचय
     - इंटरव्यू का उद्देश्य और इसमें लगने वाला समय
   - परिचय देते समय क्या ध्यान रखें?
     - नज़रें मिलते हुए बातें करना
     - सम्मानजनक व्यवहार
2. विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित सैम्पल परिचय पढ़ें, जिसका उपयोग विद्यार्थी अपने इंटरव्यू के दौरान कर सकते हैं:

> (हमारे स्कूल में एक नया पाठ्यक्रम शुरू किया गया है – Entrepreneurship MinosQet Curriculum (EMC). इस पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में, हम विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में ज्ञान इकट्ठा करेंगे और आत्मविश्वास, नई चीज़ें सीखना, समस्या समाधान, अपनी असफलताओं से सीखना और दृढ़ता (perseverance) जैसे गुण विकसित करेंगे।
>
> पाठ्यक्रम का एक भाग करियर-एक्स्प्लोरेशन है, जहां हम उन अनुभवी लोगों से मिलते हैं, जिनके करियर के बारे में हम अधिक जानना चाहते हैं। आप जैसे 10 लोगों का इंटरव्यू करके, हम आपके कामकाजी जीवन को समझना चाहते हैं, और आपके संघर्षों, सफलताओं और सीखों के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं।
>
> यदि आप हमें इंटरव्यू के लिए अपने शेड्यूल से आधा घंटा दे सके, तो हमें बहुत-सी नई चीज़ें सीखने का अवसर मिलेगा।

3. परिचय देने वाले विद्यार्थी को जोड़ी के साथी विद्यार्थी से रचनात्मक प्रतिक्रिया (constructive feedback) मिलेगी। (2-3 मिनट)

4. दोनों विद्यार्थी भूमिकाओं का आदान-प्रदान करेंगे और प्रक्रिया को दोहराएँगे।
5. जब सभी जोड़े यह प्रक्रिया पूरी कर लें, तो कुछ जोड़े आगे आकर कक्षा के सामने रोल-प्ले कर सकते हैं। अन्य विद्यार्थी उन्हें रचनात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

इंटरव्यू के दौरान - ध्यान रखने योग्य बातें (1 पीरियड):

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | चरण | साझा करना

अब हम इंटरव्यू लेने के लिए तैयार है। जब हम अलग-अलग लोगों से मिलते हैं तो कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। आइए चर्चा करें कि अपने प्रयासों को सफल बनाने के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | चरण | साझा करना

चर्चा करते समय विद्यार्थियों के सभी प्रश्नों को ध्यान से सुनें ।

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | चरण | साझा करना

1. परिचय के लिए रोल प्ले के बाद, करियर एक्स्प्लोरेशन- इंटरव्यू करते समय ध्यान में रखी जाने वाली बातें साझा करें-
   - चरण 1: इंटरव्यू के लिए तैयारी-
     - इंटरव्यू के लिए जोड़ियों में जाएँ।
     - किसी कार्यालय या संस्थान जैसे सार्वजनिक स्थान पर इंटरव्यू आयोजित करें।
     - इंटरव्यू का स्थान घर या स्कूल से बहुत दूर नहीं होना चाहिए।
     - शाम 6 बजे के बाद इंटरव्यू न लें।
   - चरण 2: इंटरव्यू के दौरान-
     - अपने विद्यालय का पहचान पत्र (Identity card) साथ रखें।
     - इंटरव्यू के लिए स्कूल यूनिफॉर्म में जाएँ।
     - बातचीत के दौरान अपनी सुरक्षा का ध्यान रखें।
   - चरण 3: इंटरव्यू के बाद-
     - शिक्षक के साथ अपना अनुभव साझा करें।

परिचय | फ़ैसिलिटेटर नोट | चरण | साझा करना

अब, हम करियर एक्सप्लोरेशन शुरू करने के लिए तैयार हैं। सभी विद्यार्थियों ने तय कर लिया है कि वे किसका इंटरव्यू लेंगे, इंटरव्यू देने वालों को अपना परिचय कैसे देंगे और इंटरव्यू लेते समय किन बातों का ध्यान रखेंगे। अब हम इंटरव्यू देने वालों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हर महीने इंटरव्यू आयोजित करेंगे। महीने के आखिरी सोमवार या मंगलवार को, हम EMC पीरियड में कक्षा के साथ अपना अनुभव साझा करेंगे।

- अब विद्यार्थी हर महीने अलग-अलग करियर के लोगों का इंटरव्यू लेंगे।
- महीने के आखिरी सोमवार या मंगलवार की EMC पीरियड में, वे कक्षा के साथ अपना अनुभव साझा करेंगे।

इंटरव्यू के बाद – अनुभव साझा करना (हर महीने):

परिचय | **फैसिलिटेटर नोट** | **साझा करना**

करियर एक्सप्लोरेशन के लिए विद्यार्थियों ने अलग-अलग लोगों का इंटरव्यू लिया और उनके अनुभवों को सुनकर अपनी समझ बनाई। आइए, अब इन अनुभवों पर विचार करें और अपने पसंदीदा करियर के बारे में हमने जो सीखा उसे साझा करें।

परिचय | **फैसिलिटेटर नोट** | **साझा करना**

कक्षा के साथ अपने अनुभव साझा करने के लिए अधिक से अधिक विद्यार्थियों को बुलाएँ।

परिचय | **फैसिलिटेटर नोट** | **साझा करना**

1. हर महीने के आखिरी सोमवार या मंगलवार को, EMC पीरियड में, विद्यार्थी करियर एक्स्प्लोरेशन के अपने अनुभव पर विचार करेंगे और कक्षा के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे।
2. 5-6 विद्यार्थियों के समूह बनाएँ और निम्नलिखित पर चर्चा करें:
   - इस महीने के इंटरव्यू से एक मजेदार अनुभव
   - इस महीने के इंटरव्यू से सबसे अच्छा उत्तर
   - मेरा कौन-सा कौशल उस व्यक्ति के करियर में उपयोगी होगा, जिसका मैंने इंटरव्यू लिया?
   - उनके जैसा कुछ करने के लिए मुझे कौन-से कौशल विकसित करने चाहिए?
3. प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी कक्षा के साथ अपने समूह के अनुभव साझा करेगा:
   - उनके समूह द्वारा लिए गए इंटरव्यू की संख्या
   - किसी एक विद्यार्थी द्वारा बताया गया मजेदार अनुभव
   - किसी एक विद्यार्थी द्वारा बताई गई सीख
   - किसी एक विद्यार्थी द्वारा प्राप्त प्रेरणादायक जवाब

करियर एक्सप्लोरेशन प्रक्रिया

कृपया ध्यान दें कि यह फ्लोचार्ट करियर-एक्स्प्लोरेशन को समझने के लिए एक प्रयास-मात्र है, वास्तव में कक्षा की आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार फेरबदल किया जा सकता है।

C-4 आंत्रप्रेन्योर के साथ संवाद

P4J7H3

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी उस दिन बहुत उत्साहित थे। प्रसिद्ध उद्यमी, शिक्षक, लेखक और परोपकारी, सुश्री सुधा मूर्ति के साथ (LEI) जल्द ही शुरू होने वाला था।

जैसे ही घड़ी ने दस बजाए, सुश्री सुधा मुर्ति टीम ईएमसी के साथ स्क्रीन पर दिखाई दीं। उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया और उनसे आंत्रप्रेन्योरशिप की अपनी यात्रा साझा करने का अनुरोध किया गया। विद्यार्थी उसके शब्दों से सीखने के लिए उत्सुक होकर ध्यान से देख रहे थे। सुश्री सुधा मुर्ति ने नवाचार(इनोवेशन), चुनौतियों, संदेह के पलों और सकारात्मक नजरिये की अपनी यात्रा साझा की जिसने उन्हें सफलता तक पहुँचाया।

उनके शब्दों में प्रेरणा और व्यावहारिकता (practicality) दोनों ही चीजें शामिल थीं। उन्होंने अवसरों की पहचान करने, सोच-समझकर जोखिम लेने, सहयोग करने और एक मजबूत सपोर्ट-सिस्टम बनाने के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने लचीलेपन (resilience), असफलताओं से सीखने और अनमोल सपनों को कभी न छोड़ने के मूल्य पर जोर दिया।

सेशन इंटरैक्टिव था, जिसमें विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, उनके अनुभवों, उनके निवेश के प्रति उनकी सोच और आंत्रप्रेन्योरशिप की लगातार विकसित हो रही दुनिया के बारे में व्यावहारिक प्रश्न पूछें। सुश्री सुधा मुर्ति ने धैर्य और विचारशीलता के साथ प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दिया, बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया और उन्हें अपनी क्षमता पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने दिल्ली में ईएमसी को हर संभव तरीके से समर्थन देने की भी पेशकश की।

सुश्री नमिता जी के साथ, विद्यार्थी प्रोत्साहित और आत्मविश्वासी महसूस कर रहे थे। उन्होंने उसकी बुद्धिमत्ता और व्यावहारिक शेयरिंग की सराहना की। सुश्री सुधा मुर्ति के साथ लाइव आंत्रप्रेन्योर इंटरेक्शन ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है – इसने इन युवा दिमागों में आंत्रप्रेन्योरशिप की एक चिंगारी प्रज्वलित कर दी है।

यह लाइव आंत्रप्रेन्योर इंटरेक्शन प्रोग्राम के प्रभाव का सिर्फ एक उदाहरण है। सुश्री सुधा मुर्ति जैसे वास्तविक जीवन के आंत्रप्रेन्योर के साथ विद्यार्थियों को जोड़कर, ईएमसी कार्यक्रम उन्हें लगातार विकसित हो रही दुनिया में आगे बढ़ने और समाज में सार्थक योगदान देने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और मानसिकता के साथ तैयार करता है।

प्रेरित होने के अलावा, LEI विद्यार्थियों को केवल मैनुअल में उनकी कहानियाँ पढ़ने के बजाय वास्तविक जीवन में आंत्रप्रेन्योर के साथ बातचीत करने, प्रश्न पूछने और जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। इससे लोगों का सामना करने, प्रभावी ढंग से संवाद करने और आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट के बारे में अधिक जानने में उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

LEI सेशन दो प्रकार के होते हैं::

Centralized LEI Sessions

- ये डिजिटल/ऑनलाइन सेशन हैं, जो किरण मजूमदार शॉ, संजीव भीकचंदानी आदि जैसे प्रसिद्ध आंत्रप्रेन्योरस् के साथ आयोजित किए जाते हैं और एससीईआरटी यूट्यूब चौनल पर लाइव प्रसारित होते हैं।
- स्कूल-प्रमुख, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक या YouTube चैनल लिंक वाला कोई भी व्यक्ति LEI लाइव सेशन देख सकता है।

Decentralized LEI Sessions

- ये स्कूल आधारित LEI सेशन हैं, जो नौवीं से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए स्कूल-स्तर पर आयोजित और संचालित किए जाते हैं।
- इन सेशन में केवल कक्षा-विशेष के संबंधित शिक्षक और विद्यार्थी ही शामिल हो सकते हैं। इनके संचालन के लिए कुशल आंत्रप्रेन्योरस् या सेवारत व्यक्तियों(जॉब-पर्सन) को स्कूल में ही आमंत्रित किया जा सकता है।

उद्देश्य

1. आंत्रप्रेन्योरशिप के अलग-अलग अवसरों से परिचित होना।
2. आंत्रप्रेन्योर की यात्रा की समझ-शुरुआत, संघर्ष व सफलता।
3. आंत्रप्रेन्योर के साथ सीधी बातचीत के ज़रिए विद्यार्थियों की जिज्ञासा (curiosity) को शांत करना।

आंत्रप्रेन्योर के साथ संवाद LEI के लिए तैयारी

फ़ैसिलिटेटर नोट

- समस्या-समाधान, योजना और संचार, वित्तीय प्रबंधन, सहयोग, दृढ़ता (perseverance), लचीलापन (resilience) आदि जैसे आंत्रप्रेन्योरशिप कौशल वाले किसी आंत्रप्रेन्योर/पेशेवर सेवा वाले व्यक्ति को ढूँढने और उससे संपर्क करने के लिए अपने सहयोगियों की मदद ले सकते हैं या उनसे संपर्क कर सकते हैं।
- उन्हें अंग्रेजी और/या हिंदी में किसी एक कक्षा और सेक्शन (9-12) के विद्यार्थियों के साथ अपनी विकास यात्रा (journey of growth) साझा करने के लिए आमंत्रित करें।
- आंत्रप्रेन्योर/पेशेवर सेवा व्यक्ति के साथ बातचीत कर सहमति के साथ निश्चित किए गए किसी ऐसे दिन और समय में LEI सेशन आयोजित करें जब स्कूल के समय के अनुसार और कार्य-दिवस (working & day) हो।
- नीचे दी गई टेबल में स्कूल में LEI सेशन आयोजित करने के तरीके के बारे में जानकारी दी गई है:

LEI के लिए किसे आमंत्रित किया जा सकता है?	हम LEI के लिए किसी आंत्रप्रेन्योर/ जॉब-पर्सन तक कैसे पहुँच सकते हैं?	प्रस्तावित प्रश्न जो LEI सेशन में पूछे जा सकते हैं:
• स्थानीय आंत्रप्रेन्योर • विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत जॉब-पर्सन • स्कूल के आस-पास कलाकार और कारीगर • सेवारत या स्व-रोज़गार वाले BB/ अन्य पूर्व विद्यार्थी (alumni)	• स्कूल के आस-पास के समुदाय के स्थानीय आंत्रप्रेन्योर और जॉब-पर्सन • हमारे अपने परिवार/विस्तृत परिवार/ मित्र मंडली/ परिचित, आदि • स्कूल विक्रेता, आस-पास के स्कूलों के साथी शिक्षक, शिक्षक सहयोगियों के परिवार के सदस्य • नजदीकी स्कूलों के साथ LEI के संपर्क नंबर के आदान-प्रदान के लिए गठजोड़ करें और उन्हें अपने स्कूल में आमंत्रित करें	• किस चीज़ ने उन्हें उद्यमिता के सपने को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया? • उन्होंने परिवार को अपना सपना पूरा करने के लिए कैसे मनाया? • उन्होंने किस समस्या/ आवश्यकता/गैप की पहचान की और उसे विकास के अवसर में कैसे बदल दिया? • उन्होंने टीम के सदस्यों के रूप में किसे और कैसे खोजा? • उन्होंने अपने लक्षित ग्राहकों की पहचान कैसे की और समय पर अपना सामान/सेवा कैसे वितरित की? • भविष्य के लिए उनका दृष्टिकोण क्या है? अगले 5 वर्षों में वे स्वयं को कहाँ देखते हैं?

- आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन के साथ नीचे दिए गये 'लाइव आंत्रप्रेन्योर इंटरेक्शन (LEI) प्लान' को साझा करें, जिसमें LEI सेशन की तैयारी करने के लिए दिशानिर्देश सुझाए गये हैं।

लाइव आंत्रप्रेनयोर

इंटरेक्शन (LEI) प्लान

नाम (LEI)	
नाम (LEI)	
नाम (LEI)	

सत्र से पहले

अपनी उद्यमशीलता यात्रा पर विचार करें। 7-10 मिनट में विद्यार्थियों के साथ साझा करने के लिए एक वृत्तान्त बनाएँ। इसमें निम्नलिखित बिंदु शामिल हो सकते हैं।

- आपकी प्रेरणा और प्रारंभिक कदम
- संघर्ष और असफलता
- चुनौतियाँ और उनके समाधान
- सफलता प्राप्त हुई
- भविष्य की योजनाएँ

सत्र के दिन

- विद्यार्थियों का उत्साहपूर्वक स्वागत करें।
- 7-10 मिनट में अपनी उद्यमशीलता यात्रा का संक्षेप में वर्णन करें।
- विद्यार्थियों को और जानकारी प्राप्त करने की खातिर प्रश्न बनाने के लिए 10 मिनट दें।
- रुचि के साथ उत्तर दें और उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करें।
- उनका उत्साहवर्धन करते रहें।

सत्र के अन्त में

- विद्यार्थियों को आलोचनात्मक और रचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करें।
- लचीलापन और दृढ़ता विकसित करने के लिए सुझाव दें।
- उद्यमशीलता की मानसिकता विकसित करने की सलाह दें।

क्या करें

- वृत्तांत को संक्षिप्त और आकर्षक रखें।
- विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

क्या ना करें?

- किसी उत्पाद/सेवा का विवरण/विज्ञापन
- किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत जानकारी का आदान-प्रदान
- सम्पर्क करें

संपर्क करें!	

इंटरेक्शन प्लानः

क्रम संख्या	विवरण	समय
भाग 1	**फ़ैसिलिटेटर**	
	• आंत्रप्रेन्योर का परिचय (1 मिनट) • माइंडफुलनेस (2-3 मिनट)	**5 मिनट**
भाग 2	**आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन**	**5 मिनट**
यात्रा	आंत्रप्रेन्योरशिप की यात्रा साझा करना • यात्रा के पहलुओं को साझा करना • प्रारंभ - प्रेरणा और प्रारंभिक कदम • संघर्ष और असफलताएँ-चुनौतियाँ और उनके समाधान • असफलता से वापसी और सफलता-लचीला रवैया और आंत्रप्रेन्योर द्वारा हासिल की गई सफलता • भविष्य की योजनाएँ • क्या साझा नहीं करना चाहिए: • किसी उत्पाद/ सेवा का विवरण या विज्ञापन • धर्म, जाति, लिंग, अध्यात्म और राजनीति पर राय • विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत जानकारी का आदान-प्रदान (फोन नंबर, पता, मेल, सोशल मीडिया हैंडल, आदि)	
भाग 3 (प्रश्न-उत्तर)	**आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन एवं विद्यार्थी**	**30 मिनट**
	• आंत्रप्रेन्योर 10 मिनट के लिए रुके और विद्यार्थियों को अभी-अभी सुनी गई उद्यमशीलता यात्रा के वृत्तांत (journey of growth) के आधार पर प्रश्न पूछने की तैयारी करने दें। • विद्यार्थी 5-6 के समूह में बँट जाते हैं। प्रत्येक समूह आपस में चर्चा करता है और आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन से पूछने के लिए प्रश्नों की एक सूची तैयार करता है। • फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को बताएँ कि एक-दूसरे के प्रश्नों को भी ध्यान से सुनना है। कोई भी समूह दुबारा ऐसा प्रश्न नहीं पूछ सकता, जो पहले ही किसी दूसरे समूह द्वारा पूछा जा चुका हो। • प्रश्न-उत्तर- आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन अगले 20 मिनट के भीतर अधिक से अधिक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करता है।	

	• फ़ैसिलिटेटर यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक समूह को समान संख्या में प्रश्न पूछने का अवसर मिले। • फ़ैसिलिटेटर किसी भी शेष प्रश्न को नोट कर लें और सेशन समाप्त होने के बाद जवाब देने के लिए आंत्रप्रेन्योर के साथ साझा करें। वे आंत्रप्रेन्योर से उत्तर/प्रतिक्रियाएँ ले सकते हैं और उन्हें अगली EMC कक्षा में विद्यार्थियों के साथ साझा कर सकते हैं।	
भाग 4 (निष्कर्ष)	**फ़ैसिलिटेटर और विद्यार्थी**	2 मिनट
	फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों को LEI सेशन में भाग लेने के अपने अनुभव पर विचार करने को कहें। फिर वे निम्नलिखित प्रश्न पूछकर 2-3 विद्यार्थियों को अपने उत्तर सबके साथ साझा करने के लिए आमंत्रित करें। • आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन की यात्रा को सुनते समय विद्यार्थियों को कैसा महसूस हुआ? • उन्होंने आज के सेशन से क्या-क्या सीखा? • ऐसी कौन-सी एक सीख है, जिसे वे अपने जीवन में शामिल करेंगे? (ये प्रश्न सुझावात्मक हैं। फ़ैसिलिटेटर विद्यार्थियों से उनके अनुभव साझा कराने के लिए अन्य प्रश्न भी पूछ सकते हैं।) फ़ैसिलिटेटर और सभी विद्यार्थी बातचीत के लिए आंत्रप्रेन्योर / जॉब-पर्सन को धन्यवाद देंगे।	

'नोट 2' विद्यार्थियों की औसत संख्या को ध्यान में रखते हुए अनुमानित समय दिया गया है। फ़ैसिलिटेटर और आंत्रप्रेन्योर/जॉब-पर्सन विद्यार्थियों की उपस्थिति के आधार पर कम या ज़्यादा समय ले सकते हैं।

C-5 बिज़नेस ब्लास्टर्स

WSM7P6

बिज़नेस ब्लास्टर्स, कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों के लिए आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट करिकुलम का फील्ड प्रोजेक्ट कंपोनेंट है। इसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों को सीड मनी प्रदान की जाती है और इसका उपयोग वे अपनी आंत्रप्रेन्योरशिप माइंडसेट की मदद से खोजे गए एक ऐसे बिज़नेस आइडिया में करते हैं, जिससे कि किसी ज़रूरत या सामाजिक समस्या को हल किया जा सके।

बिज़नेस ब्लास्टर्स के सीखने के उद्देश्य हैं–

- विद्यार्थियों को वास्तविक और प्रासंगिक स्थितियों में सीखने को लागू करने का अवसर प्रदान करना।
- सुनिश्चित करें कि सीखना रटने के तरीकों से आगे बढ़कर वास्तविक जीवन के अनुभव के आधार पर सीखने की ओर बढ़े।

कार्यक्रम कई राउंड में होता है। इन राउंड के लिए कुछ प्रमुख चरण इस प्रकार हैं–

चरण 1

- 1000+ स्कूलों से अधिकतम भागीदारी को प्रोत्साहित करें।
- विद्यार्थी टीमें बनाते हैं और बिज़नेस आइडिया पर विचार–मंथन करते हैं।
- ईएमसी शिक्षकों द्वारा निर्देशित टीमें बाजार के अवसरों या सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विचार विकसित करती हैं। विचारों को विकसित करते समय, विद्यार्थी निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं–
    - विद्यार्थी लक्षित समूह (जिन लोगों को कोई ज़रूरत है, या जो समस्या से प्रभावित हैं या जिन्हें यह विचार आकर्षक लग सकता है) से बात कर सकते हैं, और अपनी समझ बढ़ा सकते हैं।
    - लक्ष्य समूह के साथ चर्चा के आधार पर, विद्यार्थी समस्याओं को सुलझाने के समाधान (बिज़नेस आइडिया) के बारे में सोच सकते हैं।
    - विद्यार्थी लक्ष्य समूह के साथ संभावित समाधानों पर चर्चा कर सकते हैं।
    - फीडबैक के आधार पर, वे एक समाधान चुनते हैं, जिस पर टीम के सभी सदस्य काम करने के लिए सहमत होते हैं। यह समाधान उनका बिज़नेस आइडिया बन जाएगा।
- सीड मनी प्राप्त करने के लिए स्कूलों में व्यक्तिगत टीम प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं।

चरण 2

- कार्यक्रम की चरण-दर-चरण सुविधा के लिए शिक्षकों को दिशानिर्देश और सहायता सामग्री प्रदान की जाती है।
- टीमें अपने विचारों को विकसित करने और कार्यान्वित करने के लिए सीड मनी का उपयोग करती हैं–
    - पहचान करें कि क्या उनका बिज़नेस आइडिया एक उत्पाद या सेवा है (उदाहरण के लिए कम लागत वाला ब्लूटूथ स्पीकर या ऑफिस जाने वाले लोगों के लिए टिफिन सेवा)।
    - वे वास्तव में उत्पाद या सेवा बनाएँ। यह एक साधारण संस्करण(version) भी हो सकता है।
    - उत्पाद/सेवा विकसित करने के लिए एक बजट तैयार करें ताकि सीड मनी का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सके।
    - यह समझ सकें कि उनके ग्राहक कितना भुगतान करने को तैयार होंगे, और तय करें कि उनके उत्पाद या सेवा की कीमत क्या होनी चाहिए।
    - उनके उत्पाद या सेवा के लिए एक नाम लेकर आएँ।
    - ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक मार्केटिंग योजना बनाएँ और ग्राहकों को वास्तव में आकर्षित करने के लिए मार्केटिंग योजना के अनुसार पोस्टर, राइट-अप या वीडियो बनाएँ।
    - वास्तविक ग्राहकों को बिक्री शुरू करें और उनकी प्रतिक्रिया लें।

चरण 3

- स्कूल पैनल सभी टीम प्रोजेक्ट का मूल्यांकन करते हैं, प्रत्येक स्कूल से शीर्ष 3 टीमों को नामांकित करते हैं।
- लगभग 3000 स्कूल नामांकन केंद्रीय रूप से प्राप्त होते हैं।

चरण 4

- क्षेत्रीय स्तर के पैनल रुब्रिक के आधार पर शीर्ष 1000 टीमों का चयन करते हैं।
- चयनित टीमों को बिज़नेस कोच सौंपे दिए जाते हैं।
- सभी टीमें चुनौतियों का समाधान करने और अपने विचारों को अगले स्तर तक ले जाने के लिए अपने कोच के साथ सहयोग करती हैं।

चरण 5

- शीर्ष 100 टीमों के चयन पर ध्यान दिया जाता है।
- पूरी दिल्ली क्षेत्र के पैनल दिए गए रुब्रिक का उपयोग करके शीर्ष 1000 टीमों की प्रस्तुतियों का आकलन करते हैं।
- शीर्ष 100 टीमों को अपने विचार प्रदर्शित करने के लिए एक मंच दिया जाता है।

A-1 शब्दावली

C1E9K1

21वीं सदी के कौशल:	21वीं सदी के कौशल ज्ञान, जीवन, करियर आदि की योग्यताओं और क्षमताओं को दिखाते हैं, जो आज की दुनिया में विद्यार्थियों की सफलता के लिए बहुत ज़रूरी हैं, खासकर जब वे निजी और व्यावसायिक जीवन में आगे बढ़ते हैं।
अनुभव से सीखना:	किसी गतिविधि या कार्य को करके समझना और ज्ञान प्राप्त करना।
अवसर:	हमारे ज्ञान, नजरिए और कौशल को लागू करने की स्थिति।
आंत्रप्रेन्योरशिप:	यह फ्रांसीसी शब्द entreprendre से बना है, जिसका अर्थ है एक ऐसी आर्थिक गतिविधि जो विकास की और ले जाती है।
इनोवेशन:	नए अवसर देखना, रचनात्मकता व्यक्त करना और समस्या-समाधान कौशल विकसित करना।
ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म:	ई-कॉमर्स या इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स का अर्थ है, वस्तुओं और सेवाओं, धन, डेटा के प्रसारण की खरीद-बिक्री के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक इलेक्ट्रॉनिक मंच है, मुख्य रूप से इंटरनेट पर।
कोलैबोरेशन:	एक साथ मिलकर काम करने के कौशल को सहयोग के रूप में जाना जाता है।
गजेल्स:	ऐसे स्टार्टअप जिनके अगले तीन वर्षों में यूनिकॉर्न बनने की सबसे अधिक संभावना है।
चिंतन:	किसी विचार या अनुभव पर स्वयं विश्लेषण करना और समीक्षात्मक ढंग से सोचना।
नॉन-जजमेंटल:	दूसरों के नजरिए को स्वीकार करना और उनके अनुभवों का सम्मान करना।
पहल करना :	किसी समस्या या चुनौती के समाधान के लिए पहली बार किया गया प्रयास।
पूर्वाग्रह:	पूर्वाग्रह का अर्थ है, सभी तथ्यों को जाने बिना किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में एक राय बनाना, जो अक्सर रूढ़िवादिता या पहले की धारणाओं पर आधारित होती है।
पैराफ्रेजिंग:	किसी और के विचारों को अपने शब्दों में कहना, जिसमें अर्थ वही रहता है।
प्रबंधन:	मनचाहा परिणाम या लक्ष्य प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध और संगठित तरीके से कार्य करने का तरीका।
फैसिलिटेटर:	जब विद्यार्थी कक्षा में सीखने और ज्ञान बढ़ाने के लिए व्यक्तिगत रूप से या समूहों में काम कर रहे हैं, तब शिक्षक द्वारा एक मार्गदर्शक के रूप में उनकी सहायता और समर्थन प्रदान करना।

माइक्रोक्रेडिट:	माइक्रोक्रेडिट का अर्थ है, लोगों को कम मात्रा में लोन उपलब्ध कराना है ताकि वे उस पूँजी का उपयोग स्व-रोज़गार करने तथा अपने व्यवसाय को और अधिक मजबूत करने के लिए कर सकें।
माइक्रोफाइनेंस:	माइक्रोक्रेडिट, माइक्रोफाइनेंस का ही हिस्सा है। माइक्रोफाइनेंस का अर्थ है ऐसे व्यक्तियों तक वित्तीय सेवाएँ (धन संबंधी) पहुँचाना, जिनके पास पारंपरिक रूप से वित्त तक पहुँच नहीं है। माइक्रोफाइनेंस गतिविधियाँ आमतौर पर कम आय वाले व्यक्तियों के लिए होती हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद करती हैं।
मानसिकता (माइन्डसेट):	एक व्यक्ति के मूल्य और विश्वास।
दृढ़ता (Perseverance):	चुनौतियों और असफलताओं का सामना करने के बाद भी प्रयास करना नहीं छोड़ना।
यूनिकॉर्न:	यूनिकॉर्न शब्द, निजी तौर पर आयोजित उस स्टार्टअप कंपनी के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसका मूल्य 1 बिलियन डॉलर से अधिक है।
रचनात्मक सोच:	समस्याओं को हल करने के लिए नए और अनोखे विचार।
लचीलापन:	लचीलापन का अर्थ है, कठिनाइयों या चुनौतियों में मजबूती एवं तेज़ी से उबरने की योग्यता।
विश्लेषण:	किसी चीज़ को बेहतर ढंग से समझने के लिए,अलग-अलग नज़रिए से उसका आकलन करना।
वेन्चर:	कोई नया और जोखिम भरा काम (बिज़नेस) करना।
शैक्षणिक गतिविधियाँ:	वो गतिविधियाँ जो विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल या किसी भी चीज़ के लिए नज़रिया बनाने के योग्य बनाती हैं।
संचार:	बातचीत या किसी अन्य माध्यम से किए गए विचारों का आदान-प्रदान।
सत्यनिष्ठा:	मजबूत नैतिक सिद्धांतों पर आधारित ईमानदारी, जो किसी के विचारों और कार्यों के माध्यम से परिलक्षित होती है।
समीक्षात्मक सोच:	एक निष्पक्ष और सही निर्णय पर पहुँचने के लिए तार्किक और तर्कसंगत सोच।
सहकारी समिति:	सहकारी समिति, एक प्रकार का संगठन है जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छा से, समानता के आधार पर अपने आर्थिक लाभ के लिए मिलकर कार्य करते हैं।
सामाजिक प्रभाव:	ऐसे सकारात्मक परिवर्तन, जो सामाजिक मुद्दों को संबोधित या हल करते हैं।

A-2 सन्दर्भ

I3D2L1

UNIT 1: मैं कर सकता/सकती हूँ

- Gazal Alagh | LinkedIn

  https://www.linkedin.com/in/ghazal-alagh-9755a0128/?originalSubdomain=in
- Gazal Alagh | Yourstory

  https://yourstory.com/herstory/2022/02/shark-tank-india-ghazal-alagh-mamaearth
- HighFivers | The Newsmen

  https://thenewsmen.co.in/high-flyers/ghazal-alagh-know-the-woman-entrepreneur-who-made-toxinfree-skincare-brand-mamaearth-a-big-success-story/63936
- Shreekant Bola | Wikipedia

  https://en.wikipedia.org/wiki/Srikanth_Bolla

UNIT 2: प्रभावी संचार

- Education Success Story | Jagran News | Gauri Sawant

  https://www.jagran.com/news/education-success-story-transgender-gauri-sawant-left-home-when-her-father-did-not-accept-her-know-her-story-23510996.html
- Talli - Know the Real Story | GQIndia

  https://www.gqindia.com/content/taali-know-the-real-story-behind-shreegauri-sawant-the-trans-activist-played-by-sushmita-sen-in-her-new-series
- Gauri Sawant | Gauri Sawant

  https://yourstory.com/2017/04/gauri-sawant
- Trending Achievers | Femina

  https://www.femina.in/trending/achievers/transgender-activist-gauri-sawant-tells-her-story-208684.html
- Sandeep Maheshwari

  https://www.sandeepmaheshwari.com/thePerson.aspx

UNIT 3: समीक्षात्मक सोच

- A Rags to Pads Story for rural women | DNAIndia

  https://www.dnaindia.com/mumbai/report-a-rags-to-pads-story-for-rural-women-18617
- Kiran Mazumdar Shaw | Wikipedia

  https://en.wikipedia.org/wiki/Kiran_Mazumdar-Shaw

UNIT 4: सहयोग

- Revolution through Collaboration | Wikipedia

  https://en.wikipedia.org/wiki/Verghese_Kurien#
- Amul Dairy | Business Standard

  https://www.business-standard.com/companies/news/amul-india-aims-to-achieve-a-turnover-of-rs-80-000-crore-in-fy23-24-13_1.html
- Mission Mangal Yaan | Aaj Tak News

  https://www.aajtak.in/science/story/end-of-mangalyaan-mission-isro-tstr-15-10-02
- Mars Orbiter Mission | Wikipedia

  https://en.wikipedia.org/wiki/Mars_Orbiter_Mission

UNIT 5: अवसर पहचानकर आगे बढ़ना

- Shiv- The Computer Man | Forbes

  https://www.forbes.com/profile/shiv-nadar/?sh=54d3694a5383
- Lakshmi Menon

  https://www.onmanorama.com/lifestyle/women/2021/12/31/social-entrepreneur-lakshmi-n-menon-business-ideas.html

  https://www.wef.org.in/lakshmi-n-menon/

UNIT 6: योजना बनाकर काम करना

- Mumbai Dabbawalas | The Hindu Business Line

  https://mumbaidabbawala.in/

  https://www.thehindubusinessline.com/economy/taking-the-story-of-mumbais-dabbawalas-to-iim-calcutta/article64192951.ece

https://worksthatwork.com/1/dabbawallas

- Aditi Gupta | MetaStory

  https://menstrupedia.com/aditi

  https://metastory.in/menstrupedia-founder-aditi-gupta/

UNIT 7: विश्लेषण करके सीखना

- The Story of Sairee Chahal

  https://www.saireechahal.com/story-of-sairee-chahal-founder-ceo-of-sheroes/20options.
- Dosa Plaza | Zee News India

  https://zeenews.india.com/companies/a-south-indian-who-worked-as-a-utensils-cleaner-left-home-with-only-rs-200-in-hand-is-now-the-owner-of-a-million-dollar-firm-earning-in-crores-2647629.html

UNIT 8: गिरकर संभालना

- Nykaa Founder Success Story | CheggIndia

  https://www.cheggindia.com/earn-online/nykaa-founder-success-story/
- Quick Heal's Brave Story | YourStory

  https://yourstory.com/2017/10/techie-tuesdays-sanjay-katkar-quick-heal

Notes

Notes

Notes

Notes